हिन्दी (आधार) (कोड सं. ३०२)

Hindi (Core) (Code No. 302)

कक्षा/Class: XII

2024-25

विद्यार्थी अध्ययन सामग्री

Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वोच्च वरीयता है। हमारे विद्यार्थी, शिक्षक एवं शैक्षिक नेतृत्वकर्ता निरंतर उन्नति हेतु प्रयासरत रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में योग्यता आधारित अधिगम एवं मूल्यांकन संबन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करना तथा सीबीएसई के दिशा निर्देशों का पालन, वर्तमान में इस प्रयास को और भी चुनौतीपूर्ण बनाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान** द्वारा संकलित यह 'विद्यार्थी सहायक सामाग्री' इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है । केन्द्रीय विद्यालय संगठन की 'विद्यार्थी सहायक सामग्री' अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामाग्री-संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और अन्य शिक्षण संस्थान भी इसका उपयोग परीक्षा संबंधी पठन सामग्री की तरह करते रहे हैं । शुभ-आशा एवं विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर सतत मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुंचाएगी ।

शुभाकांक्षा सहित ।

निधि पांडे

आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रभारी एवं संयोजक: **श्रीमती विनीता परशीरा, प्राचार्या, के.वि. एन.एच.पी सैंज, कुल्लू (गुरुग्राम संभाग)**

पुनरीक्षण: **के.वि.सं. शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान चंडीगढ़**

श्रीमती. पूनम सिंह, पीजीटी हिंदी, के.वि. सेक्टर-47 चंडीगढ़ (चंडीगढ़ संभाग)

विषय सूची / INDEX

क्र.सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
1.	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	5
2.	अपठित बोध (गद्य तथा पद्य)	15
3.	आत्मपरिचय, एक गीत	27
4.	पतंग	34
5.	कविता के बहाने	40
6.	बात सीधी थी पर	44
7.	कैमरे में बंद अपाहिज	48
8.	उषा	54
9.	बादल राग	58
10.	कवितावली (उत्तरकाण्ड से), लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप	63
11.	रुबाइयाँ	70
12.	छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख	74
13.	भक्तिन	82
14.	बाजार दर्शन	91
15.	काले मेघा पानी दे	98
16.	पहलवान की ढोलक	106
17.	शिरीष के फूल	112
18.	श्रम विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज	119
19.	सिल्वर वैडिंग	128
20.	जूझ	133
21.	अतीत में दबे पाँव	136
22.	अभिव्यक्ति और माध्यम	140
23.	पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया	146
24.	विशेष लेखन: स्वरुप और प्रकार	149
25.	कैसे करें कहानी का नाट्य रुपनान्तरण	153
26.	कैसे बनता है रेडियो नाटक	161
27.	नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन	168
28.	प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र	176
29.	प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र की उत्तरमाला	182

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा - 12वीं (2024-25)

- **प्रश्न-पत्र तीन खण्डों- खंड क, ख, और ग में होगा।**
- **खंड - 'क ' में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**
- **खंड - ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे । प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगें।**
- **खंड - ग में आरोह भाग 2 तथा वितान भाग 2 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के आंतरिक विकल्प दिए जाएँगें।**

भारांक 100 **निर्धारित समय- 3 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खण्ड-क (अपठित बोध)	**18 अंक**
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) परआधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे (बहुविकल्पीय प्रश्न 01अंकx03 प्रश्न=03अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 03 प्रश्न = 06 अंक)	10 अंक
2	01अपठित काव्यांश (लगभग 100 शब्दोंका) परआधारितबोध, सराहना, सौंदर्य चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछेजाएँगे। (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर) **पाठसंख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय परआधारित लगभग120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	पाठ संख्या 3, 4, 5, 11 तथा 13 परआधारित (02 अंक x 04 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 40 शब्दोंमें), (04 अंक x 02 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 80 शब्दों में) (विकल्प सहित)	16 अंक
	खंड- ग	**40 अंक**

	(आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	
5	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
6	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
7	काव्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
8	पठित गद्यांश परआधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01अंक x05 प्रश्न)	05 अंक
9	गद्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
10	गद्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
11	वितान के पाठों परआधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग100 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
12	(अ) श्रवण तथा वाचन (ब) परियोजना कार्य	10+10= 20 अंक
कुल अंक		**100 अंक**

सत्र 2024-25 हेतु निम्न अध्याय हटा दिए गए हैं

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	हटाए गए अध्याय	पृष्ठ संख्या	हटाए गए विषय/ अध्याय
1	आरोह भाग-2 काव्य खण्ड	सहर्ष स्वीकारा है	27-33	संपूर्ण अध्याय
		गज़ल	59-61	हटाए गए पाठ का अंश और उससे संबंधित अभ्यास प्रश्न
2	आरोह भाग-2 काव्य खण्ड	चार्ली चैपलिन यानी हम सब	118-127	संपूर्ण अध्याय
		नमक		संपूर्ण अध्याय
3	वितान भाग-2	डायरी के पन्ने	53-78	संपूर्ण अध्याय
4	अभिव्यक्ति और माध्यम	कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।		

आन्तरिक-मूल्यांकन

श्रवण और वाचन कौशल हेतु दिशा निर्देश:-

श्रवण (सुनना): 05 अंक

- वर्णित अपठित सामग्री को सुनकर अर्थ ग्रहण करना
- वार्तालाप को सुनकर महत्त्वपूर्ण तथ्यों आदि को समझना
- कविता पाठ को सुनकर, समझने की योग्यता का विकास
- आलोचनात्मक चिंतन, सौंदर्यपरक अनुभूतियों का विकास

श्रवण(सुनना) कौशल का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा । अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग **250** शब्दों का होना चाहिए

अथवा

परीक्षक दो–तीन मिनट का श्रव्य अंश (ऑडियो क्लिप) सुनाएगा । अंश रोचक होना चाहिए कथित घटना पूर्णत स्पष्ट होनी चाहिए।वाचक का उच्चारण शुद्ध,स्पष्टऔर विरामचिह्न के उचित प्रयोग सहित होना चाहिए। परीक्षार्थी ध्यानपूर्वक परीक्षक ऑडियोक्लिप को सुनने के पश्चात परीक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी समझ से मौलिक उत्तर देंगे

उदाहरण

परीक्षक निम्नलिखित अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करे-

हमारी हिंदी सजीव भाषा है।इसी कारण इसमें अरबी, फारसी और अंग्रेजी के संपर्क में आकर इनके शब्द संग्रह किए हैं। इसे हिन्दी भाषा का दोष नहीं गुण ही समझना चाहिए क्योंकि अपनी इस ग्रहण शक्ति से हिंदी अपनी शब्दसंपदा में वृद्धि कर रही है, नुकसान नहीं। ज्यों ज्यों–इसका प्रचार बढ़ेगा त्यो त्यों-इसमें नए शब्दों का आगमन होता जाएगा।भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है।हिन्दी को भारत की राजभाषा होने का यह गौरव 14 सितंबर,1949 को प्राप्त हुआ था।

अन्य भाषाओ के शब्दों को हिन्दी में सम्मिलित करते समय हमें केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस सम्मिश्रण के कारण हमारी भाषा अपने स्वरूप को तो नष्ट नहीं कर रही, कहीं अन्य भाषाओं के बेमेल शब्दों के मिश्रण से अपना रूप तो विकृत नहीं कर रही।अभिप्राय यह है कि दूसरी भाषाओं के शब्द मुहावरे अधिग्रहण करने पर भी हिंदी, हिंदी ही बनी रही है या नहीं। बिगड़कर कहीं वह कुछ और तो नहीं होती जा रही।

प्रश्न-1 हिंदी कैसी भाषा है ?

प्रश्न-2 हिंदी कौन-कौन सी भाषाओं से शब्द ग्रहण कर रही है?

प्रश्न-3 भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है ?

प्रश्न-4 हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है ?

प्रश्न-5 हिन्दी भाषा की किस विशेषता को दोष नहीं गुण माना जाता है ?

वाचन कौशल

आवश्यक निर्देश

वाचन (बोलना) 5 अंक

वाचन कौशल के अंतर्गत बच्चोंकी अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु निम्नप्रकार की गतिविधियां आयोजित की जा सकती हैं-

- भाषण
- सस्वर कविता पाठ
- वार्तालाप और उसकी औपचारिकता
- कार्यक्रम प्रस्तुति
- कथ्य कहानी अथवा घटना सुनाना
- परिचय देना
- वाद-विवाद

परीक्षकों के लिए अनुदेश

1. परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
2. विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
3. निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव जगत के हों।
4. जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ करें तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

वाचन कौशल के उदाहरण

कविता सुनाना

कविता सुनाना भी अपनेआप में कला है यह कला कुछ लोगों में जन्म से पाई जाती है तो कुछ इसे अभ्यास द्वारा सीख सकते हैं

कविता पाठ में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

1. सर्वप्रथम ऐसी कविता का चयन करें, जो आपकी रूचि के अनुसार हो जिसे आप अपने हृदय से पसंद करते हैं क्योंकि ऐसी कविता में ही आप उन भावों को भर सकते हैं जो आपके दिल से निकलते हैं।
2. कविता को कंठस्थ कर लें। कंठस्थ कविता से ही लय बनतीहै।
3. उस कविता का बार-बार अभ्यास करें।
4. उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित कविता का कक्षा में प्रभावशाली ढंग से वाचन कीजिए-

इस समाधि में छिपी हुई है, एक रात की बेरी
जलकर जिसने स्वतंत्रता की दिव्य आरती फेरी

यह समाधि ,यह लघुसमाधि है, झांसी की रानी की
अंतिम लीला स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की

यहीं कहीं पर बिखर गई वह भग्नविजय- माला सी
उसके फूल यहां संचित हैं ,है यह स्मृतिशाला-सी

वार पर वारअंत तक, लड़ी वीरबाला -सी
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी

बढ़ जाता है मानवीर का रण में बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की भस्म यथा सोने से

रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी
यहां निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिंगारी

इससे भी सुंदर समाधियां, हम जग में हैं पाते
उनकी गाथा पर निशीथ में, शूद्र जंतु ही गाते

पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमित कहानी
स्नेह और श्रद्धा से गाती, है वीरों की बानी

बुंदेले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी
खूब लड़ी मर्दानी वह थी, झांसीवाली रानी

यह समाधि यह चिरसमाधि, झांसी की रानी की
अंतिम लीलास्थली यही है लक्ष्मी मरदानी की

कहानी वाचन

कहानी कहना या सुनना भी एक कला है। विद्यार्थियों को यदि इस कला से अवगत कराया जाए तो उनमें इस गुण का विकास किया जा सकता है। एक अच्छे कहानीकार में निम्नलिखित गुणों का होना अत्यंतआवश्यक होता है।

1. जिस कहानी को सुनाना हो,उस का सार कहानी सुनाने वाले के दिमाग में बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए।
2. उसे सारी घटनाएं याद होनी चाहिए, जिससे वह कहानी को उलट-पुलट ना कर सुना दे क्योंकि ऐसा होने पर कहानी का रस ही समाप्त हो जाता है।
3. कहानी सुनाते समय कहानी के पात्रों ,तिथियों ,स्थानों का नाम पूर्ण रूप से याद होना चाहिए केवल अनुमान लगाकर सुनाई गई कहानी अपनी वास्तविकता खो देती है।
4. भाषा और संवाद भी कहानी की जान होते हैं।भाषा का स्तर उच्च बौद्धिक स्तर के अनुकूल होने पर ही कहानी प्रभावशाली बन पाती है। संवादों में बचपना या परिपक्वता सामने बैठे श्रोतागण के अनुसार होने पर ही कहानी में रुचि जागृत हो सकती है।
5. कहानी बहुतअधिक लंबी नहीं होनी चाहिए अन्यथा श्रोता बोरियत काअनुभव करने लगतेहैं।
6. कहानी में हास्य-व्यंग्य का पुट होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर हार की जीत, अकबरी लोटा, कामचोर आदि कहानियों का कक्षा में वाचन किया जा सकता है।

भाषण कला

भाषण भाषा के विभिन्न कौशलों की एक मिश्रित अभिव्यक्ति है।भाषणकौशल को दो भागों में विभक्त किया जा सकताहै- एक उच्चारण और दूसरा अभिव्यक्ति उच्चारण के अंतर्गत समस्त ध्वनि व्यवस्था के प्रायोगिक रूप का समावेश रहता है विद्यार्थियों को चाहिए कि अपने भाषण को तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें --

1. भाषण ऐसा हो कि श्रोता उसमें रुचि ले सकें।
2. भाषण देते समय आरोह-अवरोह का ध्यान रखा जाना चाहिए।
3. भाषण विषयानुकूल तथा भावअनुकूल होना चाहिए।
4. भाषण देते समय क्रियात्मक अभिनय का समावेश होना चाहिए।
5. विषय का प्रस्तुतीकरण रोचक व नवीन ढंग से होना चाहिए।
6. भाषण जोश और उत्साह से भरा होना चाहिए।

उदाहरण

1. नारी सशक्तिकरण
2. भारतीय लोकतंत्र की दशा और दिशा 3.पर्यावरण प्रदूषण **4.**गिरते नैतिक मूल्य

वाद-विवाद

वाद- विवाद किसी विषय के पक्ष विपक्ष में विचार करने का साधन है। इसका उद्देश्य किसी विवादास्पद मसले पर जनता का ध्यान आकर्षित करना होता है।इसमें भाग लेने वाले कम से कम 2 छात्र होते हैं।एक पक्ष में बोलता है तथा दूसरा विपक्ष में। यह वक्ता भरी सभा में बोलते हैं तथा पूरे सदन को संबोधित करते हैं।
वाद-विवाद में एक सभापति और निर्णायक मंडल होता है। दोनों वक्ताओं का उद्देश्य पूरे सदन को अपने विचारों से सहमत कराना होता है। इसमें एक दूसरे की बात काटना, व अपनी बात रखना होता है।

वाद-विवाद में ध्यान रखने योग्य बातें --

1. हर प्रतियोगी को अपने पक्ष को तर्क व मजबूती के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।
2. पक्ष में बोलने वाला वक्ता शांत स्वर में अपने विषय को तर्क,उदाहरणों से पुष्ट करता है।
3. विपक्ष में बोलने वाला वक्ता आक्रामक होता है उसके स्वर में धाराप्रवाह बोलने की क्षमता होती है।
4. पक्ष या विपक्ष दोनों वक्ताओं को व्यक्तिगत टिप्पणी,कटाक्ष और अभद्र बातों से बचना चाहिए।
5. दोनों वक्ताओं को सबसे पहले सदन को संबोधित करके विषय बताना होता है।
6. वाद-विवाद का आरंभ इस प्रकार होता है

आदरणीय अध्यक्ष महोदय निर्णायक मंडल,वन्दनीय गुरुजन और उपस्थित श्रोताओं

आज की वादविवाद-प्रतियोगिता का विषय है

अभ्यास प्रश्न

1. क्या चांद पर अंतरिक्षयान भेजना भारत के लिए उचित है।
2. सोशल मीडिया वरदान है या अभिशाप।

कार्यक्रम प्रस्तुति

उद्घोषणा करना भी एक विशिष्ट कला है।एक कुशल मंच संचालक सभी कार्यक्रमों में जान फूंक सकता है। उद्घोषणा वह कला है जिसके आधार पर दर्शकों श्रोताओं की रूचि व जिज्ञासा को बनाए रखा जा सकता है।उद्घोषक के पास हाजिर जवाबी, प्रेरक प्रसंगों का भंडार तथा हास्य प्रसंगों का भंडार होनाचाहिए।
उद्घोषणा करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. उद्घोषक को शालीन वेशभूषा में मंच परआना चाहिए।
2. उसके पास प्रस्तुत होने वाले सभी कार्यक्रमों की पूरी जानकारी होना चाहिए।
3. कार्यक्रम की सफलता स्तुति के बाद मंच से उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए वह प्रशंसा ऐसी होगी कि श्रोताओं की मन में भी जो भाव चल रहे हो लगभग उसी को कहना चाहिए।
4. मंच संचालक को कम से कम बोलना चाहिए दो कार्यक्रमों के बीच में आधे मिनट से 2 मिनट का जो खाली समय होता है उसे बस उसी का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. विद्यालय के वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम संचालन
2. हिंदी पखवाड़ा का कार्यक्रम संचालन

वाचन और श्रवण कौशल के मूल्यांकन हेतु निम्न रुब्रिक्स के आधार पर बच्चों को अंक प्रदान किए जाते हैं।

श्रवण (सुनना)

1. परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है।
2. छोटे सुसबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट रूप से समझने की योग्यता है।
4. दीर्घकथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने के ढंगऔर निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।
5. जटिल कथनों के विचार बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है।

वाचन (बोलना)

1. केवल अलग-अलग शब्द और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
2. परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है।

परियोजना-कार्य से सम्बन्धित प्रकिया निर्देश एवं उदाहरण

'परियोजना' शब्द योजना में 'परि' उपसर्ग लगने से बना है। किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो योजना बनाई और कार्यान्वित की जाती है, उसे परियोजना कहते हैं। यह किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती है।

परियोजना कार्य निर्धारित करते समय ध्यान देने योग्य बातें :-

- ✓ परियोजना कार्य शिक्षार्थियों में योग्यता आधारित क्षमता को ध्यान में रखकर दिए जाएं जिससे वे विषय के साथ जुड़ते हुए उसके व्यवहारिक पक्ष को समझ सकें। वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर भी ध्यान दिया जाए ।
- ✓ सत्र के प्रारंभ में ही शिक्षार्थियों को विषय चुनने का अवसर मिले ताकि उसे शोध तैयारी और लेखन के लिए पर्याप्त समय मिल सके।
- ✓ अध्यापिका/अध्यापक द्वारा कक्षा में परियोजना कार्य को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाए जिससे शिक्षार्थी उसके अर्थ, महत्व व प्रक्रिया को भली भांति समझने में सक्षम हो सकें।
- ✓ हिंदी भाषा और साहित्य से जुड़े विविध विषयों/ विधाओं/ साहित्यकारों/ समकालीन लेखक / भाषा के तकनीकी पक्ष / प्रभाव / अनुप्रयोग/ साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन मूल्य सम्बन्धी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।
- ✓ शिक्षार्थी को उसकी रूचि के अनुसार विषय का चयन करने की छूट दी जानी चाहिए तथा अध्यापक/ अध्यापिका को मार्गदर्शक के रूप में उसकी सहायता करनी चाहिए।

परियोजना- कार्य करते समय निम्नलिखित आधार को अपनाया जा सकता है -

1. प्रमाण-पत्र
2. आभार ज्ञापन
3. विषय सूची
4. उद्देश्य
5. समस्या का बयान
6. परिकल्पना
7. प्रक्रिया(साक्ष्य संग्रह,साक्ष्य का विश्लेषण)
8. प्रस्तुतीकरण (विषय का विस्तार)
9. अध्ययन का परिणाम
10. अध्ययन की सीमाएं
11. स्रोत
12. अध्यापक टिप्पणी

- परियोजना-कार्य में शोध के दौरान सम्मिलित किए गए चित्रों और संदर्भों के विषय में उचित जानकारी दी जानी चाहिए।
- चित्र, रेखाचित्र, विज्ञापन, ग्राफ, विषय से संबंधित आंकड़े, विषय से संबंधित समाचार की कतरनें एकत्रित की जानी चाहिए।
- प्रमाणस्वरूप सम्मिलित किए गए आंकड़े, चित्र, विज्ञापन आदि के स्रोत अंकित करने के साथ-साथ समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के नाम एवं दिनाँक भी लिखना चाहिए।
- साहित्यकोश, संदर्भ-ग्रंथ, शब्दकोश की सहायता लेनी चाहिए।
- परियोजना-कार्य में शिक्षार्थियों के लिए अनेक संभावनाएँ हैं। उनके व्यक्तिगत विचार तथा उनकी कल्पना के विस्तृत संसार को अवश्य सम्मिलित किया जाए।

परियोजना कार्य का उदाहरण -

वर्तमान समाज की नारी व भक्तिन

1. **प्रमाणपत्र-** इसमें विद्यार्थी यह प्रमाणित करता है कि उक्त विषय पर उसका कार्य मौलिक है। प्रमाण पत्र के अंत में विद्यार्थी अपने हस्ताक्षर करता है।
2. **आभार ज्ञापन-** इसके अंतर्गत विद्यार्थी परियोजना कार्य में सहयोग देने वाले शिक्षक, प्राचार्य व मित्रों का आभार ज्ञापित करता है।
3. विषय सूची- विषय से संबंधित सामग्री को उपविषयों में बांटा जाता है जैसे -
   विषय का परिचय देते हुए वर्तमान नारी व भक्तिन के चरित्र को बताया जाएगा।
   लेखिका परिचय - महादेवी वर्मा का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा।
   पाठ का सारांश- भक्तिन के चरित्र को समझने के लिए पाठ का सारांश लिखा जाएगा।

समाज में नारी की भूमिका को दर्शाते हुए नारे या काव्य पंक्तियां लिखी जा सकती हैं।
वर्तमान में चार प्रसिद्ध महिलाओं की जानकारी सचित्र दी जा सकती है।
भक्तिन और वर्तमान नारी की तुलना करते हुए वर्णन किया जाएगा।

विषय का चुनाव- इस विषय का चुनाव नारी की बदलती भूमिका को दर्शाने के लिए किया गया ।

4. **उद्देश्य -** नारी की समाज में बदलती भूमिका व अधिकारों के लिए जागरूक करना ही इस परियोजना कार्य का उद्देश्य है।
5. **समस्या का बयान** - वर्तमान समाज की नारी व भक्तिन।
6. **परिकल्पना**- वर्तमान में नारी की भूमिका बदल रही है और वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है।
7. **प्रक्रिया-** सर्वप्रथम विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित साक्ष्य या सामग्री को एकत्रित करेगा जिसमें भक्तिन पाठ को समझा जाएगा तथा नारी की वर्तमान समाज में भूमिका को समझने के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, इंटरनेट की सहायता ली जाएगी।
8. **प्रस्तुतीकरण-** इसके अंतर्गत भक्तिन के चरित्र की विशेषताएं बताते हुए तत्कालीन समाज की नारी व वर्तमान नारी के चरित्र को दिखाया जायेगा। प्रसिद्ध नारियों के चित्र प्रदर्शित करते हुए उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया जाएगा।
9. **अध्ययन का परिणाम -** इस विषय से संबंधित सामग्री का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वर्तमान नारी भक्तिन की अपेक्षा अधिक जागरूक व अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह अन्याय करने वाले पुरुष का डटकर सामना करने में सक्षम है।
10. **अध्ययन की सीमाएं**- परियोजना कार्य के लिए शब्द सीमा निर्धारित होने के कारण कुछ ही प्रसिद्ध नारियों का वर्णन किया जा सका अन्यथा इस विषय के अन्य पहलुओं पर भी विस्तार से वर्णन किया जा सकता है।
11. **स्रोत-** इस विषय से संबंधित सामग्री एकत्रित करने के लिए विभिन्न स्रोतों की सहायता ली गई
    विकिपीडिया
    भारत की प्रसिद्ध महिलाएं
    समाचार पत्र (दैनिक जागरण, मार्च 2023)
12. **अध्यापक टिप्पणी-** शिक्षक परियोजना कार्य को देखकर विवेकानुसार अपनी टिप्पणी देगा ।

उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी परियोजना कार्य तैयार कर सकते हैं।

अपठित बोध
(गद्यांश)

उद्देश्य-

- गद्यांश को एकाग्रता से पढ़ने के पश्चात् उसके मूल-भाव और अर्थ को समझना ।
- गद्यांश को पढने के बाद संभावित उत्तरों को कंठस्थ करना ।
- अपठित गद्यांश की ज्ञानवर्धक भाषा-शैली से अवगत होना ।
- गद्यांश को पढ़ने के पश्चात् सोचने-समझने और तर्क करने की शक्ति विकसित होना।
- अपठित गद्यांश में निहित सन्देश को पढ़ने के पश्चात् अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होना।

<u>अपठित गद्यांश का अर्थ-</u>

गद्य का ऐसा अंश जिसका पहले अध्ययन न किया गया हो, यह अपठित गद्यांश कहलाता है। प्रायः अपठित गद्यांश के अंतर्गत किसी विषय के बीच के संबंधों को खोजने तथा विद्यार्थियों की अवबोध क्षमता को परखना होता है। अपठित गद्यांश के अंतर्गत (मूल भाव व केंद्रीय भाव को समझकर उसका सावधानीपूर्वक, गंभीरता व गहनता से अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है|

अपठित गद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके-

- दिए गए गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूलभाव को भली-भाँति समझना चाहिए।
- गद्यांश में दी गई महत्वपूर्ण सूचनाओं को रेखांकित करते रहना चाहिए। इससे प्रश्नों को हल करने में आसानी होती है।
- भाषिक संरचना एवं व्याकरण संबंधी प्रश्नों के लिए गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों, मुहावरों आदि को रेखांकित करना चाहिए।
- प्रश्न पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा पूरे गद्यांश को पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उसका उत्तर तर्क सहित लिखना चाहिए |
- अन्य प्रश्नों को भी ध्यानपूर्वक पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उसका उत्तर लिखना प्रारंभ करना चाहिए।

अपठित गद्यांश के प्रश्नों को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

- गद्यांश के भावार्थ (मूल भाव) को उचित प्रकार समझना चाहिए तथा प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से होने चाहिए।
- गद्यांश में सूचनाओं के माध्यम से किस बात का वर्णन किया जाता है| उन सूचनाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- शीर्षक के चयन के दौरान इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह गद्यांश के मूल भाव को प्रकट करता हो। शीर्षक का चयन करते समय प्रथम या अंतिम पंक्ति पर विशेष ध्यान देना चाहिए, लेकिन उसी के आधार पर अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए।
- लेखक के विचार को ध्यान में रखकर ही अपने उत्तरों का चयन करना चाहिए।

- प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश के अनुरूप ही होना चाहिए। गद्यांश के बाहर के मिलते-जुलते भावों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर देते समय मूल प्रश्न ध्यान में रखना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर लिखते समय सरल एवं मौलिक भाषा का ही प्रयोग करें, न कि गद्यांश को उतारें।
- गद्यांश का शीर्षक अत्यन्त सार्थक एवं मूल भाव पर केन्द्रित होना चाहिए।
- यदि गद्यांश में दिए गए शब्दों के अर्थ अथवा उनकी व्याख्या पूछी जाए तो प्रसंग के अनुसार ही उसका अर्थ एवं व्याख्या करनी चाहिए।
- जिन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाए हों, उन पर ध्यान केन्द्रित कर अवतरण को फिर से पूर्ण एकाग्रचित होकर पढ़ें, उत्तर अवश्य मिल जाएँगे क्योंकि सभी प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के अन्तर्गत ही होते हैं।

अपठित गद्यांश 1

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए :-

संस्कृति ऐसी चीज नहीं, जिसकी रचना दस-बीस या सौ–पचास वर्षों में की जा सकती हो। हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है; यहाँ तक कि हमारे उठने- बैठने, घूमने-फिरने और रोने-हँसने से भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है, यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता।असल में, संस्कृति जीने का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए, जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है; यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा कर रहे हैं, वे भी हमारी संस्कृति के अंग बन जाते हैं और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं।इसलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती है, जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है। यही नहीं, बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म-जन्मातर तक करती है। अपने यहाँ एक साधारण कहावत है कि जिसका जैसा संस्कार है, उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। जब हम किसी बालक या बालिका को बहुत तेज पाते हैं, तब अचानक कह देते हैं कि वह पूर्वजन्म का संस्कार है। संस्कार या संस्कृति, असल में, शरीर का नहीं, आत्मा का गुण है; और जबकि सभ्यता की सामग्रियों से हमारा संबंध शरीर के साथ ही छूट जाता है, तब भी हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी आत्मा के साथ जन्म-जन्मांतर तक चलता रहता है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ? **1**

(क) जीवन और मृत्यु (ख) सभ्यता और संस्कृति
(ग)शरीर और आत्मा (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2.संस्कृति के बारे में लेखक क्या नहीं बताते हैं ? **1**

(क) हमारे उठने- बैठने, घूमने-फिरने और रोने-हँसने से भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है |
(ख) संस्कृति ऐसी चीज है जिसकी रचना दस-बीस या सौ–पचास वर्षों में की जा सकती हो |
(ग) हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है |
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं |

3. संस्कार या संस्कृति किसका गुण है ? **1**

(क)शरीर का गुण है (ख) आत्मा का गुण है
(ग) शरीर और आत्मा दोनों का गुण है (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. संस्कृति जीने का तरीका क्यों है? 1

5. संस्कृति पूर्वजन्म का संस्कार है। इसे बताने के लिए लेखक ने क्या उदाहरण दिया है? 2

6. संस्कृति की रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है-स्पष्ट कीजिए। 2

7. संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर स्पष्ट कीजिए। **2**

उत्तर –

(1) ख. सभ्यता और संस्कृति
(2) ख. संस्कृति ऐसी चीज है जिसकी रचना दस-बीस या सौ–पचास वर्षों में की जा सकती हो |
(3) ख. आत्मा का गुण है |
(4) व्यक्ति के उठने-बैठने, जीने के ढंग उस समाज में छाए रहते हैं, जिसमें वह जन्म लेता है। व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति को अपनाकर जीता है, इसलिए संस्कृति जीने का तरीका है।
(5) संस्कृति पूर्वजन्म का संस्कार है, इसे बताने के लिए लेखक ने यह उदाहरण दिया है कि व्यक्ति का पुनर्जन्म भी उसके संस्कारों के अनुरूप ही होता है। जब हम किसी बालक-बालिका को बहुत तेज पाते हैं, तो कह बैठते हैं कि ये तो इसके पूर्वजन्म के संस्कार हैं।
(6) व्यक्ति अपने जीवन में जो संस्कार जमा करता है, वे संस्कृति के अंग बन जाते हैं। मरणोपरांत व्यक्ति अन्य वस्तुओं के अलावा इस संस्कृति को भी छोड़ जाता है, जो आगामी पीढ़ी के सारे जीवन में व्याप्त रहती है। इस तरह उसकी रचना और विकास में सदियों के अनुभवों का हाथ होता है।
(7) संस्कृति और सभ्यता का मूल अंतर यह होता है कि संस्कृति हमारे सारे जीवन में समाई हुई है। इसका प्रभाव जन्म-जन्मांतर तक देखा जा सकता है। इसका संबंध परलोक से है, जबकि सभ्यता का संबंध इसी लोक से है। इसका अनुमान व्यक्ति के जीवन-स्तर को देखकर लगाया जाता है।

अपठित गद्यांश -2

विज्ञापन कला जिस तेजी से उन्नति कर रही है, उससे मुझे भविष्य के लिए और भी अंदेशा है। लगता है ऐसा युग आने वाला है, जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य आदि का केवल विज्ञापन कला के लिए ही उपयोग रह जाएगा। वैसे तो आज भी इस कला के लिए इनका खासा उपयोग होता है। बहुत-सी शिक्षण संस्थाएँ हैं, जो सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन हैं।

अपनी पीढ़ी के कई लेखकों की कृतियाँ लाला छगनलाल, मगनलाल या इस तरह के नाम के किसी और लाल की स्मारक निधि से प्रकाशित होकर लाला जी की दिवंगत आत्मा के प्रति स्मारक होने का फ़र्ज अदा कर रही हैं, मगर आने वाले युग में यह कला दो कदम आगे बढ़ जाएगी। विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के दीक्षांत महोत्सव पर जो डिग्रियाँ दी जाएँगी, उनके निचले कोने में छपा रहेगा-"आपकी शिक्षा के उपयोग का एक ही मार्ग है, आज ही आयात-निर्यात का धंधा प्रारंभ कीजिए। मुफ्त सूचीपत्र के लिए लिखिए।"

हर नए आविष्कारक का चेहरा मुस्कराता हुआ टेलीविजन पर जाकर कुछ इस तरह निवेदन करेगा-"मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे प्रयत्न की सफलता का सारा श्रेय रबड़ के टायर बनाने वाली कंपनी को है,

क्योंकि उन्हीं के प्रोत्साहन और प्रेरणा से मैंने इस दिशा में कदम बढ़ाया था '" विष्णु के मंदिर खड़े होंगे, जिनमें संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के नीचे पट्टी लगी होगी-"याद रखिए, इस मूर्ति और इस भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशान वाले निर्माताओं को है।

वास्तुकला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए।" और ऐसे-ऐसे उपन्यास हाथ में आया करेंगे, जिनकी सुंदर चमड़े की जिल्द पर एक ओर बारीक अक्षरों में लिखा होगा- 'साहित्य में अभिरुचि रखने वालों को इक्का मार्क साबुन वालों की एक और तुच्छ भेंट।" और बात बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँच जाएगी कि जब एक दूल्हा बड़े अरमान से दुल्हन ब्याहकर घर आएगा और घूंघट हटाकर उसके रूप की प्रसन्नता में पहला वाक्य कहेगा तो दुल्हन मधुर भाव से आँख उठाकर हृदय का सारा दुलार शब्दों में उड़ेलती हुई कहेगी-"रोज सुबह उठकर नौ सौ इक्यावन नंबर के साबुन से नहाती हूँ।"

1.उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा? 1

(क) विज्ञापन का युग (ख) शिक्षण संस्थाएं (ग) साहित्य (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं |

2. निम्नलिखित में से किस – किस का उपयोग विज्ञापन के लिए होने का अंदेशा है ? 1

(क) शिक्षा (ख) विज्ञान (ग) साहित्य और संस्कृति (घ)उपर्युक्त सभी

3. आज शिक्षण संस्थाओं की क्या स्थिति है? 1

(क) किसी संप्रदाय का प्रचार – प्रसार नहीं कर रही है |
(ख) किसी संप्रदाय का प्रचार – प्रसार कर रही है |
(ग) अपना कार्य ईमानदारी से कर रही है | (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं |

4. विज्ञापन ने अपनी पहुँच मंदिरों और भगवान के चरणों तक बना ली है। कैसे? 1

5. इस गद्यांश के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? 2

6. कुछ लेखकों की कृतियाँ किसी व्यक्ति-विशेष की स्मारक बन जाती हैं, कैसे? 2

7. आने वाले समय में विश्वविद्यालय की डिग्रियों की स्थिति क्या होगी? और क्यों? 2

उत्तर –

1.(क) विज्ञापन का युग
2. (घ) उपर्युक्त सभी
3. (ख) किसी संप्रदाय का प्रचार – प्रसार कर रही है |
4. विज्ञापन का प्रचार-प्रसार इतना बढ़ चुका है कि देवालय जैसे स्थान भी इसकी पहुँच से दूर नहीं रहे हैं। आज मंदिरों और देवालयों में भी तरह-तरह के विज्ञापन सरलता से देखे जा सकते हैं। दीवारों और मंदिर की मूर्तियों पर उनके दानदाता का नाम कुछ विज्ञापित करता दिखाई देता है।
5. इस गद्यांश के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि वर्तमान में विज्ञापन का बोलबाला है। इसने मानवजीवन को कदम-कदम पर प्रभावित किया है। शिक्षालय, देवालय, विद्यार्थियों की डिग्रियाँ भी किसी-न-किसी व्यक्ति या वस्तु का विज्ञापन करती नजर आती हैं। भविष्य में इसके बढ़ते रहने की प्रबल संभावना है।
6. जब कुछ लेखकों की कृतियाँ धनाभाव में प्रकाशित नहीं हो पाती हैं, तब किसी लाला छगनलाल, मगनलाल की सहायता राशि से प्रकाशित होती हैं, परंतु उस पर सहायक व्यक्ति या संस्था का नाम लिखा जाता है। इस प्रकार वह कृति उस व्यक्ति-विशेष की स्मारक बन जाती है।

7. आगामी समय में विश्वविद्यालय की डिग्रियाँ व्यक्ति की योग्यता का प्रमाण-पत्र कम, विज्ञापन का साधन अधिक होंगी, क्योंकि उन पर शिक्षार्थी की योग्यता के उल्लेख के साथ-साथ विज्ञापन संबंधी वाक्य भी होंगे, जो आयात-निर्यात के धंधे और सूची-पत्र पाने की जगह के बारे में बताएँगे।

अपठित गद्यांश -3

एक तरफ साहित्य लेखन की भाषा आज भी संस्कृत निष्ठ बनी हुई है तो दूसरी तरफ़ संचार माध्यम की भाषा ने जनभाषा का रूप धारण करके व्यापक जनस्वीकृति प्राप्त की है । समाचार विश्लेषण तक में कोड मिश्रित हिंदी का प्रयोग इसका प्रमुख उदाहरण है। इसी प्रकार पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक,पारिवारिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्य प्रधान अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चैनलों पर जिस हिंदी में किया जा रहा है वह एकरूपी और एकरस नहीं है बल्कि विषय के अनरूप उसमें अनेक प्रकार के व्यावहारिक भाषा रूपों या कोडों का मिश्रण उसे सहज जन स्वीकृत स्वरूप प्रदान कर रहा है । एक वाक्य में कहा जा सकता है कि संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा बड़ी तेज़ी से तत्समता से सरलीकरण की ओर जा रही है । इससे उसे अखिल भारतीय ही नहीं, वैश्विक स्वीकृति प्राप्त हो रही है ।स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक हिंदी दुनिया में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी परंतु आज स्थिति यह है कि वह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है तथा यदि हिंदी जानने-समझने वाले हिंदीतर भाषी देशी-विदेशी हिंदी भाषा प्रयोक्ताओं को भी इसके साथ जोड़ लिया जाए तो हो सकता है कि हिंदी दुनिया की प्रथम सर्वाधिक व्यवहृत भाषा सिद्ध हो। हिंदी के इस वैश्विक विस्तार का बड़ा श्रेय भूमंडलीकरण और संचार माध्यमों के विस्तार को जाता है । यह कहना ग़लत न होगा कि संचार माध्यमों ने हिंदी के जिस विविधता पूर्ण सर्वसमर्थन रूप का विकास किया है, उसने भाषा-समृद्ध समाज के साथ-साथ भाषा-वंचित समाज के सदस्यों को भी वैश्विक संदर्भों से जोड़ने का काम किया है । यह नई हिंदी कुछ प्रतिशत अभिजात वर्ग की भाषा नहीं बल्कि अनेकानेक बोलियों में व्यक्त होने वाले ग्रामीण भारत की नई संपर्क भाषा है । इस भारत तक पहुँचने के लिए बड़ी से बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भी हिंदी और भारतीय भाषाओं का सहारा लेना पड़ रहा है । हिंदी के इस रूप विस्तार के मूल में यह तथ्य निहित है कि गतिशीलता हिंदी का बुनियादी चरित्र है और हिंदी अपनी लचीली प्रकृति के कारण स्वयं को सामाजिक आवश्यकताओं के लिए आसानी से बदल लेती है । इसी कारण हिंदी के अनेक ऐसे क्षेत्रीय रूप विकसित हो गए हैं जिन पर उन क्षेत्रों की भाषा का प्रभाव साफ़-साफ़ दिखाई देता है । ऐसे अवसरों पर हिंदी व्याकरण और संरचना के प्रति अतिरिक्त सचेत नहीं रहती बल्कि पूरी सदिच्छा और उदारता केसाथ इस प्रभाव को आत्मसात कर लेती है । यही प्रवृति हिंदी के निरंतर विकास का आधार है और जब तक यह प्रवृति है तब तक हिंदी का विकास रुक नहीं सकता। बाज़ारीकरण की अन्य कितने भी कारणों से निंदा की जा सकती हो लेकिन यह मानना होगा कि उसने हिंदी के लिए अनेक अनुकूल चुनौती प्रस्तुत की है | बाज़ारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचना क्रांति तथा जीवन शैली के वैश्वीकरण की जो स्थितियाँभारत की जनता के सामने रखी, इसमें संदेह नहीं कि उनमें पड़कर हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास ही हुआ। अभिव्यक्ति कौशल के विकास का अर्थ भाषा का विकास ही है ।

1. संचार माध्यम हिंदी के वैश्विक प्रसार में किस प्रकार योगदान दे रहें हैं? (1 अंक)

(क) संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा सरल होती जा रही है ।

(ख) संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा संस्कृतनिष्ठ होती जा रही है |

(ग) संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा का व्याकरण सुधर गया है |

(घ)संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा प्रसार हो रहा है |

2. हिंदी भाषा की तत्समता से सरलीकरण की ओर जाने का क्या अभिप्राय है ? (1 अंक)

(क) सरल से कठिन की ओर जाना

(ख) कठिन से सरल की तरफ जाना

(ग) हिंदी से संस्कृत कीओर जाना

(घ) हिंदी में अंग्रेजी के शब्द मिलाना

3. बाजारीकरण से हिंदी को क्या फायदा हुआ है? (1 अंक)

(क) हिंदी संस्कृतनिष्ठ हुई है

(ख) हिंदी बदल गई है

(ग) हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास

(घ) दुनिया में हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने लगी

4. बहुराष्ट्रीय कंपनियों को हिंदी का सहारा क्यों लेना पड़ रहा है? (1 अंक)

5. संचार माध्यम भाषा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? (2 अंक)

6. हिंदी के निरंतर विकास का आधार क्या है? (2 अंक)

7 हिंदी को वैश्विक स्वीकृति प्राप्त होने के क्या कारण हैं? (2 अंक)

उत्तरमाला

1. उत्तर- (क) संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा सरल होती जा रही है ।

2 उत्तर -(ख) कठिन से सरल की तरफ जाना।

3. उत्तर -(ग) हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

4. उत्तर- ग्रामीण भारत तक पहुँचने के लिए |

5. उत्तर - संचार माध्यमों के कारण भाषा जनभाषा का रूप धारण करके व्यावहारिक भाषा के रूप में व्यापक जनस्वीकृति प्राप्त करती है । संचार माध्यमों के कारण भाषा तत्समता से सरलीकरण की ओर बढ़ती है

6. गतिशीलता हिंदी का बुनियादी चरित्र है और हिंदी अपनी लचीली प्रकृति के कारण स्वयं को सामाजिक आवश्यकताओं के लिए आसानी से बदल लेती है । ऐसे अवसरों पर हिंदी व्याकरण और संरचना के प्रति अतिरिक्त सचेत नहीं रहती बल्कि उदारता के साथ इस प्रभाव को आत्मसात कर लेती है । यही प्रवृति हिंदी के निरंतर विकास का आधार है।

7. संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा बड़ी तेज़ी से तत्समता से सरलीकरण की ओर जा रही है । इससे उसे अखिल भारतीय ही नहीं, वैश्विक स्वीकृति भी प्राप्त हो रही है ।

अपठित गद्यांश - 4

"इस संसार में कुछ व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कुछ केवल अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखते हैं| प्राय:ऐसा देखा जाता है कि भाग्यवादी व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा को सर्वोपरि मानता है और अपने प्रयत्नों को गौण मान बैठते हैं| वे विधाता का ही दूसरा नाम भाग्य को मान लेते है | भाग्यवादी कभी-कभी अकर्मण्यता की स्थिति में भी आ जाते हैं|उनका कथन होता है कि कुछ नहीं कर सकते सब-कुछ ईश्वर के अधीन है | हमें उसी प्रकार परिणाम भुगतना पड़ेगा जैसा भगवान चाहेगा| भाग्योदय शब्द में भाग्य प्रधान है | एक अन्य शब्द है -सूर्योदय|

हम जानते हैं कि उदय सूरज का नहीं होता सूरज तो अपनी जगह पर रहता है ,चलती घूमती तो धरती ही है |

फिर भी सूर्योदय हमें बहुत शुभऔर सार्थक मालूमहोता है | भाग्य भी इसी प्रकार है | हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाए तो इसे भाग्योदय ही मानना चाहिए| पुरुषार्थी व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर कार्य सिद्ध कर लेना चाहता है | पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे| पुरुष का अर्थ पशु से भिन्न है | बल-विक्रम तो पशु में अधिक होता है ,लेकिन पुरुषार्थ पशु चेष्टा के अर्थ से अधिक भिन्न और श्रेष्ठ है | वासना से पीड़ित होकर पशु में अधिक पराक्रम देखा जाता है , किन्तु यह पुरुष से ही संभव है कि वह आत्मविसर्जन में पराक्रम दिखाए| पुरुषार्थ व्यक्तिको क्रियाशील रखता है जबकि अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य के भरोसे बैठता है | हमें भाग्य और पुरुषार्थ का मेल साधना है | यदि सही दिशा में बढ़ेंगे तो सफलता अवश्य हमारे कदम चूमेगी|

1. कौन ईश्वर की इच्छा को सर्वोपरि मानता है ? (1)

(क) ईश्वरवादी (ख)नास्तिक (ग) भाग्यवादी (घ) पुरुषार्थी

2. सूर्योदय कैसे होता है ? (1)

(क) धरती के घूमने से (ख) सूरज के घूमने से

(ग) सूरज के स्थिर रहने से (घ) चाँद के घूमने से

3. भाग्य के भरोसे कौन बैठता है ? (1)

(क) ईश्वरवादी व्यक्ति (ख) नास्तिक व्यक्ति

(ग) अकर्मण्य व्यक्ति (घ) पुरुषार्थी व्यक्ति

4. 'अकर्मण्यता' शब्द से उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए | (1)

5. पुरुषार्थ से क्या तात्पर्य है ? (2)

6. पुरुष का अर्थ पशु से कैसे भिन्न है ? (2)

7. भाग्यवादी होना या पुरुषार्थी होना आपके विचार से क्या उचित है ? (2)

उत्तरमाला:-

i. उत्तर- (ग) भाग्यवादी

ii. उत्तर -(क) धरती के घूमने से

iii. ग) अकर्मण्य व्यक्ति

iv. उत्तर- अकर्मण्यता शब्द में उपसर्ग - 'अ', प्रत्यय- ता, मूलशब्द- कर्मण्य

v. उत्तर -पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे|

vi. पुरुष का अर्थ पशु से भिन्न है |बल तो पशु में अधिक होता है, लेकिन पुरुषार्थ पशुचेष्टा से अधिक भिन्न और श्रेष्ठ है |

vii. मेरे विचार से पुरुषार्थी होना भाग्यवादी होने की अपेक्षा ज्यादा उचित है क्योंकि पुरुषार्थ व्यक्ति को क्रियाशील रखता है जबकि भाग्यवादी व्यक्ति अकर्मण्य हो जाता है |

(काव्यांश)

उद्देश्य

अपठित काव्यांश से साहित्य की रचनाओं को पढ़ने और समझने का कौशल विकसित होना। इससे काव्य पंक्तियों के भाव और अर्थ को समझना। साथ ही काव्य पंक्तियों में निहित संदेश को जानना ।इसके अलावा काव्य सौन्दर्य तथा भाषा शैली को भी समझना ।

अपठित काव्यांश-

अपठित का अर्थ है- अ + पठित अर्थात् बिना पढ़ा हुआ। जो काव्यांश पहले कभी न पढ़ा गया हो, उसे अपठित काव्यांश कहते हैं। अपठित काव्यांश प्रश्न-पत्र में सम्मिलित करने का उद्देश्य छात्रों के बौद्धिक, भावात्मक पकड़ की जाँच करना है। परीक्षा में इसी प्रकार का काव्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे हल करते समय विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है |

स्मरणीय बिंदु-

- सर्वप्रथम काव्यांश को दो से तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। इससे काव्यांश का मूल भाव समझ में आ जाएगा।
- फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर काव्यांश में ही होते हैं। उन्हें समझकर रेखांकित करें ।
- अस्पष्ट और सांकेतिक प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए काव्यांश के मूलभाव को आधार बनाएँ।
- सभी विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का ही चयन करें ।
- कभी-कभी बहुविकल्पीय प्रश्नों में दिए गए विकल्प आपस में बहुत मिलते-जुलते से प्रतीत होते हैं। ऐसी अवस्था में विकल्प के शब्दों के अर्थ-भार की ओर ध्यान देकर उचित
- विकल्प का चुनाव करें।
- काव्यांश में प्रयुक्त तद्भव,तत्सम,देशज शब्दों को सर्वप्रथम प्रसंगानुसार समझना आवश्यक है।

अपठित काव्यांश : 1

यह अवसर है, स्वर्णिम सुयुग है
खो न दे इसे नादानी में
रंगरेलियों में, छेड़-छाड़ में
मस्ती में, मनमानी में।

तरुण, विश्व की बागडोर ले
तू अपने कठोर कर में
स्थापित कर रे मानवता
बर्बर नृशंस के उर में।

दंभी को कर ध्वस्त धरा पर
अस्त-त्रस्त पाखंडों को,
करुणा शांति स्नेह सुखभर दे

बाहर में, अपने घर में
यौवन की ज्वाला वाले
दे अभयदान पद-दलितों को,
तेरे चरण शरण में आहत
जग आश्वासन-श्वास गहे।

1.उपर्युक्त काव्यांश का वर्ण्य विषय क्या है? (1 अंक)

(क)मानव का कल्याण करना (ख)मनुष्य जन्म का सुनहरा अवसर

(ग)शांति एवं सुख का प्रसार (घ)उपर्युक्त सभी

2.विश्व की बागडोर किस के हाथों में शोभा पाती है ? (1 अंक)

(क)अपनी मौजमस्ती में चलने वाले युवकों के हाथों में

(ख) परिश्रमी नवयुवकों के कठोर हाथों में

(ग) दंभी पाखंडी युवकों के हाथों में

(घ) आत्मकल्याण करने वालों के हाथों में

3.'करुणा शांति स्नेह सुख भर दे' पंक्ति में निहित अलंकार है :- (1 अंक)

(क.)उपमा (ख).उत्प्रेक्षा (ग).अनुप्रास (घ) .मानवीकरण

4.'दे अभयदान पद दलितों को' पंक्ति का आशय है (1 अंक)

5.'बाहर में, अपने घर में' इस पंक्ति में हमारी किस विशेषता का बोध होता है? (2 अंक)

6.'कवि युवाओं को किसमे समय नष्ट न करने की सलाह दे रहा है? (2 अंक)

उत्तर 1. घ, 2. ख, 3. ग

4.दलित वर्ग पर हो रहे शोषण अत्याचार से मुक्त कर निडर बनाएँ |

5.वीरता,साहस, कल्याण,परोपकार, युद्धकौशल|

6.नादानी,मस्ती,मनमानी,आवारागर्दी एवं व्यर्थ के कामों से दूर रहने |

अपठित काव्यांश : 2 (8 अंक)

ओ जीवन पथ के राही तू अश्रु बहाना छोड़ दे।
टेढ़ी मेढ़ी राह जगत की, कहीं प्रकट तो कहीं छिपी है,
संकरी-चौड़ी कहीं तो, कहीं उदित अस्ताचल है।
राही तुझे संभलकर चलना, बिना रुके बढ़ जाना है,
सुख-दुख, हानि-लाभ, तेरे शाश्वत हमराही हैं।
ओ जीवनपथ के राही तू अश्रु बहाना छोड़ दे।
आशा निराशा ही तो जीवन का स्पंदन है,

जय पराजय जीवन भूमि के न्यारे जुड़वा भाई हैं।
काम-क्रोध, मद-लोभ, जीवन रथ के पहिये हैं,
इस रथ को संमार्ग ले जाना, विज्ञ रथी का काम है।
ओ जीवन पथ के राही तू अश्रु बहाना छोड़ दे।
क्या लेकर आया इस जग में, क्या लेकर जाएगा,
कौन अपना-कौन पराया, तुझको कौन बताएगा?
क्या रिश्ते-नाते ..... कौन स्वजन-परिजन,
तू तो ऐसा ज्ञाता बन जा, अर्जुन-कृष्ण जमाने का।
ओ जीवन पथ के राही तू अश्रु बहाना छोड़ दे।
तृष्णा,लिप्सा,माया-मोह,मृग-मरीचिका हैं,
जब तक जीवन ज्योति चमकती,
तब तक हितकारी है
मानव-सेवा,परोपकार से मिलती सुखद तृप्ति है,
सुकृत्यों की क्यारी में ..... हरियाली लहरानी है।
ओ जीवन पथ के राही,तू अश्रु बहाना छोड़ दे।
मानव जीवन यदि दुर्लभ है, सार्थक इसे बनाना है,
अपने सुश्रम और लगन से, इस जग को सजाना है।
गर मानवता नहीं मनुज में, जीवन उसका व्यर्थ है,
स्वकर्म से सत्कर्म की कल्पना तू करता चल।

1.उपर्युक्त पंक्तियों में जीवन रथ का सारथी किसे कहा गया है? (1 अंक)

(क)सैनिकों को (ख)देशवासियों को (ग)पथिक को (घ) श्रमिकवर्गको

2.कवि राही से क्या कहना चाह रहा है? **(**1अंक)

(क). रास्ता भूले बिना निरंतर चलते रहना (ख) बाधाओं से मुंह मोड लेना

(ग). विपरीत परिस्थितियों से हताश हो जाना (घ) कठिन राहों पर विश्राम करना

3.कौन अपना-कौन पराया तुझको कौन बताएगा ? पंक्ति में अलंकार निहित है :- (1अंक)

(क). अनुप्रास (ख) प्रश्नालंकार (ग)उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) उपमा

4.कवि ने संसार को मृगमरीचिका क्यों कहा है? (1)

5.पथिक को मार्ग किस प्रकार सरल लगने लगता है? **(2)**

6.प्रथम अंतरे के अनुसार कवि जीवन के राही को क्या सन्देश दे रहा हैं ? **(2)**

उत्तर	1. ग	2. क	3.ख

4.पथिक मोह माया में फँसकर भटक जाता है|

5.जब स्वकर्मों से सत्कर्मों की कल्पना करता है|

6.प्रथम अंतरे के अनुसार कवि ने बिना रुके निरंतर आगे बढने का सन्देश दिया है

अपठित काव्यांश : 3

झपटता बाज
फन उठाये सांप
दो पैर पर खड़ी
कांटो से नन्ही पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाडियों में चलता चीता,

डाल पर उलटा लटक
फल कुतरता तोता
या इन सबकी जगह
आदमी होता |
जब भी भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता

सुंदर दिखने लगता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

(क)पद्यांश में पशु-पक्षियों की चर्चा किस संबंध में की गई है ? ①

(i) भूख से लड़ने के संदर्भ में | (ii)शिकार करने के संदर्भ में।

(iii)प्राकृतिक सौदर्य के संदर्भ में (iv) मनुष्य से आगे बढ़ने के संदर्भ में

(ख)पद्यांश में दबे पाँव झाड़ियों से चलता हुआ कौन आता है ? ①

(i) तोता (ii) बकरी (iii) चीता (iv) बाज

(ग) कवि भूख से लड़ने को किसके प्रतीक के रूप में देखता है ? ①

(i) प्राकृतिक गतिविधियों के रूप में (ii) संघर्ष के रूप में

(iii)हिंसक जानवरों के प्रतीक के रूप में (iv) उपरोक्त सभी

उत्तर-

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

(क) प्रस्तुत पद्यांश में बकरी ने पत्तियों का भोजन कहाँ से प्राप्त किया ? (1)

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में बकरी ने पतियों का भोजन दो पैर पर खड़े होकर कंटीली झाड़ियों में स्थित कांटेंदार पेड़ से प्राप्त किया।

(ख) बाज तथा साँप में कवि को कौन-सा सौन्दर्य नज़र आता है | (2)

उत्तर- बाज और साँप दोनों अपने शिकार को डराकर और स्वाभिमान से भोजन प्राप्त कर अपनी भूख मिटाते हैं।

(ग) कवि ने वर्तमान समय की किस समस्या को चित्रित किया है? (2)

उत्तर- कवि ने वर्तमान समय की भूख और आतंक तथा भय की समस्या को चित्रित किया है।

अपठित काव्यांश :4

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,

मत झूको अनय पर, भले व्योम फट जाए।
दो बार नही यमराज कंठ धरता है,
मरता है जों, एक बार ही मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे ।
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे |
स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है।
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है |
वीरत्व छोड़, मत पर का चरण गहों रे |
जो पड़े आन, खुद ही सब अगन सहो रे |

बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) देश की स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए ? (1)

(i)देशवासियों को वीरतापूर्वक रहना चाहिए | (ii)दूसरों के सामने झुकना नहीं चाहिए
(iii)निरन्तर संघर्ष करना चाहिए (iv)उपरोक्त सभी

(ख) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यान पूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही उतर चुनकर लिखिये (1)

कथन (A) जो पड़े आन , खुद ही सब अगन सहो रे।
कारण (R) व्यक्ति को कष्ट का सामना स्वयं करना चाहिए उसे दूसरे के सहारे की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।
(i) कथन (A) कारण (R) दोनों सही है तथा कारण(R) कथन(A) की सही व्याख्या करता है।
(II) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(III) कथन (A) तथा कारण(R) दोनो गलत है।
(iv) कथन (A) सही है लेकिन कारण(R) उसकी गलत व्याख्या करता हे |

(ग) स्वतंत्रता के बारे में क्या कहा गया है ? (1)

(i) मानव जाति की लगन है। (ii) स्वतंत्रता व्यक्ति का भीतरी गुण है।
(iii) स्वतंत्रता व्यक्ति को बाँधकर रखती है। (iv) स्वतंत्रता बाहरी वस्तु है ।

कूट-

(i) केवल कथन 1 (ii) कथन 2 और 3 (iii) कथन 1और 2 (iv) केवल कथन 4

उत्तर- (क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii)

अतिलघुतरीय प्रश्न

प्रश्न(घ)-कवि के अनुसार मनुष्य का भीतरी गुण क्या है? (1)

उत्तर- स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान मनुष्य का भीतरी गुण है।

लघुतरीय प्रश्न –

प्रश्न (ङ)' छोड़ो मत अपनी आन' इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है? (2)

उत्तर- कवि ने यह संदेश दिया है कि चाहे प्राणों का बलिदान करना पडे या असहनीय कष्ट सहना पड़े परन्तु व्यक्ति को अपनी आन -बान नही छोड़नी चाहिए ।

प्रश्न (च) स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो " पंक्ति का क्या आश्रय है ? (2)

उत्तर-'स्वंय मरण के मुख पर चरण धरो "पंक्ति से आश्रय यह है कि जो लोग मृत्यु से निडर होकर आत्म सम्मान की रक्षा के लिए मर मिटने को तत्पर रहते है उनका जीवन यशस्वी माना जाता है।

आरोह भाग 2

(काव्य खंड)

कविता- आत्म परिचय

कवि का नाम- हरिवंश राय बच्चन

केंद्रीय भाव- कविता 'आत्मपरिचय' में कवि का मानना है कि स्वयं को जानना, दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन कार्य है । व्यक्ति के लिए समाज से निरपेक्ष एवं उदासीन रहना संभव नहीं है। संसार से पूरी तरह तटस्थ रह जाना भी मुश्किल हैं ।अपने ढंग से जीने वालों को दुनिया समझ नहीं पाती। वे आलोचनाओं के शिकार होते हैं । कवि किसी प्रिय की मधुर यादों से झंकृत हृदय में सभी के लिए प्यार लिए फिरता है।सांसारिक जीवन की कड़वाहट के बावजूद कवि के हृदय में सबके लिए प्यार हैं।यह संसार कवि को अपूर्ण लगताहै।संसार के लोग जहाँ वैभव अर्थात धन-दौलत के पीछे दौड़ते है वहीं कवि कदम-कदम पर उस स्थिति को ठुकराता है।कवि संसार के आकर्षण से दूर अपनी ही दुनिया में मस्त दीवानों की तरह रहता है।वे सुखऔर दुःख दोनों स्थितियों को समान भाव से सहन कर मग्न रहने का सन्देश देते हैं।

आत्मपरिचय कविता की भाषा सरल, प्रवाहमयी, साहित्यिक खड़ी बोली है।कविता में श्रृंगाररस का प्रयोग हुआ है।आत्मकथात्मक शैली गेयात्मकता से युक्त हैं।जग-जीवन /स्नेह-सुरा /जग झूम -झुके में अनुप्रासअलंकारहैं। स्नेह-सुरा ,भव-सागर एवं भव-मौजों में रूपकअलंकारहै।मैं और,और जग और में यमकअलंकार हैं। उन्मादों में अवसाद, बाहर हँसा, रुलाती भीतर और शीतल वाणी में आग पंक्तियों में विरोधाभास अलंकारहैं।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न (5 अंक)

पठित काव्यांश 1 -

मैं जग - जीवन का भार लिए फिरता हूँ ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर ,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !

मैं स्नेह - सुरा का पान किया करता हूँ ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ ,
जग पूछ रहा उनको,जो जग की गाते ,
मैंअपने मन का गान किया करता हूँ !

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता ,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ !

1. आत्मपरिचय कविता के कवि हैं -

(क) रामधारी सिंह दिनकर (ख) सुमित्रानंदन पन्त
(ग) हरिवंश राय बच्चन (घ) महादेवी वर्मा

2. कवि किसका भार लिए फिरता है?

(क) अपने मित्रों का (ख) जग-जीवन का

(ग) अपनेआस - पास का (घ) नेताओं का

3. कवि अपने जीवन में क्या लिए फिरता है -

(क) प्यास (ख) भूख (ग) उल्लास (घ) प्यार

4. कवि किस सुरा का पान करता हैं?

(क) स्नेह (ख) उमंग (ग) ईर्ष्या (घ) सुधा

5.कवि संसार को अपूर्ण क्यों मानता है?

(क) यह बनावटी और झूठा है। (ख) वह स्वार्थी है।

(ग) उसमें प्रेम नहींहैं। (घ) सभी सही हैं

उत्तरक्रम - 1.ग, 2.ख, 3.घ, 4क, 5. घ

पठित काव्यांश -2

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भवमौजों पर मस्त बहा करता हूँ !
मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ ,
जो मुझको बाहर हँसा,रुलाती भीतर ,
मैं, हाय ,किसी की याद लिए फिरता हूँ !
कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना ?
नादान वही है, हाय ,जहाँ पर दाना !
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे ?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना !

1. कवि की मन:स्थिति कैसी है?

(क) अवसाद ग्रस्त (ख) उत्साह से युक्त

(ग) उन्मादी (घ) उपरोक्त सभी

2. कवि के हृदय में कौन सी आग है?

(क) स्मृतियों की (ख) प्रौढ़ावस्था की

(ग) युवावस्था की (घ) वृध्दावस्था की

3. भव-सागर,में कौन-सा अलंकार है-

(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक (ग) यमक (घ) श्लेष

4. कवि किसकी याद लिए फिरता है?

(क) अपनी माँ की (ख) अपनी प्रियतमा की

(ग) अपनी बहन की (घ) उपरोक्त में किसी की नहीं

5. संसार के बारे में कवि क्या कह रहा है?

(क) यहाँ लोग जीवन-सत्य को जानने का प्रयास करते है।

(ख) यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने में कभी सफल नहीं हुए।

(ग) यहाँ लोग सांसारिक माया जाल में उलझे हैं।

(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तरक्रम -2

1-घ, 2- क, 3- ख, 4- ख, 5 - घ

पठित काव्यांश -3 (अभ्यासहेतु)

मै और ,और जग और ,कहाँ का नाता ,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता ;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव ,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ ,
हो जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर ,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरताहूँ।
मैं रोया ,इसको तुम कहते हो गाना ,
मैं फूट पड़ा ,तुम कहते ,छंद बनाना ,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए ,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना !
मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ
जिसको सुनकर जग झूम ,झुके,लहराए ,
मैं मस्ती का सन्देश लिए फिरता हूँ !

1. कवि कैसे संसार को ठुकराता है?

(क) ईमानदार (ख) सत्यनिष्ठ (ग) कर्मशील (घ) वैभवशाली

2. कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?

(क) छंद बनाना (ख) बहाने बनाना (ग) आँसू बहाना (घ) आभिनय करना

3. कवि की वाणी की क्या विशेषता है?

(क) मृदुलता (ख) कठोरता (ग) उग्रता (घ) शीतलता

4. कवि कैसा सन्देश लिए फिरता है?

(क) सांत्वना का (ख) बलिदान का (ग) मस्ती (घ) समर्पण का

5. मैं और,और जग और ,कहाँ का नाता -पंक्ति में कौन-सा अलंकार हैं?

(क) यमक (ख) उत्प्रेक्षा (ग) रूपक (घ) कोई नहीं

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1. यौवन में उन्माद लिए घूमने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - कवि प्रेम के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। वह संसार में प्रेम का सन्देश देना चाहता हैं । इस कार्य के लिए कवि में जोश,उत्साहऔर जवानी की मस्ती भरी हुई है।

2. कवि हरिवंश राय बच्चनका संसार के प्रति दृष्टिकोण कैसा है?

उत्तर - कवि संसार को स्वार्थ से युक्त और अपूर्ण मानता हैं । संसार उन्हीं का गुणगान करता है जो उनके झूठ का समर्थन करते है । उनकी हाँ में हाँ मिलाकर चलते है। कवि ऐसे संसार की परवाह नहीं करता हैं । कवि अपनी कल्पना के संसार में जीता है।

3. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता - पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर - इस पंक्ति का आशय यह है कि कवि और अर्थात कवि की विचारधारा अलग तथा जग की विचारधारा अलग है फिर भी दोनों का नाता है। संसार धन-वैभव के पीछे भागता हैं।कवि इसे व्यर्थ मानता हैं ,ऐसे स्वार्थी संसार से कवि का कोई सम्बन्ध नहीं हैं।

4. शीतल वाणी में आग लिए घूमनें का क्या आशय है?

उत्तर- यह कवि की विरोधाभासी स्थिति को व्यक्त करता है।कवि सामाजिक परिवर्तन के लिए इसे आवश्यक मानता हैं।समाज में बदलाव और क्रांति शोर से नहीं, अपितु शांत भाव से मीठी वाणी से भी संभव हैं।शीतल वाणी का प्रहार व्यंग्यात्मक होता है और सबसे कारगर भी होता है। शीतलवाणी आग के समान तीव्र गति से परिवर्तन ला सकती है।

5. जहाँ पर दाना रहते हैं वहाँ नादान भी होते हैं - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर-संसार में अक्लमंद और अज्ञानी एक साथ ही रहते हैं।जहाँ सब कुछ उपलब्ध हैं,वहीं खालीपन भी है । मूर्ख सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता हैं, ज्ञानी मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

6- संसार में कष्टों को सहते हुए भी ख़ुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है? आत्मपरिचय कविता के आधार पर लिखिए ?

उतर:- मानव जीवन कष्टों से भरा हुआ है ।कष्टों के बिना जीवन भी क्या जीवन है कवि का विचार लोगो को प्रभावित करता है कि हम अपने सुखो की परवाह न कर के दूसरों से स्नेह करें।लोगो में प्यार,मस्ती का सन्देश बाटें। यह सत्य है कि कोई इस संसार में सदैव सुखी नहीं रह पाया।इस सत्य को जनमानस में भरना आवश्यक है।इसी सिद्धांत से लोगो में ईर्ष्या, द्वेष का क्षरण होगा और शांतिपूर्ण माहौल कायम होगा। भौतिक सुखों की चाहत कमतर होगी। लोगों में आत्मीयता का भाव बढेगा।इस प्रकार ख़ुशी और मस्ती का संचार हो सकता हैं।

7 .'आत्मपरिचय' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है| समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है | संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं।दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे,पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है | वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है | वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीति कलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है |

8.'आत्मपरिचय' कविता को दृष्टि में रखते हुए कवि की मनोदशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए|

उत्तर- कवि कहता है कि यद्यपि वह संसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है |वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है | वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं | वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है | कवि संतोषी प्रवृत्ति का है | वह अपनी वाणी के जरिए अपना आक्रोश व्यक्त करता है | उसकी व्यथा शब्दों के माध्यमसे प्रकाट होती है तो संसार उसे गाना मानता है | वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है | कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है |

9. कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?

उत्तर- कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है | वह संसारिक बन्धनों को नहीं मानता | वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है | बार-बार वह अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है | वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है|

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है

केंद्रीय भाव- दिन जल्दी-जल्दी ढलता है कविता में श्रीहरिवंश राय बच्चन जी ने समय बीतने के अहसास के साथ हमें लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित किया है।राह,मार्ग पर चलने वाला पथिक,राही यह सोचकर अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ाता है कि कहीं रास्ते में ही रात न हो जाए, इसलिए दिन का थका पथिक भी लक्ष्य की ओर जल्दी-जल्दी चलता है | चिड़िया को भी दिन बीतने के साथ यह अहसास होता है कि उनके बच्चे कुछ पाने की आशा में घोंसले से बाहर झाँक रहे होंगे | यह सोचकर चिड़िया के पंखों में गति और चंचलता आ जाती है | कविता में सकारात्मक सोच व आशावादी दृष्टिकोण है।आशा की किरण जीवन की जड़ता को समाप्त कर देती है। यह कविता समय रहते अपने लक्ष्य को पाने की प्रेरणा भी देती है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित काव्यांश 1 -

हो जाए न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं हैं

यह सोच थका दिन का पंथी भी
जल्दी -जल्दी चलताहै।
दिन जल्दी -जल्दी ढलताहैं।
बच्चे प्रत्याशा में होंगें ,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे -
यह ध्यान परों में चिड़ियों के
भरता कितनी चंचलता हैं।
दिन जल्दी -जल्दी ढलताहै।
मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किस के हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को ,
भरता उर में विह्वलता हैं।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं !

1. एक गीत कविता में कवि ने समय को कैसा माना हैं?
   (क) स्थिर (ख) परिवर्तनशील
   (ग) तीव्र (घ) चंचल
2. पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं ?
   (क) शाम होने वाली हैं। (ख) लक्ष्य समीप हैं।
   (ग) रात न हो जाए। (घ) उपयुर्क्त सभी
3. दिन ढलने के साथ ही बच्चे कहाँ से झाँक रहे होंगें?
   (क) खिड़की से (ख) छत से
   (ग) दरवाजे से (घ) नीड़ों से
4. कवि के हृदय में कैसे भाव भरे हुए हैं ?
   (क) शिथिलता के (ख) जोश एवं उत्साह के
   (ग) विह्वलता के (घ) ईर्ष्या एवं घृणाके
5. नीड़ो से झाँक रहे बच्चो का ध्यान चिड़िया के परो में क्या भरता है?
   (क) विह्वलता (ख) शिथिलता
   (ग) चंचलता (घ) व्याकुलता

उतर - 1- ख, 2- घ, 3- घ, 4- ग, 5- घ

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंक वाले)

1. "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कविता में चिड़िया अपने घरो की ओर लौटने के लिए विकल क्यों हैं?

उत्तर- चिड़ियों कोअपने बच्चों की याद विकल कर देती हैं उसे मालूम होता हैं कि बच्चे नीड़ों से चिड़िया के आने का रास्ता देख रहे होंगे।चिड़िया भूखे बच्चों को दाना लाएगी।इसलिए वह घोंसले में लौटने के लिए विकल हो जाती है।

2.दिन जल्दी-जल्दी ढलता है कीआवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर.- दिन जल्दी जल्दी ढलता है की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता हैं।पथिक को लक्ष्य तक पहुँचनेकी आतुरता उत्पन्न हो जाती हैं।समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को व्यक्त किया गया है।

3.-चिड़िया के बच्चे किस आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगें?

उत्तर-चिड़िया के बच्चे अपने माता-पिता के आने की प्रतीक्षा में घोसलों से सिर निकालकर उनका इंतजार कर रहे है।जो उनके लिए दाना/भोजन और स्नेह लेकर आएगें।शाम होते ही चिड़ियों की चंचलता बढ़ जाती है।

4.'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !' कविता का उद्देश्य बताइए |

उत्तर- .'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है गीत निशा निमंत्रण से उद्धृत है |इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश को व्यक्त करता है| किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता यानी तेज़ी भर सकता है | इससे हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं | यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुछ कर गुज़रने का ज़ज्बा भी लिए हुए है |

5.कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता है? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए |

उत्तर- कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है | शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने के इंतजार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है |अतः वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे | शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा | इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे कवि के कदम धीमे हो जाते हैं |

6.यदि मंजिल दूर हो,तो लोगों की वहाँ पहुँचने की मानसिकता कैसी होती है?

उत्तर- मंजिल दूर होने पर लोगों में उदासीनता का भाव आ जाता है | कभी-कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है | मंजिल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना छोड़ देते हैं कुछ व्यर्थ के तर्क-वितर्क में उलझकर रह जाते हैं | मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है |

7.निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए-

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पग को,

भरता उर में विह्वलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

उत्तर- भाव- शाम निकट जानकार प्राणी अपने-अपने घर आने को उद्यत हैं, क्योंकि कोई-न-कोई उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है, पर कवि के आने के इंतजार में कोई प्रतीक्षारत नहीं है, इसलिए उसके कदम शिथिल हैं |

शिल्प-सौंदर्य • प्रश्न अलंकार का प्रयोग है |

• सरल, सहज, प्रवाहमयी भाषा भावाभिव्यक्ति के अनुकूल है |

• तत्सम शब्दों का प्रयोग है |

8. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- दिन जल्दी-जल्दी ढलता है कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है | प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है | प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी-जल्दी बीता जा रहा है | इससे अपने परिजनों से मिलने की उमंग से कदमों में तेजी आती है तथा पक्षियों के पंखों में तेजी और गति आ जाती है | यदि जीवन में प्रेम न हो तो शिथिलता आ जाती है।

कविता- पतंग

कवि का नाम-आलोक धन्वा

केंद्रीय भाव- कविता पतंग आलोक धन्वा के एकमात्र संग्रह का हिस्सा है। पतंग के बहाने इस कविता में बालसुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर चित्रण किया गया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए सुंदर बिंबों का उपयोग किया गया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है। आसमान में उड़ती हुई पतंग ऊँचाइयों की वे हदें हैं, बालमन जिन्हें छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

कविता धीरे-धीरे बिंबों की एक ऐसी नयी दुनिया में ले जाती है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, जहाँ तितलियों की रंगीन दुनिया है, दिशाओं के मृदंग बजते हैं। जहाँ छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर भय पर विजय पाते बच्चे हैं जोगिर-गिरकर सँभलते हैं और पृथ्वी का हर कोना खुद-ब-खुद उनके पास आ जाता है। वे हर बार नयी-नयी पतंगों को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए फिर-फिर भादो(अँधेरे) के बाद शरद (उजाले) की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित काव्यांश 1 -

सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादों गया
सवेरा हुआ
ख़रगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को

1 – 'तेज़ बौछारें गयीं' पंक्ति में कवि किस ऋतु की बात कर रहा है?
(क) भादों (ख) सावन (ग) ग्रीष्म (घ) शरद

2 – 'शरद आया पुलों को पार करते हुए' पंक्ति का क्या आशय है?
(क) शरद ऋतु किसी नदी की भांति आई है
(ख) शरद ऋतु नदी पर बने पुल की भांति है
(ग) शरद ऋतु कई ऋतुओं को पुल की भांति पार करते हुए फिर से आई है
(घ) शरद ऋतु पुल को पार करके फिर से आई है

3 – 'शरद आया' में शरद में कौन सा अलंकार है?
(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण (ग) उपमा (घ) रूपक

4 – पद्यांश में शरद रूपी बालक क्या उड़ाने का इशारा कर रहा है?
(क) पतंग (ख) धुँआ (ग) पंछी (घ) साइकिल

5 – पद्यांश में पतंग उड़ाने का इशारा किसको किया जा रहा है?
(क) बालक रूपी शरद को (ख) बालक रूपी सावन को
(ग) बालक रूपी भादो को (घ) बच्चों को

उतर – 1- ख , 2- ग, 3- ख , 4- क , 5- घ

पठित काव्यांश 2 -

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-
दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज़ उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला काग़ज़ उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-
कि शुरू हो सके सीटियों ,किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाज़ुक दुनिया
जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर

1 - पद्यांश में कवि ने पतंग के बारे में क्या विशेषताएँ बताई है?
(क) वह संसार की सबसे हलके कागज़ से बनी होती है
(ख) वह संसार की सबसे रंग-बिरंगे कागज की बनी होती है
(ग) इसमें लगी बाँस की कमानी सबसे पतली होती है

(घ) उपरोक्त सभी

2 - पद्यांश में बच्चों की दुनिया कैसी बताई गई हैं?

(क) बच्चों की दुनिया उत्साह, उमंग व बेफ़िक्री का होती है

(ख) आसमान में उड़ती पतंग को देखकर वे किलकारी मारते हैं तथा सीटियाँ बजाते हैं

(ग) वे तितलियों के समान मोहक होते हैं

(घ) उपरोक्त सभी

3 - **'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?**

(क) बच्चे जन्म से ही अपने साथ निर्मलता, कोमलता लेकर आते हैं

(ख) बच्चों के हाथ कपास की तरह नाजुक होते हैं

(ग) बच्चे कपास के साथ बचपन से खेलते आए हैं

(घ) जन्म से ही बच्चे कपास के सामान होते हैं

4 - 'छतों को भी नरम बनाते हुए' से क्या आशय है?

(क) बच्चे दौड़ते हुए कठोर जमीन को भी नरम बना देते हैं

(ख) बच्चे पतंग उड़ाते हुए बेसुध हो कर दौड़ते हैं और कठोर जमीन की परवाह नहीं करते

(ग) बच्चे छतों पर चढ़ कर पतंग उड़ाते हैं

(घ) उपरोक्त सभी

5 - **पद्यांश में कवि ने बच्चों की तीव्रता व लचीलेपन की तुलना किससे की है?**

(क) छोटी झाड़ियों से (ख) पेड़ की पत्तियों से

(ग) पेड़ की डाल से (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - 1- घ, 2-घ, 3- क, 4- ख, 5- ग

पठित काव्यांश 3 –

छतों के खतरनाक किनारों तक-
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास

1 - पद्यांशानुसार बच्चों को छतों से गिरने से कौन बचाता है?

(क) शरीर का लचीलापन

(ख) पतंग की डोर
(ग) बच्चों के अभिभावक
(घ) उनका साहस

2 - गिर कर बच जाने पर बच्चे क्या करते हैं?

(क) दुबारा पतंग नहीं उड़ाते
(ख) दुबारा छत पर नहीं चढ़ते
(ग) दुबारा नए जोश से बिना भय के पतंग उड़ाते हैं
(घ) दुबारा पतंग के पीछे नहीं भागते

3 - 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' पंक्ति से कवि क्या कहना चाहते हैं?

(क) बच्चे पतंग के सहारे दूर तक दौड़ लगाते हैं
(ख) बच्चे अपनी कल्पनाओं व भावनाओं को पतंग के सहारे ऊंचाइयों तक पहुंचा देते हैं
(ग) बच्चे अपनी शरारतों को पतंग के सहारे दूसरों तक पहुँचा देते हैं
(घ) उपरोक्त सभी

4 - बच्चों के पैरों को बैचैन क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि बच्चे शरारती होते हैं
(ख) क्योंकि बच्चे पतंग उड़ाते हैं
(ग) क्योंकि बच्चे इतने गतिशील होते हैं कि एक जगह पर नहीं टिकते
(घ) उपरोक्त सभी

5 - 'सुनहले सूरज' में कौन सा अलंकार है?

(क) रूपक अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार (ग) पुनरुक्ति अलंकार (घ) उपमा अलंकार

उतर - 1क , 2- ग , 3- ख , 4- ग, 5- ख

कथन-कारण परआधारित प्रश्न

प्रश्न1. कथन: (A) पतंग कविता में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है।

कारण: (R) प्रस्तुत कविता खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।

(क) कथनA सत्य है लेकिन कारण R असत्यहै।
(ख) कथनA और कारणR दोनों सत्य हैंऔर कारणR, कथनA की सही व्याख्या है।
(ग) कथनA असत्य है लेकिन कारणR सत्य है।
(घ)कथन A औरकारणR दोनोंसत्यहैंलेकिनकारणR,कथन A कीसहीव्याख्यानहीहै।

प्रश्न2. कथन: (A) कविता पतंग में कवि ने बाल सुलभ चेष्टाओं का अनूठा वर्णन किया है।

कारण: (R) कविता में उपमा, अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का सुन्दर प्रयोग है।

(क) कथनA सत्य है लेकिन कारणR असत्यहै।
(ख) कथन A औरकारण R दोनोंसत्यहैंऔरकारण R, कथन A कीसहीव्याख्याहै।

(ग) कथनA असत्य है लेकिन कारण R सत्यहै।
(घ)कथन A और कारण R दोनों सत्यहैं लेकिनकारणR,कथन A की सही व्याख्या नहींहै।

प्रश्न3. कथन: (A) पतंग कविता में पतंग को कल्पना के रूप में चित्रित किया गया है।
कारण: (R) कविता में मुक्त छंद का प्रयोग है।
(क) कथनA सत्य है लेकिन कारणR असत्य है।
(ख) कथन A और कारण R दोनों सत्य हैंऔरकारण R, कथन A की सही व्याख्या है।
(ग) कथनA असत्य है लेकिन कारण R सत्य है।
(घ)कथन A और कारण R दोनों सत्य है लेकिन कारणR,कथन A की सही व्याख्या नहींहै।
उत्तर- 1-ख, 2-ख, 3-ख

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंक वाले)

1. कवि ने प्रकृति का चित्रण किस प्रकार किया है?
उत्तर: कवि ने प्रकृति का बहुत ही सुंदर अद्भुत चित्रण किया है भावना से जोड़कर बच्चों की इच्छा, प्रेम, स्नेह, कल्पना ने प्रकृति के साथ साथ उनके संबंध का बहुत ही सुंदर चित्रण कवि ने किया है शरद ऋतु और वर्षाऋतु जाने के बाद उसे चारों ओर धूप की चमक बिखर जाती है| शरद के आने पर वातावरण में उत्साह और उमंग के वातावरण बनता है और हर तरफ मौसम के इतने सुंदर बदलाव से सुंदर मनमोहक सुगंध फैल जाती है|

2. कवि ने पतंग के लिए किस प्रकार के विशेषणों का प्रयोग किया है?
उत्तर: सबसे हल्की और रंगीन चीज के लिए पतंग का उपयोग किया है जैसे सबसे हल्का एवं पतला कागज| कवि अपने बचपन की यादों से पाठकों को आकर्षित करता है तथा पाठकों की जिज्ञासा बढ़ाते हैं , कवि बताते हैं कि बच्चे इन पतंग की तरह होते हैं जो हमेशा बहुत सारी इच्छाओं के साथ आकाश में उड़ने के लिए तैयार होते हैं | बच्चे पतंगों के माध्यम से आकाश में उडना चाहते हैं, बच्चे भी पतंग की तरह साथ-साथ उड़ते हैं अपनी इच्छा और कल्पनाओं को लेकर|

3 . कवि के अनुसार बच्चे किसकी तरह हल्के और मुलायम है?
उत्तर: कवि के अनुसार बच्चे कपास यानी रूई की तरह है मुलायम, नरम और कोमल होते हैं बच्चों का मन बहुत ही कोमल और सदय होता है उनकी भावनाएं पवित्र होती है जब बच्चे पतंग लेकर लेकर भागते हैं तब पतंग के साथ साथ बच्चों की कल्पनाएं और इच्छाएं भी उड़ने लगती है सुंदर दृश्य ऐसा होता है जैसे हवा में बच्चे उड़ रहे हैं, बच्चे रूई की तरह हल्के और मुलायम लगते हैं|

4. बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं तब क्या प्रतीत होता है?
उत्तर: बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं तब बच्चे उड़ते हुए प्रतीत होते हैं पतंग उड़ाते समय बच्चे ऐसे खुश होते हैं जैसे वह जमीन पर पतंग के साथ-साथ भी उड़ रहे हो पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों पर वैसे ही उड़तेहैं जैसे आसमान में पतंग बच्चों को किसी भी प्रकार के खतरों का डर नहीं है कि वह छत से गिर सकते है या नहीं बस वह अपनी मस्ती मे लीन होते हैं|

5. कवि आलोक धन्वाजी का संक्षिप्त परिचय दीजिए?
उत्तर: आलोक धन्वा जी का जन्म 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था इनकी पहली कविता जनता का

आदमी प्रकाशित हुई थी उनकी प्रमुख रचनाएं भागी हुई लड़कियां तथा बेटियों की भ्रूणहत्या आदि पर राहुल सम्मान से तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ने इन्हें साहित्य सम्मान से सम्मानित किया है। आलोक धन्वा जी को बनारसी प्रसाद भोजपुरी सिनेमा तथा पहल सम्मान से भी सम्मानित किया गया है इनकी कविताओं का संग्रह दुनिया रोज बनती है 1998 में प्रकाशित हुआ था।

6. कविता पतंग का सारांश लिखिए ?

उत्तर: कविता पतंग में कवि ने बच्चों की भावना और इच्छाओं तथा कल्पनाओं का बहुत ही सुंदर औरआकर्षक वर्णन किया है यह कविता पढ़ते समय पाठक की बचपन की याद ताजा हो जाती है कवि कहते हैं कि पतंग बच्चों के रंगीन सपने का परिचायक है कभी कहते हैं कि बच्चे पतंग के सहारे अपने सपनों की उड़ान भरते हैं कवि इस कविता में वर्षा ऋतु के बाद आने वाली शरद ऋतु के उमंग और वातावरण का सुंदर वर्णन करतेहैं बच्चे पतंग उड़ाने के लिए गलियों और छतों पर ऐसे दौड़ते हैं जैसे उन्हें गिरने का डर हो ही ना और जब वह कभी गिरने से बच जाते है तो उनके मन में विश्वास और बढ़ जाता है।

7. सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया..... तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया। इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर: इन पंक्तियों का आशय है कि कवि वर्षा ऋतु के बाद के वातावरण का वर्णन करता है। कवि कहते हैं कि बरसात खत्म हो गई है, वर्षा ऋतु के जाने के बाद शरद ऋतु का आगमन हुआ है शरदऋतु में जो तेज धूप निकलती है उसकी लालिमा खरगोश की आंखों की तरह ही प्रतीत होती है। कवि ने शरदऋतु को एक मानव की तरह प्रस्तुत करते हुए कहा है कि शरद ऋतु जो साइकिल की घंटी बजाते हुए तथा पूलों को पार करते हुए आ रहा है वह बच्चों को पतंग उड़ाने के लिए अपनी तरफ आकर्षित कर रहा हैं। कवि कहना चाहते हैं कि शरद ऋतु के कारण आसमान मुलायम प्रतीत होता है तथा चारों तरफ उमंग खुशी और उत्साह का वातावरण है। इस ऋतु में तितलियों और पतंगो जैसी संसार की सबसे कोमल और हल्की चीज उड़ती हुई नजर आती है। बच्चे पतंगों की भांति हल्के और उनकी कल्पनाएँ तितलियों की तरह रंगीन है।

8. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास..... .पतंगों की धड़कती ऊंचाइयां उन्हें थाम लेती है महज एक धागे के सहारे इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इन पंक्तियों में कवि ने कपास से बच्चो की तुलना की है। कवि कहते हैं कि बच्चे कपास की तरह बिल्कुल नरम, कोमल और मुलायम होते हैं बच्चे इतने कोमल होते हैं कि यह धरती उनके छूने से मुलायम हो जाती है। इस धरती पर बच्चे पतंग लेकर मौज मस्ती करते हैं एवं भागते-दौड़ते हैं। पतंग उड़ाने में बच्चे इतने ज्यादा मगन रहते हैं कि उन्हें छत से गिरने का भी डर नहीं रहता। बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं तो उनका शरीर इधर-उधर झूले की भांति डोलता है चोट ना लगने पर बच्चों के मन में आत्मविश्वासऔर अधिक बढ़ जाता है और वह पतंग उड़ाने में लीन रहते हैं।

9. पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं ---------- इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इन पंक्तियों से तात्पर्य है कि भी बच्चों के मन की कल्पनाओ, इच्छाओं की उड़ान की कोई सीमा नहीं हैं। बच्चे के मन में भांति-भांति की भावनाएं,कल्पनाएँ, सपने उत्पन्न होते रहते हैं बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं तब वे भी पतंग के साथ-साथ उड़ने लगते हैं। बच्चे की कल्पना तथा भावनाएं पतंग के साथ उड़ान भरते नजर आती है। उनके शरीर में उमंग तथा उत्साह की भावना है उनके शरीर में लचीलापन है जिसके कारण छत से गिरने से भी बच जाते हैं और गिरने से बचने से उनके मन में अधिक से अधिक विश्वास हो जाता है कि वह नहीं गिरेंगे क्योंकि जिस तरफ पतंग का रुख होता है उसी तरह बच्चा भी अपने आप को मोड़ लेता है।

10 . सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़ , सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

उत्तर- कविता में कवि ने पतंग की विशेषताओं को और अच्छे तरीके से बताने के लिए इन विशेषणों का प्रयोग किया है।जिस चीज का भार जितना कम होगा वह आकाश में उतनी ही अधिक ऊंचाई पर जा सकेगी।पंतग का कागज़ जितना पतला और हल्का होगा, वह उतनी ही आकाश में ऊँचाई में जाएगी।इसके अतिरिक्त उसके भार को कम बताने के लिए कवि ने इन विशेषणों का प्रयोग किया है।इस प्रकार के विशेषणों का प्रयोग करके पंतग को रंग-बिरंगी, हलकी तथा आकर्षक बताने का प्रयास किया गया है।

11. आपके जीवन में शरद ऋतु क्या मायने रखती है?

उत्तर- प्रत्येक ऋतु का अपना महत्त्व है । समय के अनुसार सभी ऋतुएँ आती हैं और जाती हैं । इनमें से शरद ऋतु का अपना अलग ही महत्त्व है । बारिश थम जाती है और आकाश साफ दिखने लगता है। इस ऋतु में प्रकृति नई -नई लगने लगती है।हर कोई इस प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेना चाहता है।मुझे भी शरद ऋतु बहुत अच्छी लगती है.

13. कवि ने बच्चों के लिए 'कपास' शब्द का प्रयोग किया है, क्यों?

उत्तर- कपास बहुत मुलायम और सफ़ेद होती है । बच्चे भी कपास की तरह कोमल होते हैं । जिसप्रकार कपास परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रहती है बच्चे भी माहौल के अनुसार अपना व्यवहार बदलते हैं।बच्चों का मन साफ स्पष्ट होता है ठीक कपास की तरह।

कविता के बहाने

कवि का नाम-कुंवर नारायण

केंद्रीय भाव- 'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता-कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित काव्यांश 1 -

कविता एक उड़ान है, चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान, भला चिड़िया क्या जाने
बाहर, भीतर
इस घर , उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

1. कविता के पंख लगाकर उड़ने से क्या तात्पर्य है?

(क) सुंदर लेख लिखना (ख)कल्पना करना

(ग) व्यर्थ लिखना (घ) अर्थ स्पष्ट करना

2. बाहर भीतर , इस घर - उस घर इन शब्दों में प्रयुक्त अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार (ख)अनुप्रास अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

3. कविता की उड़ान किसके माध्यम से होती है?

(क) चिड़िया (ख)कबूतर (ग) कविता के बहाने (घ) इनमें से कोई नहीं

4. कविता के पंख लगाकर उड़ने का अर्थ कौन नहीं जानता है?

(क) कविता (ख) फूल

(ग) चिड़िया (घ) उपवन

5. उक्त पंक्तियों के रचनाकार है ?

(क) ऋतुराज (ख)आलोक धन्वा

(ग) कुँवरनारायण (घ) कोई नहीं

उत्तर -1. ख, 2. ख, 3. क, 4. ग, 5. ग

पठित काव्यांश 2

कविता एक खिलना है, फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जानें !
बाहर भीतर
इस घर , उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जानें ?

1. "बिना मुरझाए महकने के माने" से क्या तात्पर्य है ?

(क) अपनी महक फैलाना

(ख) अनंतकाल तक कविता का अर्थ प्रदान करना

(ग) सीमित काल तक सुगंध फैलाना

(घ) बिना मुरझाए कुछ दिन महक प्रदान करना

2. 'कविता का खिलना' क्या अर्थ प्रदान करता है ?

(क) कविता के माध्यम से मानव मूल्यों की सुगंध बिखेरना

(ख) कविता में अत्यधिक अलंकारों का प्रयोग करना

(ग) कविता में नवीन शब्दावली का प्रयोग

(घ) इनमें से कोई नहीं

3. कविता की एक बार रचना होने पर क्या होता है ?

(क) कविता अपनी महक बिखेरती है

(ख) कविता अनंतकाल तक अपना अस्तित्व बनाए रखती है और लोगों को आनंद देती है
(ग) कविता मुरझाने लगती है
(घ) कविता आनंदित करती है

4. फूल खिलकर प्रदान करते हैं ?

(क)फल (ख) शहद (ग) दुर्गंध (घ) महक

5. 'फूल क्या जानें' इस पंक्ति मे अलंकार है ?

(क) अनुप्रास (ख)उपमा (ग) यमक अलंकार (घ) प्रश्न अलंकार

उत्तर -1 ख, 2 क, 3 ख, 4 घ, 5 घ,

पठित काव्यांश 3 -

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर , वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।

1. कवि के अनुसार कविता किसके बहाने एक खेल है ?

(क)बच्चों का (ख)शब्दों का (ग)बारिश का (घ) फूलों का

2. कवि ने कविता को एक खेल बताया है। इस कविता के खिलौने (उपकरण) क्या हैं ?

(क) जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान,भविष्य आदि (ख) संयम, परिष्कार, साफ-सुथरापन आदि
(ग) कैरम, कॉक, बल्ला, गेंद आदि (घ) इनमें से कोई नहीं

3 . 'सब घर एक कर देने के माने' से क्या तात्पर्य है ?

(क) प्रेम के साथ रहना (ख)सभी का एक साथ मिलजुलकर रहना
(ग) अपने पराये में भेदभाव नहीं रखना (घ)उपर्युक्त सभी

4. कवि द्वारा कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हैं ?

(क) कविता और बच्चे दोनो में नवीन ऊर्जा का संचार करने की शक्ति होती है।
(ख) कविता की तरह ही बच्चे भी भविष्य की ओर कदम बढाते हैं।
(ग) बच्चों की तरह कविता भी भेदभाव से परे होती है।
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. पुराने मूल्यों में वर्तमान के मूल्यों को जोड़कर भविष्य की ओर कदम कौन बढाता है ?

(क) चिड़िया और फूल (ख)कवि (ग) संयमी व्यक्ति (घ) बच्चा और कविता

उत्तर - 1.क 2.क, 3.घ 4.घ, 5.घ

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंक वाले)

1. इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?

उत्तर–कविता के बहाने कविता में सब घर एक कर देने के मायने' का अर्थ है- सीमा का बंधन समाप्त हो जाना।जिस प्रकार बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का ध्यान नहीं रखा जाता, उसी प्रकार कविता में स्थान की कोई सीमा नहीं है । यह शब्दों का खेल है । कवि बच्चों की तरह पूरे समाज को एक मानता है।वह अपने पराए का भेद भूलकर कविता की। रचना करता है। कविता समाज को बाँधती है, एक करती है।

2. "उड़ने' और" खिलने" का कविता से क्या संबंध बनता हैं?

उत्तर–कविता का 'उड़ने' व'खिलने' से सीधा संबंध है।चिड़िया एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़कर जाती है, परंतु कविता कल्पना के सहारे बहुत ऊँचे तक उड़ती है । यह काल की सीमा तक को लाँघ जाती है । इसी तरह कविता फूल की तरह विकसित होती है । फूल अपनी सुंदरता व गंध से समाज को प्रसन्न रखता है, उसी तरह कविता भी मानवीय भावों से विकसित होकर तरह-तरह के रंग दिखाती है तथा उसकी खुशबू सनातन है, वह हर युग में मानव को आनंद देती है।

3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

अथवा

कविता को बच्चों के समान क्यों कहा गया हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–कवि ने बच्चे और कविता को समानांतर रखा है । बच्चों में रचनात्मक ऊर्जा होती है । उनके खेलने की कोई निश्चित सीमा नहीं होती । उनके सपने असीम होते हैं । इसी तरह कविता भी रचनात्मक तत्वों से युक्त होती है । उसका क्षेत्र भी विस्तृत होता है।उनकी कल्पना शक्ति अद्‌भुत होती है।

4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने ' क्या होते हैं?

उत्तर– कवि का मानना है कि कविता कभी मुरझाती नहीं है।यह अमर होती है तथा युग-युगांतर तक मानव-समाज को प्रभावित करती रहती है । अपनी जीवंतता की वजह से इसकी महक बरकरार रहती है । कविता के माध्यम से जीवन -मूल्य पीढ़ी दर-पीढ़ी चलते रहते हैं।

5. 'कविता के बहाने' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर–कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है । एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा । कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं । बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता । कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य -सभी उपकरण मात्र हैं।इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाएँगे।वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

6. "कविता के बहाने' कविता के कवि की क्या आशंकाएं हैं और क्यों?

उत्तर– इस कविता में कवि को कविता के अस्तित्व के बारे में संदेह है । उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है । उसके पास भावनाएँ व्यक्त कर ने या सुनने का समय नहीं है । प्रगति

की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं।अत: कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

7. फूल और चिड़िया को कविता की क्या-क्या जानकारियाँ नहीं हैं? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर– फूल और चिड़िया को कविता की निम्नलिखित जानकारियाँ नहीं हैं-

फूल को कविता के खिलने का पता नहीं है।फूल एक समयावधि में मुरझा जाते हैं, परंतु कविता के भाव सदा खुशबू बिखेरते रहते हैं।

चिड़िया की उड़ान की एक सीमा होती है परन्तु कविता की उड़ान असीम है | वह समय और देश की सीमाओं से परे जाकरआनंद फैलाती रहती है |

8.'कविता के बहाने' के आधार पर कविता के असीमित अस्तित्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'कविता के बहाने' में कविता काअसीमित अस्तित्व प्रकट करने के लिए कवि ने चिड़िया की उड़ान का उदाहरण दिया है । वह कहता है कि चिड़िया की उड़ान सीमित होती है किंतु कविता की कल्पना का दायरा असीमित होता है। चिड़िया घर के अंदर-बाहर या एक घर से दूसरे घर तक उड़ती है, परंतु कविता की उड़ान व्यापक होती है।कवि के भावों की कोई सीमा नहीं है।कविता घर-घर की कहानी कहती है । वह पंख लगाकर हर जगह उड़ सकती है।उसकी उड़ान चिड़िया की उड़ान से कहीं आगे है।

कविता -बात सीधी थी पर
कवि का नाम - कुँवर नारायण

कविता का केंद्रीय भाव: "बात सीधी थी पर" कविता में कवि कुंवर नारायण कथ्य के माध्यम से द्वंद्व को उकेरते हुए भाषा की सहजता पर बल देते हैं ।कवि का मानना है कि सीधी -सरल बात को भी तोड़ -मरोड़ कर प्रस्तुत करने की मानसिकता उसे जटिल बना देती है । ऐसे में भाषा का अर्थ से अनर्थ बना दिया जाता है ।भाषा में चमत्कार दिखाने की इच्छा से कवि स्वयं भाषा के पेंच कसता गया जिससे भाषा में जटिलता आ गई । वे सभी से कहना चाहते है कि हमें सीधी सरल बात को बिना पेंच फसाएँ सीधे -सरल शब्दों में कहने का प्रयास करना चाहिए

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित काव्यांश 1-

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
ज़रा टेढ़ी फंस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा-पलटा
तोड़ा-मरोड़ा
घुमाया-फिराया
कि बात या तो बने

या फिर भाषा से बाहर आए -
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।

1.बात को पाने की कोशिश में कवि ने क्या किया?

(क) भाषा को तोड़ा - मरोड़ा (ख) भाषा को उलटा - पलटा

(ग) घुमाया -फिराया (घ) उपर्युक्त सभी कुछ किया

2. कवि की क्या कोशिश थी?

(क) भाषा से बाहर आ जाये (ख) बात बन जाए

(ग) क और ख दोनों (घ) कवि सफल हो जाये

3. उपर्युक्त काव्यांश के कवि कौन हैं?

(क) रवि नारायण (ख) कुंवर नारायण

(ग) हरिवंश राय बच्चन (घ) आलोक धनवा

4, क्या आखिर बात बनी ?

(क) हाँ (ख) कुछ-कुछ (ग) नहीं, बिल्कुल नहीं (घ) बनते- बनते रह गई

5. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन: (A) बात सीधी थी पर, कविता में कविता को सरल भाषा में लिखने पर ज़ोर दिया गया है ।

कारण: (R) भाषा की जटिलता में भाव पूर्णत: अभिव्यक्त नहीं हो पाते हैं ।

विकल्प-

(क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

(ख)कथन (A) गलत है, कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(घ)कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर: 1-घ, 2-ग, 3-ख, 4-ग, 5-घ

काव्यांश 2-

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह।
आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी

1. बात को बेतरह कसने से क्या नतीजा निकला?

(क) बात शब्दों का जाल बनकर रह गई

(ख)बात उद्देश्यहीन और निरर्थक हो गई

(ग)बात का अपनापन और उसकी कसावट ख़त्म हो गई

(घ)उपरोक्त सभी सही हैं

2. "बात की चूड़ी मर गई" कथन का क्या आशय है?

(क) बात का प्रभाव हीन हो जाना

(ख) बात में सहजता का समावेश होना

(ग) बात की गंभीरता का बने रहना

(घ) बात के कठिन भावों का समाप्त हो जाना है

3.कवि को किस बात का डर था?

(क) उसकी बात दबा दी जाएगी

(ख)उसकी बात समाज में स्थान प्राप्त कर पाएगी

(ग)उसकी बात श्रोता पर अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल पाएंगी

(घ)उपरोक्त सभी

4. कवि ने अपनी बात को किससे कारण पेचीदा बना दिया?

(क) वाह -वाही लेने के लोभ में

(ख) सरल भावों में अभिव्यक्ति के लिए

(ग) सामाजिक प्रतिष्ठा को ध्यान में रखने के लिए

(घ) उपरोक्त सभी

5.तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में कौन-सा भाव है?

(क) प्रशंसा का (ख)व्यंग्य का (ग)आक्रोश का (घ)समानता का

उत्तर :- 1-घ, 2-क 3-ग 4-क 5-ख

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंक वाले)

1. भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है - अपनी बात को सरल, सुग्राह्यता, और बिना अलंकारिकता के प्रयोग करना | इससे बात का भाव आसानी से समझ में आ जाता है | यही भाषा का उद्देश्य भी है |

2.'भाषा के चक्कर में, जरा टेढ़ी फँस गई' का आशय स्पष्ट करो?

उत्तर :'भाषा के चक्कर में , जरा टेढ़ी फँस गई' का आशय यह है कि सीधी सरल बात को जबरदस्ती अलंकृत करके उसे उलझा दिया गया इससे बात का भाव और अर्थ दोनों बदल गए।

3.'उसे पाने की कोशिश में' यहाँ 'उसे' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है और क्यों?

उत्तर : उसे पाने की कोशिश में' यहाँ 'उसे' शब्द का प्रयोग कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा की क्लिष्टता के कारण उलझी बात के लिए किया गया है 'उसे पाने की कोशिश में' का अर्थ है बात को भाषा के चक्कर से बाहर निकालना और उसका सही अर्थ समझाना। बिना अर्थ के भाषा का कोई लाभ नहीं केवल चमत्कारपूर्ण भाषा यदि कोई अर्थ स्पष्ट न करे तो वह बेकार है ।

4. कवि बात के बारे में क्या बताता है?

उत्तर :कवि कहता है कि बात साधारण थी परंतु वह भाषा के चक्कर में जटिल हो गई |

5. कवि ने बात को पाने के चक्कर में क्या-क्या किया?

उत्तर :कवि ने बात का अर्थ समझने के लिए भाषा को घुमाया -फिराया-,उलटा-पलटा, तोड़ा- मरोड़ा | परिणाम स्वरूप बात और पेचीदा हो गई |

6.'पेंच खोलने की बजाय कसना'- पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करो?

उत्तर :- पंक्ति का अर्थ है कि बात को स्पष्ट करने के बजाय उसे और उलझा दिया गया| पेंच खोलने का अर्थ है बात को सुलझाना। पेंच कसने का अर्थ है, उसे बिना सोचे-समझे और उलझाना|

7. कवि ने करतब किसे कहा है?

उत्तर : कवि ने बात को बिना सोचे समझे उलझाने व कठिन बनाने को करतब कहा है | इससे कविता अलंकृत करने के चक्कर में बात कठिन हो गई ।

8.'बात की चूड़ी मर जाना' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :'बात की चूड़ी मर जाना' से क्या तात्पर्य है - बात में कसावट का नहीं होना, उसका प्रभाव समाप्त हो जाना सरल बात शब्दों के जाल में ऐसी उलझी की उसकी कसावट ही समाप्त हो गई |

9. कवि के करतब का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर :कवि ने भाषा को जितना ही बनावटी ढंग और शब्दों के जाल में उलझाकर लाग लपेट करने वाले शब्दों में कहा ,सुनने वालों द्वारा उसे उतनी ही शाबाशी मिली |

10. कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है?

उत्तर :- कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़ कर या घुमा-फिराकर कहा जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नहीं पाता। वह मनोरंजन तो पा सकता है, परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। इस तरीके से बात पेचीदा हो जाती है।

11. बात ओर भाषा दो मित्र हैं। अपने शब्दों में वर्णन कीजिये कि ये दोनों मित्र आपस में कैसे सम्बंधित हैं?

उत्तर :- 'बात' का अर्थ है-भाव तथा भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम है। दोनों का चोली-दामन का साथ है, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी कठिन प्रतीत होती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य शब्दों के चमत्कार में उलझ जाता है। वह इस गलतफहमी का शिकार हो जाता है कि कठिन तथा नए शब्दों के प्रयोग से वह अपनी बात को प्रभावपूर्ण ढंग से कह पाएगा।

12. "बात सीधी थी पर" कविता में कवि क्या कहता है?

उत्तर:- कुँवर नारायण जी की कविता 'बात सीधी थी पर' में कथ्य और माध्यम के द्वंद्व को दर्शाते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित ढाँचा होता है। अब तक जिन शब्दों को हम एक-दूसरे को पर्याय के रूप में जानते रहे हैं उन सबके भी अपने विशेष अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना भी एक विशेष कार्य है।

13. "बात सीधी थी पर" कविता हमें क्या संदेश देती है?

उत्तर:- यह कविता समाज में सरलता और स्पष्टता को बढ़ावा देने का काम करती है। यह लोगों को जीवन के छोटे-छोटे सुखों का आनंद लेने की प्रेरणा देती है और जटिलताओं से दूर रहने का संदेश देती है। आज के व्यस्त और जटिल जीवन में "बात सीधी थी" कविता की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह हमें याद दिलाती है कि जीवन की जटिलताओं में फंसे बिना सरलता और स्पष्टता से जीना कितना महत्त्वपूर्ण है

कविता- कैमरे में बंद अपाहिज

कवि का नाम : रघुवीरसहाय

कविता का प्रतिपाद्य - कैमरे में बंद अपाहिज कविता कोलोग'भूल गए हैं 'काव्य-संग्रह से लिया गया है । इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है । किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदन शील बनाने का दावेदार होना चाहिए।आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहींन हो जाता है । यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द, यातना-वेदनाआदि को बेचना चाहते हैं।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा देता है?

(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा |

1. प्रस्तुत काव्यांश में 'समर्थ-शक्तिवान' किसे कहा गया है?

(क) अपाहिज को (ख) दर्शक को (ग) कैमरामैन को (घ) दूरदर्शन वालों को

2. दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने किसे लाएँगे ?

(क) समर्थ व शक्तिवान को ख) अभिनेता व अभिनेत्री को

(ग) दुर्बल व अशक्त को (घ) राजा और मंत्रियों को |

3. दूरदर्शन वाले बंद कमरे में किसे लाते हैं?

(क) अपाहिज को (ख) शक्तिवान को (ग) बीमार को (घ) नेता को

4. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस पर व्यंग्य है?

(क) व्यवस्था पर (ख) दूरदर्शन वालों पर (ग) दर्शकों पर (घ) अपाहिज पर |

5. अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा?

(क) अपना सुख (ख) अपना दुख (ग) अपना सामर्थ्य (घ) अपना बल |

उत्तर- 1. घ, 2.ग, 3.क, 4.ख, 5. ख

काव्यांश-2.

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतज़ार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं?
(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)

1. कार्यक्रम को रोचक कैसे बनाया जाएगा?

(क) अपाहिज की सहायता करके (ख) अपाहिज को हंसा करके

(ग) अपाहिज का साक्षात्कार लेकर (घ) अपाहिज को रुलाकर

2. अपाहिज को स्टूडियो क्यों लाया गया है?

(क) इलाज के लिए (ख) उसकी सहायता के लिए

(ग) उसके प्रचार के लिए (घ) दूरदर्शन चैनल के प्रचार के लिए

3. यह कविता किस शैली में लिखी गई है?

(क) व्यंग्यप्रधान कथात्मक शैली (ख) व्यंग्यप्रधान लयात्मक काव्य-शैली

(ग) व्यंग्यप्रधान नाटकीय शैली (घ) इनमें से कोई नहीं

4. कविता की भाषा कैसी है?

(क) अवधी (ख) ब्रज (ग) राजस्थानी (घ) सरल खड़ी बोली

5. कविता में कौन सा छंद है?

(क) छंदमुक्त कविता (ख) कवित्त (ग) ग़ज़ल (घ) चौपाई

उत्तर : 1.घ, 2.घ, 3.ग, 4.घ, 5.क

काव्यांश-3.

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा
बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)

अब मुसकुराएंगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद।

1. 'फूली हुई आँख' को दिखाने से क्या अभिप्राय है?

(क) आँख में संक्रमण होना (ख) रो-रोकर आँखें सुजा लेना
(ग) अपाहिज की दयनीय स्थिति को दर्शाना (घ) आँखों में पानी आना।

2. कार्यक्रम संचालक किन-किन को रुलाना चाहता है?

(क) दर्शकों को (ख) अपाहिज को
(ग) दर्शक और अपाहिज दोनों को एक साथ (घ) दर्शक,अपाहिज व स्वयं

3. 'कैमरे में बंद अपाहिज' किस प्रकार की कविता है ?

(क) करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की (ख) दया व परोपकार की
(ग) क्रांतिकारी व ओजस्वी (घ) सामाजिक विडंबना की

4. प्रस्तुतकर्ता दर्शकों से क्या रखने को कहता है?

(क) धन (ख) वक्त (ग) साहस (घ) धैर्य

5. कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस पर व्यंग्य है?

(क) अपाहिजों पर (ख) दर्शकों पर (ग) व्यवस्था पर (घ) दूरदर्शन वालों पर

उत्तर- 1.ग, 2.ग, 3.क, 4.घ, 5.घ

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1 – कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं - आपकी समझ से इनका क्या औचित्य है?

उत्तर कविता में कवि ने कुछ पंक्तियों को कोष्ठकों में रखा हैं। इन कोष्ठको को पढ़कर या समझकर हम पाते हैं कि ये कवि के मुख्य भाव को व्यक्त करते हैं। इन कोष्ठको में लिखी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अलग-अलग लोगों को संबोधित किया है।कोष्ठकों में दी गई पंक्तियों के माध्यम से संयोजक अपनी बात को सार्थकता, स्पष्टता और विशिष्टता प्रदान करता है और प्रयोगवादी शिल्प को व्यक्त करता है।

2 – 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है - विचार कीजिए।

उत्तर - 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। इस बात का अंदाजा यहीं से लगाया जा सकता हैं कि किस तरह एक अपाहिज व्यक्ति से बेतुके प्रश्न पूछ-पूछकर उसे रुलाने की पूरी कोशिश की जाती है ताकि कार्यक्रम की लोकप्रियता से व्यावसायिक लाभ हो सके।कहने का अभिप्राय यह है कि एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना असल में अमानवीय और क्रूरता की चरम सीमा है।

3 – 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर - 'हम समर्थ शक्तिवानऔर हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता को सभी के समक्ष लाने का प्रयास कर रहा है ।मीडिया में वह ताकत है जो किसी भिखारी को राजा और किसी राजा को एक ही झटके में भिखारी बना सकती है।दूरदर्शन व मीडिया के लोग अपने आपको बहुत समर्थ, शक्तिवान व ताकतवर समझते है । चैनल के लाभ के लिए संचालक किसी के दुःख को भी बेच सकते हैं । मीडिया के अटपटे प्रश्नों से अच्छा ख़ासा व्यक्ति भी बैचैन हो जाता है।अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने ही लगता है । कविता में इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने दूरदर्शन के कार्यक्रमों की इसी व्यवसायिकता पर तीखा व्यंग्य किया हैं।

4 – यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर - यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता का कार्यक्रम को रोचक बनाने दर्शकों की सहानुभूति प्राप्त करने का उद्देश्य पूरा हो जाएगा।क्योंकि प्रश्नकर्ता तो यही चाहता है कि वह अपाहिज व्यक्ति रोये, अपना दुःख लोगों के सामने प्रस्तुत करे।ताकि लोगों की सहानुभूति से उसे अधिक से अधिक व्यवसायिक लाभ हो।उस अपाहिज व्यक्ति के दुःख का प्रदर्शन करके प्रश्नकर्ता दिखाना चाहता है कि उन्होंने एक सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है । जिसमें उन्होंने एक अपंग व्यक्ति के दुःख और तकलीफ को हू-ब-हू सभी के समक्ष प्रस्तुत करके बहुत ही मार्मिक विषय को सफलतापूर्वक दिखाया है।

5. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर - "पर्दे पर वक्त की कीमत है" कवि का यह कथन दूरदर्शन के कार्यक्रमों के व्यावसायिक नजरिए को दिखता है।दरअसल परदे पर जो कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, उनका समय पहले से ही निर्धारित होता है और कविता में संचालक भी यह बताने की कोशिश कर रहा है कि दूरदर्शन पर किसी कार्यक्रम को दिखाना समय की दृष्टि से कितना महंगा पड़ता है क्योंकि दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को किसी के भी हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता । वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय बनाकर अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहते हैं।

6. कैमरे में बंद अपाहिज 'कविता के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए|

उत्तर- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में शारीरिक अक्षमता की पीड़ा झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा को जिस अमानवीय ढंग से दर्शको तक पहुँचाया जाता है वह कार्यक्रम के निर्माता और प्रस्तुतकर्ता की संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है । वह पीड़ित व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए उसे बेचने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ भी उनकी पैसा कमाने सोच दिखती है ,जो उनकी मानवता पर हावी हो चुकी है।

7. कैमरे में बंद अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहींनता प्रकट करती है, कैसे ?

उत्तर- 'कैमरे में बंदअपाहिज' कविता कुछ लोगों की संवेदनहींनता प्रकट करती है क्योंकि ऐसे लोग धन कमाने एवं अपने कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते है और किसी की करुणा बेचकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं । ऐसे लोग अपाहिजों से सहानुभूति नहीं रखते है और अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उल्टे -सीधे प्रश्न पूछते हैं । उनके मन में उन दिव्यांगों के प्रति किसी भी प्रकार का दया करुणा या संवेदना नहीं होती है बल्कि सिर्फ लालच एवं स्वार्थ ही होता है।

8- रघुवीर सहाय की काव्यकला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- रघुवीर सहाय की काव्य कला की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- कहानीपन और नाटकीयता
- बोलचाल की भाषा के शब्द -:बनाने के वास्ते, संग रुलाने हैं।
- सांकेतिकता -परदे पर वक्त की कीमत है।
- दृश्य बिम्ब -:फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर

9. दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमज़ोर को ही क्यों लाते हैं?

उत्तर- दूरदर्शन वाले जानते हैं कि समाज में कमज़ोर व अशक्त लोगों के प्रति करुणा का भाव होता है । लोग दूसरे के दुख के बारे में जानना चाहते हैं । दूरदर्शन वाले इसी भावना का फायदा उठाना चाहते है तथा अपने लाभ के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाते हैं।

10. 'यह अवसर खो देंगे?' पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता विकलांग से तरह-तरह के प्रश्न करता है।वह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है? ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रश्नकर्ता को तुरंत चाहिए ।यह विकलांग के लिए सुनहरा अवसर है कि वह अपनी पीड़ा को समाज के समक्ष व्यक्त करे।ऐसा करने से उसे लोगों की सहानुभूति व सहायता मिल सकती है।यह पंक्ति मीडिया की कार्यशैली व व्यापारिक मानसिकता पर करारा व्यंग्य है|

11– दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक अपने कार्यक्रम की लोकप्रियता और व्यापार को बढ़ाने के लिए क्या सोचता है?

उत्तर - दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक अपने आपको बहुत सक्षम और शक्तिशाली समझता है।इसीलिए वह अपने दर्शकों से कहता है कि वह उनके लिए एक व्यक्ति को दूरदर्शन के स्टूडियो के एक बंद कमरे में लाएंगें और उससे प्रश्न पूछेंगे । दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक असल में अपनी लोकप्रियता और व्यापार को बढ़ाने के लिए एक अपाहिज व्यक्ति का साक्षात्कार दर्शकों को दिखाना चाह रहे हैं।

12 - दूरदर्शन के स्टूडियो में उस अपाहिज व्यक्ति से कैसे प्रश्न पूछे जाते हैं और क्या वह उन प्रश्नो का उत्तर दे पाएगा?

उत्तर - दूरदर्शन के स्टूडियो के एक बंद कमरे में उस साक्षात्कार में उस अपाहिज व्यक्ति से बहुत ही बेतुके प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे "क्या वहअपाहिज हैं?" "यदि हाँ तो वह क्यों अपाहिज हैं?" "उसका अपाहिजपन तो उसे दु:ख देता होगा ? " इन बेतुके सवालों का वह व्यक्ति कोई जवाब नहीं दे पायेगा क्योंकि उसका मन पहले से ही इन सबसे दुखी होगा और इन सवालों को सुनकर वह और अधिक दुखी हो जायेगा।

13 – कविता में छुपी क्रूरता का चित्रण कीजिए।

उत्तर - कवि ने इस कविता के माध्यम से मीडिया का करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता को दिखाने का प्रयास किया है।मीडिया किस तरह व्यावसायिक लाभ के लिए कमजोर लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार करती हैं, यह कविता में एक अपाहिज व्यक्ति के साक्षात्कार के जरिए दिखाया गया है । कार्यक्रम के संचालक द्वारा झूठी सहानुभूति दिखाकर अपाहिज व्यक्ति से तरह-तरह के बहुत ही बेतुके प्रश्न पूछकर उस अपाहिज व्यक्ति को रुलाने का प्रयास किया जाता है और उसके अपाहिजपन का मजाक उड़ाया जाता हैं । उसे रोने पर मजबूर करने की कोशिश करना वह भी सिर्फ इसलिए ताकि उसके दुख-दर्द व तकलीफ को दिखाकर सहानुभूति प्राप्त करअधिक सेअधिक पैसा कमाया जा सके, यह क्रूरता की चरम सीमा नहीं तो क्या है?

14. "परदे पर वक्त की कीमत है" पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर - "पर्दे पर वक्त की कीमत है" पंक्ति से आशय यह है कि परदे पर जो कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, उनका समय पहले से ही निर्धारित होता है और कविता में संचालक भी यह बताने की कोशिश कर रहा है कि दूरदर्शन पर किसी कार्यक्रम को दिखाना समय की दृष्टि से कितना महंगा पड़ता है क्योंकि दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को किसी के भी हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता । वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय बनाकर अधिक सेअधिक पैसा कमाना चाहते हैं।

15 – मीडिया के अमानवीय व्यवहार को एक उदाहरण देकर बताइए।

उत्तर - मीडिया के अमानवीय व्यवहार का अंदाजा यहीं से लगाया जा सकता है कि कार्यक्रम का संचालक उस अपाहिज व्यक्ति से कहता है कि वह इशारा करके उसे बताएगा कि उसे अपने आपको दर्शकों के सामने कैसा दिखाना हैं कि वह अपाहिज होकर आखिर कैसा महसूस करता है । संचालक अपाहिज व्यक्ति को उत्तर देने के लिए कई तरह से उकसाता है। संचालक चाहता है कि वह अपाहिज व्यक्ति कैमरे के सामने वैसा ही व्यवहार करके दिखाए जैसा उसने उससे कहा है । ताकि उसके दर्शक अपनी दिलचस्पी उसके साथ बनाए रखें और उसका कार्यक्रम सफल व रोचक बन सके, जिससे उसे अधिक व्यावसायिक लाभ हो।

कविता - उषा

कवि का नाम -शमशेर बहादुर

केंद्रीय भाव - कविता का प्रतिपाद्य-

प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द –चित्र उकेरा है । कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है । कवि भोर की आसमानी गति का धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है । इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है,जो गाँव की सुबह से जुड़ता है –वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं।कवि ने नए बिम्ब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित काव्यांश 1 –

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल
ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और.....
जादू टूटता है उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

1 – 'शंख जैसे' में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रासअलंकार (ख) उपमाअलंकार

(ग) रूपकअलंकार (घ) उत्प्रेक्षाअलंकार

2 –कविता में नीला शंख किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) सुबह केआकाश के लिए (ख) रात केआकाश के लिए

(ग) दिन के आकाश के लिए (घ) शाम के आकाश केलिए

3 – कविता में नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(क) नीले आकाश में आते चाँद के लिए (ख) नीलेआकाश में आते सूरज के लिए

(ग) नीले आकाश में आते बादल के लिए (घ) नीलेआकाश में आते सितारों के लिए

4- राख से लीपा हुआ चौका किसके के लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) रात के नभ केलिए (ख) शाम के नभ के लिए

(ग) भोर के नभ केलिए (घ) दोपहर के नभ के लिए

5 – कवि ने अँधेरे व सूरज की लालिमा की तुलना किससे की है?

(क) काली सिल को अँधेरे के समान तथा सूरज की लालिमा को केसर के समान

(ख) अँधेरे को काली स्लेट के समान व सुबह की लालिमा को लाल खड़िया मिट्टी के समान

(ग) केवल (ख) (घ) (क) और (ख) दोनों

6 – कविता में नीले आकाश की तुलना किससे की गई है?

(क) तालाब के जल से (ख) नदी के जल से

(ग) नीले जल से (घ) नीले समुद्रसे

7 – उषा का जादू कब टूटता हैं?

(क) सूर्य केअस्त होते ही (ख) सूर्य के उदय से पहले ही

(ग) सूर्य के उदय होते ही (घ) उपरोक्त सभी

8 – उषा कविता किसका गतिशील चित्र है?

(क) शहर की सुबह का (ख) गांव की सुबह का

(ग) गांव की शाम का (घ) गांव की उषा का

9 – भोर से क्या आशय है?

(क) सवेरे का समय (ख) शाम से ठीक पहले का समय

(ग) सवेरे से ठीक पहले का समय (घ) सवेरे से ठीक बाद का समय

10 – उषाकाल में हो रहे परिवर्तनों को कवि ने किस के माध्यम से दिखाया है?

(क) ग्रामीण उदाहरणों के माध्यम से (ख) ग्रामीण दृष्टिकोण के माध्यम से

(ग) ग्रामीण उपमानों के माध्यम से (घ) उपरोक्तसभी

उत्तर -1.ख, 2. क, 3. ख, 4. ग, 5. घ, 6. ग, 7. ग, 8. ख, 9. ग, 10.ग

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1. शमशेर की कविता 'उषा' गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है पुष्टि कीजिए।?

उत्तर - कविता में नीले नभ को राख से लीपे गीले चौके के समान बताया गया है।दूसरे बिम्ब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है।तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है।लीपा हुआ आँगन काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं। प्रातःकालीन सौंदर्य क्रमशः विकसित होता है।
सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास देता है और पौ फटने के समय आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल खाता है। उसके पश्चात निकला सूर्य लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना सटीक उपमान है तथा सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत करता है

2 .भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभीगीलापड़ाहै)

नयी कविता में कोष्ठक, विराम- चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता हैं ।उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठकों से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ? समझाइए ।

उत्तर - कविता में नए-नए प्रयोगों से स्वयं को अन्य कवियों से अलग दिखाने कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए अथवा अपनी बात को अच्छे से स्पष्ट करने के लिए कविता में नए कवियों द्वारा विराम चिह्नों, पंक्तियों के बीच का स्थान और कोष्ठक आदि का प्रयोग किया जाता है।कोष्ठकों में दी गई सामग्री मुख्य सामग्री से संबंधित होती है तथा वह कवि के कथन को स्पष्टता प्रदान करती है।उपरोक्त पंक्तियों में (अभीगीलापड़ाहै) वाक्य कोष्ठक में दिया गया है जो भोर के वातावरण की नमी को, राख से लीपे हुए गीले चौके की नमी और उसकी

पवित्रता से जोड़ता है । कहने का अभिप्राय यह है कि कोष्ठक से पहले के वाक्य से काम की पूर्णता का पता तो चल जाता है, परंतु कभी-कभी स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाती । कोष्ठक में कथन अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

3.शमशेर 'की कविता 'उषा' गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है । पुष्टि कीजिए।

उत्तर -कविता में नीले नभ को राख से लीपे गीले चौके के समान बताया गया है। दूसरे बिम्ब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है । तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है।लीपा हुआ आँगन काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं। प्रातःकालीन सौंदर्य क्रमशः विकसित होता है।

सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास देता है और पौ फटने के समय आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल खाता है।उसके पश्चात तनिक लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना सटीक उपमान है तथा सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत करता है।

धीरे -धीरे लालिमा भी समाप्त हो जाती है और सुबह का नीला आकाश नीलजल का आभास देता है व सूर्य की स्वर्णिम आभा गौर वर्णी देह के नीलजल में नहाकर निकलने की उपमा को सार्थक सिद्ध करती है।ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं । जिससे सुबह का यह दृश्य जीवंत हो उठा है।

4.जादू टूटता है इस उषा का अब 'उषा का जादू क्या है ? वह कैसे टूटता है?

उत्तर- सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है।भोर के समय सूर्य की किरणें जादू के समान लगती है।इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है ।यह उषा का जादू है । नीले आकाश का शंख –सा पवित्र होना ,काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना,नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिम्ब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं ।सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते हैं।

5.भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका 'की संज्ञा दी गई है। क्यों ? उषा कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर -कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमी युक्त व धुँधला होता है । राख से लीपा हुआ चौका भी मटमैला रंग का होता है । दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है । इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

6.उषा 'कविता में कौन-कौन-से उपमानों का उल्लेख हुआ है?

उत्तर 'उषा' -कविता में प्रयुक्त उपमान इसप्रकार हैं -

नीला शंख –सुबह के आकाश के लिए।

राख से लीपा हुआ चौका -भोर के नभ के लिए।

काली सिल -अँधेरे से युक्त आसमान।

स्लेट पर लाल खड़िया चाक -भोर से नमी युक्त वातावरण में उगते सूरज की लालिमा के लिए।

नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह -नीले आकाश में उगता सूरज।

7. 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किस से की गई है और क्यों ?

उत्तर- उषा कविता में प्रातःकालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की है।इस समय आकाश नरम एवं धुँधला होता है ।इस का रंग राख से लीपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है।जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ़ हो जाता है उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

बादल राग

कवि का नाम –सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

केंद्रीय भाव -' बादल राग ' कविता 'अनामिका' काव्य से ली गई है। निराला को वर्षा ऋतु अधिक आकृष्ट करती है, क्योंकि बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत एक साथ समाहित है। बादल किसान के लिए उल्लास और निर्माण का अग्रदूत है तो मजदूर के संदर्भ में क्रांति और बदलाव। 'बादल राग' निराला जी की प्रसिद्ध कविता है।

वे बादलों को क्रांतिदूत मानते हैं। बादल शोषित वर्ग के हितैषी हैं, जिन्हें देखकर पूँजीपति वर्ग भयभीत होता है। बादलों की क्रांति का लाभ दबे-कुचले लोगों को मिलता है, इसलिए किसान और उसके खेतों में बड़े-छोटे पौधे बादलों को हाथ हिला-हिलाकर बुलाते हैं। वास्तव में समाज में क्रांति की आवश्यकता है, जिससे आर्थिक विषमता मिटे। कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक माना है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठितकाव्यांश 1 –

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल

फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदयथाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर।

1. कवि ने बादल को क्या कहा ?

(क) सामाजिक क्रान्ति का प्रतीक (ख) आर्थिक क्रान्ति का प्रतीक

(ग) राजनीतिक क्रान्ति का प्रतीक (घ) नैतिक क्रान्ति का प्रतीक ।

2. मनुष्य के जीवन में किस छाया का आवागमन लगा रहता है?

(क) सुख-समृद्धि की छाया (ख) सुख व दुःख की छाया

(ग) दुःख-दर्द की छाया (घ) गरीबी व दरिद्रता की छाया

3. कवि ने बादल को क्रान्ति का प्रतीक क्यों माना है?

(क) बादल वर्षा करते हैं (ख) बादलों के कारण गर्मी नहीं सताती

(ग) बादल आपस में टकराते रहते हैं (घ) बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत ।

4. क्रान्ति से या विनाश से कौन सबसे अधिक प्रभावित होते हैं? 1

(क) गरीब वर्ग (ख) पूँजीपति वर्ग

(ग) मध्यम वर्ग (घ) दलित वर्ग।

5. 'बादल राग' कविता के रचयिता हैं-

(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (ख) गजानजन माधव मुक्तिबोध

(ग) तुलसीदास (घ) कुँवर नारायण।

उत्तर : 1. क, 2. ख, 3. घ, 4. ख, 5.

पठित काव्यांश 2 -

अट्टालिका नहीं है रे
आंतक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल !
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!

चूस लिया हैं उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

1. क्रान्ति के विप्लवकारी बादलों को देखकर कौन प्रसन्न होता है?

(क) बड़े पेड़ (ख) पर्वत (ग) छोटे पौधे (घ) झाड़ियाँ।

2. समाज का साधनहीन वर्ग कब प्रसन्न होता है?

(क) जब समाज में क्रान्ति के स्वर का उद्घोष होता है

(ख) जब साधनहीन वर्ग को मकान मिलते हैं

(ग) जब साधनहीन वर्ग को भरपेट भोजन मिलता है

(घ) जब साधनहीन वर्ग को विलासिता पूर्ण जीवन मिलता है।

3. पूँजीपति किसका शोषण कर रहे हैं?

(क) अमीर लोगों का (ख) मध्यम वर्गीय लोगों का

(ग) जन-सामान्य का, किसान का (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

4.धनिक वर्ग ने किसान की क्या हालत कर दी है?

(क) किसान का शोषण करके शरीर की सारी शक्ति छीन ली है

(ख) उसका शरीर टूट गया है

(ग) वह हड्डियों का ढाँचा बनकर रह गया है। (घ) उपर्युक्त सभी।

5.कवि ने काव्यांश में किसका सजीव चित्रण किया है?

(क) आर्थिक असमानता का (ख) सामाजिक विषमता का

(ग) जीवन की खुशहाली का (घ) धार्मिक समानता का।

उत्तर : 1.ग, 2.क, 3. ग, 4.घ, 5. ख

कथन-कारण पर आधारित प्रश्न

1.अभिकथन: (A) क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है।

कारण: (R) क्रांति से छोटों को बहुत लाभ मिलता है।

(क) अभिकथन(A) सही है जबकि कारण (R) गलत है।

(ख) अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण (R) सही है।

(ग) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैंतथा R, A की व्याख्या करता है।

(घ) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैं तथाR,A की व्याख्या नहीं करता है।

2.अभिकथन: (A): रण-तरी का अर्थ युद्ध रूपी नौका से है।

कारण: (R): रण-तरी में मानवीकरण अलंकार है।

(क) अभिकथन(A) सही है जबकि कारण (R) गलत है।

(ख) अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है।

(ग) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।

(घ) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैं तथाR,A की व्याख्या नहीं करता है।

3.अभिकथन: (A) अट्टालिकाओं को आतंक भवन कहा गया है।।

कारण: (R) धनी शोषक वर्ग अपनी विलासिता के बीच भी आतंकित है।

(क) अभिकथन(A) सही है जबकि कारण (R) गलत है।

(ख) अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण (R) सही है।

(ग) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैं तथाR, A की व्याख्या करता है।

(घ) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैतथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

4.अभिकथन:(A) बादल-राग कविता बादलों को संबोधित है।

कारण:(R) बादलों को क्रांति का प्रतीक माना गया है।

(क) अभिकथन(A) सही है जबकि कारण (R) गलत है।

(ख) अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है।

(ग) अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।

(घ) अभिकथन(A) औरकारण(R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

उत्तर : 1. ग, 2. क, 3. ग, 4. ग

कवितापर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1: 'बादल राग' जीवन-निर्माण के नए राग का सूचक है। " स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' कविता में कवि ने लघु-मानव की खुशहाली का राग गाया है। वह आम व्यक्ति के लिए बादल का आहवान क्रांति के रूप में करता है। किसानों तथा मजदूरों की आकांक्षाएँ बादल को नव-निर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं। क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है। बादलों के अंग-अंग में बिजलियाँ सोई हैं, वज्रपात से शरीर आहत होने पर भी वे हिम्मत नहीं हारते। गरमी से हर तरफ सब कुछ रूखा-सूखा और मुरझाया-सा है। धरती के भीतर सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करके बादल की ओर देख रहे हैं। क्रांति जो हरियाली लाएगी, उससे सबसे अधिक उत्फुल्ल नए पौधे, छोटे बच्चे ही होंगे।

2: 'बादल राग' शीर्षिक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' क्रांति की आवाज का परिचायक है। यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है। कविता में बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं, उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं। कवि बादलों का बारिश करने या क्रांति करने के लिए करता है। यह शीर्षक उद्देश्य के अनुरूप है। अत:यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

3: 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में 'दुख की छाया' किसे कहा गया हैं और क्यों?

उत्तर - कवि ने 'दुख की छाया' मानव-जीवन में आने वाले दुखों और कष्टों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सुख कभी स्थायी नहीं होता। उसके साथ-साथ दुख का प्रभाव रहता है। धनी शोषण करके अकूत संपत्ति जमा करता है परंतु उसे सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सब कुछ छिनने के डर से भयभीत रहता है।

4:'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया है ?

उत्तर - इस पंक्ति में कवि ने पूँजीपति या शोषक या धनिक वर्ग की ओर संकेत किया है। 'बिजली गिरना' का तात्पर्य क्रांति से है। क्रांति से जो विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग है, उसकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है और वह उन्नति के शिखर से गिर जाता हैं। उसका गर्व चूर-चूर हो जाता है।

5:क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उनका मुख ढँकना किस मानसिकता का द्योतक है?

उत्तर - शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी शांति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँकना उसकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से शोषक वर्ग भयभीत है।

6: वज्रपात करने वाले भीषण बादलों का छोटे पौधे कैसे आह्वान करते हैं और क्यों ?

उत्तर - वज्रपात करने वाले भीषण बादलों का आह्वान छोटे पौधे हिल-हिलकर, खिल-खिलकर तथा हाथ हिलाकर करते हैं क्योंकि क्रांति से ही उन्हें न्याय मिलने की आशा होती है। उन्हें ही सर्वाधिक लाभ पहुँचता है।

7: 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर'किसे कहा गया हैं और क्यों?

उत्तर -'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' बादल को कहा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति आने से बुराई रूपी कीचड़ समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती है।

8: आशय स्पष्ट कीजिए-' विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते '।

उत्तर - इसका आशय यह है कि क्रांति से शोषक वर्ग हिल जाता है। उसे इससे अपना विनाश दिखाई देता है। किसान-मजदूर वर्ग अर्थात शोषित वर्ग क्रांति से प्रसन्न होता है। क्योंकि उन्हें इससे शोषण से मुक्ति तथा खोया अधिकार मिलता है।

9: . विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की कौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर-कवि ने विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं

(i) यह समीर-सागर में तैरती है।

(ii) यह भेरी-गर्जन से सजग है।

(iii) इसमें ऊँची आकांक्षाएँ भरी हुई हैं।

10:'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन क्यों कहा गया है?

उत्तर -'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं। ये ऊँचे-ऊँचे भवन शोषण से लूटी गई संपत्ति के केंद्र होते हैं।

11:'बादल राग ' कविता में कवि निराला की किस क्रांतिकारी विचारधारा का पता चलता हैं?

उत्तर-'बादल राग' कविता में कवि की क्रांतिकारी विचारधारा का ज्ञान होता है। वह समाज में व्याप्त पूँजीवाद का घोर विरोध करता हुआ दलित-शोषित वर्ग के कल्याण की कामना करता हुआ, उन्हें समाज में उचित स्थान

दिलाना चाहता है। कवि ने बादलों की गर्जना, बिजली की कड़क को जनक्रांति का रूप बताया है। इस जनक्रांति में धनी वर्ग का पतन होता है और छोटे वर्ग-मजदूर, गरीब, शोषित आदि-उन्नति करते हैं।

कवितावली (उत्तर कांड से)

कवि का नाम -गोस्वामी तुलसीदास

केन्द्रीय भाव:- अपने काव्य में लोक मंगल की साधना को सर्वाधिक महत्व देने वाले प्रसिद्ध कवि गोस्वामी तुलसी दास ने प्रस्तुत छंदों में युगीन विसंगतियों का चित्रण किया है। विविध विषमताओं से ग्रस्त कलिकाल तुलसी का युगीन यथार्थ है, जिससे वे कृपालू प्रभु राम व रामराज्य का स्वप्न रचते है। युग और उसमे अपने जीवन का न सिर्फ उन्हें गहरा बोध है, बल्कि इसमें उसकी अभिव्यक्ति में भी वे अपने समकालीन कवियों से आगे है। यहाँ प्रस्तुत कवितावली के दो कवित्त और एक सवैया इसके प्रमाण स्वरूप है। पहले कवित्त में उन्होंने दिखलाया है कि संसार के अच्छे बुरे समस्त लीला प्रपंचो का आधार'पेट की आग' का दारुण(भयंकर)व गहन यथार्थ है, जिसका समाधान(हल) वे राम रूपी घनश्याम (बादल) के कृपा जल में देखते है। इस प्रकार उनकी राम भक्ति पेट की आग बुझाने वाली यानी जीवन के यथार्थ सकटों का समाधान करने वाली है, साथ ही जीवन के बाहरी क्षेत्र में आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली है। दूसरे छंद में प्रकृति और शासन की विषमता से उपजी बेकारी व गरीबी की पीड़ा का यथार्थपरक चित्रण करते हुए उसे दशानन (रावण) से तुलना करते है। तीसरे छंद(सवैया)भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्त हृदय के आत्म विश्वास का सजीव चित्रण है, जिसमे समाज में व्याप्त जात-पात और धर्म के विभेदक दुराग्रहों के तिरस्कार का साहस पैदा होता है।

भावार्थ (प्रथम कवित्त):-

अपने युग की भयंकर आर्थिक विषमता एवं मजबूरी का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि अपना पेट भरने के लिए कोई मजदूरी करता है, किसान खेती करता है, कोई व्यापार करता है, कोई भिक्षा माँगता है। चारण, चंचल नट, चोर दूत और बाजीगर सब इसी काम के लिए मेहनत करते हैं | सब पेट की भूख शांत करने के लिए अनेक उपाय करते, पर्वतों पर चढ़ते तथा शिकार की खोज में दुर्गम वनों में विचरण करते रहते हैं। सब लोग पेट के लिए हो ऊँचे नीचे कर्म तया धर्म अधर्म करते हैं। यहाँ तक कि लोग अपने पेट की आग को बुझाने के लिए बेटा – बेटी तक भी बेच देते हैं। तुलसी दास जी कहते हैं कि यह जो पेट की आग बडवागिनी अर्थात समुद्र को अग्नि से भी भयंकर हो गई है, इसका शमन वह राम रूपी कृपा जल में देखते हैं। अर्थात जब राम कृपा रूपी घनश्याम (बादल) की बारिश होगी, तभी ये आग बुझेगी।

भावार्थ (द्वितीय कवित्त)- अपने युग की बेरोजगारी और लाचारी का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी कहते है कि आज किसान को खेती नही, भिखारी को भीख नही, राजा को लगान नहीं, व्यापारी को व्यापार नहीं, नौकर को नौकरी नही नसीब हो रही है। बेकारी और बेरोजगारी इस कदर समाज में व्यापत हो गयी है कि जीविका विहीन लोग लाचार होकर एक दूसरे से अपनी व्यथा कहते हैं कि कहाँ जाया जाये,क्या किया जाए,वेद पुराण और लोक (संसार) में यह बात प्रचलित है कि जब-जब मानवता पर संकट पड़ा है तब-तब हे प्रभुराम ! आपने अपनी कृपा दृष्टि दिखाई है यानी उनके संकटों को दूर किया है। हे दीनबंधु ! अर्थात गरीबो के भाई राम आज गरीबी रुपी रावण संसार को बहुत कष्ट दे रहा है। इस प्रकार तीव्र गति से संसार को जलता हुआ देखकर तुलसीदास हाहाकार मचाते हैं और बचाने की गुहार लगाते हैं।

भावार्थ (सवैया)- प्रस्तुत सवैये में गोस्वामी तुलसी दास लोगो की आलोचना और निंदा को ठोकर मारते हुए कहते हैं कि मुझे कोई धोखेबाज या मक्कार या अवधूत (योगी या संन्यासी) राजपूत या जुलाहा कहे। मुझसे

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे किसी की बेटी से अपना बेटा नही ब्याहना है कि जिससे उसकी जाति बिगड़ जायेगी।मैं तो राम नाम के गुलाम के रूप में प्रसिद्ध हूँ। जिसको जो अच्छा लगे वो कहे मुझे। मैं मांग के खा लूँगा और मस्जिद में सो जाऊंगा न किसी से एक लेना है न दो देना है। अर्थात उनका दुनिया से कोई सरोकार नही है।

काव्याशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न एवं उनके उत्तरः-

1. किसबी, किसान कुल ,बनिक भिखारी,भाट,
चाकर,चपल नट, चोर चार, चेटकी
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढत गिरि,
अटत गहन - गन अहन अखेटकी,
ऊँचे नीचे धर्म अधर्म करि
पेट ही को पचत, बेचत बेटा बेटकी।
तुलसी' बुझाई एक राम घनश्याम ही ते,
आगि बडवागिते बड़ी है आगि पेट की ।।

(क) पेट भरने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं ?

i.)दर-दर को ठोकरे खाते है
ii.)धर्मअधर्म केअनेक कार्य करतेहैं
iii.) उचित- अनुचितकुछभीकार्यकरतेहैं।
iv.) उपरोक्तसभी।

उत्तर- उपरोक्त सभी

(ख) कवि ने पेट की आग को किससे बड़ी बताया है?

(i) समुद्र की आग से (ii)खेत की आग से (iii) जंगल की आग से iv) लोभ की आग से

उत्तर- समुद्र की आग से ।

(ग़)संसार में सभी लोग काम क्यों करते हैं ?

i) प्रभु कों प्रसन्न करने के लिए ii) समय व्यतीत करने के लिए
iii) आनंद प्राप्त करने के लिए iv) पेट भरने के लिए

उतरः-(iv) पेट भरने के लिए |

घ)' तुलसी'बुझाई एक राम घनश्याम ही ते,
आगी बडवगिते बड़ी आगि पेट की ।।
उपर्युक्त पक्तियों में कौन - सा अलंकार है?
i)अनुप्रास ii) मानवीकरण iii) सांगरूपक iv) उपमा

उत्तर iii) सांगरूपक अलंकार

(क)निम्नलिखित कथन (A) कारण (R) को ध्यान पूर्वक पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए
कथन: (A) मनुष्य पेट की अग्नि को शांत करने के लिए दर-दर भटकता है।
कारण: (R) इस पेटकी शाम को राम रूपी घनश्याम ही बुझा सकता है |

(i) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही है, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नही करता।

(ii) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है।

(iiii) कारण(R) सही है, किन्तु कथन (R) सही नहीं है।

(iv) कथन (A) तथा कारण (R) दोनो सही है। कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर- (IV) कथन (A) कारण (R) दोनो सही है। कारण, कान की सही व्याख्या करता है।

②खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,बलि
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहे एक एकन सों 'कहाँ जाई का करी?'
दारिद- दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी ||

(क)दारिद- दसानन में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(i)उत्प्रेक्षा (ii) रूपक (iii) उपमा (iv) मानवीकरण
उत्तर (ii) रूपक अलंकार ।
(ख) गोस्वामी तुलसीदास ने दरिद्रता (गरीबी) की तुलना किससे की है?
(i) बेरोजगारी से (ii) आँधी-तूफान से (iii) रावण से (iv) समुद्र से
उत्तर- (iii) रावण से |
(ग)निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्प में से सही उत्तर चुनिए
कथन: (A) वेद पुराण और लोक में कहा गया है कि मानवता पर संकट आता है।
कारण: (R) मानवता पर संकट आने ईश्वर उसको दूर करते हैं।
(i) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।
(ii)कथन (A) और कारण (R) वो तो सही है। कारण (R) कथन (A) की व्याख्या करता है।
(iii) कारण (R) सही है। कथन (A) गलत है।
(IV) कथन (A) और कारण (R) दोनो सही है। कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नही करता है।
उत्तर- (i) कथन (A) और कारण (R) दोनो सही है। कारण (R) कथन(A) की सही-व्याख्या करता है।

(घ) उपर्युक्त पद्यांश में तुलसीदास ने तत्कालीन समाज में व्याप्त किस समस्या को उजागर किया है?
(i) सामाजिक भेद भाव व अंध विश्वास को।
(ii) जात-पात और ऊँच-नीच की।
(iii) भयंकर गरीबी और बेरोजगारी की।
(iv) अनैतिकता और भ्रष्टाचार की।
उत्तर-(1) भयंकर गरीबी और बरोजगारी की।
(ङ)आजीविका विहीन लोग लाचार होकर एक-दूसरे से क्या करते हैं?
(i) हम धन कैसे पाएँ ? (ii) हम सबको चोरी करना चाहिए।
(iii) हमें राजा के पास जाना चाहिए। (iv) हम कहाँ जाए और क्या करें।

उत्तर- (iv) हम कहाँ जाए और क्या करें |

परीक्षोपयोगी प्रश्न (3 अंक केप्रश्न)

प्रश्न-(1))धूत कहौ, अवधूत कहौ . 'सवैया में तुलसीदास का स्वाभिमान प्रतिबिम्बित होता है। इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास विषाद ग्रस्त समाज से संघर्ष करते हुए दिखाई पड़ते हैं। वे हर प्रकार से विभाजन कारी शक्तियों से टकराते हैं। तुलसीदास सही अर्थो में समन्वयकारी तथा मानवतावादी रचनाकार है। वे धूत अवधूत, राजपूत जुलाहा जैसे सामाजिक विभाजन को अनर्थकारी मानते हैं। उन्होने समाज में अपनी स्थिति देखी थी। एक ब्राह्मण होते हुए भी उन्हें सामाजिक अपवादों से दो चार होना पड़ा था। सामाजिक यथार्थ यही था कि समाज का विभाजन प्रायः आर्थिक आधार पर निर्धारित हो गया था तथा धन एवं प्रभुत्व रखने वाले लोग ही सामाजिक मान्यताओं के निर्माता तथा नियंत्रक होते थे। ऐसे तुलसी मांग कर खाने और मस्जिद में सोने जैसी बात कर उक्त सामाजिक व्यवस्था को दो टूक जबाब देते हैं, किंतु अंतत: तुलसी दास भक्त शिरोमणि हैं। तुलसी को भक्ति ही उनकी अंतः चेतना को बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय बनाती है।

प्रश्न (2) कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर-तुलसीदास मानवीय संवेदना के कवि है। उन्होने युगीन चेतना का सुन्दर वर्णन अपनी रचना कवितावली में किया है। संत होते हुए भी उन्हें अपने युग की समस्याओं की अच्छी समझ थी। जनता की पीड़ा से भली भांति परिचित थे। उन्हे समाज में व्याप्त गरीबी, बेकारी तथा भुखमरी का ज्ञान था। किसान, मजदूर व्यापारी इत्यादि वर्गो की जीविका के हास को कवि ने नजदीक से देखा था, जिसके कारण उनके काव्य में भयंकर बेकारी तथा भुखमरी का चित्रण उभर कर सामने आया । पेट की आग का प्रभाव प्रत्येक वर्ग के लोगों पर था। काम न मिलने, पेट न भरने की विवशता में लोग ऊँचे नीचे कर्म धर्म- अधर्म कर रहे थे। अतः उपयुक्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि उन्हें अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

प्रश्न (3) पेट की आग का शमन ईश्वर भक्ति रूपी मेघ ही कर सकता है तुलसी का यह काव्य सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है? तर्क संगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- तुलसीदास ने 'कवितावली' के एक पद में माना है कि पेट की आग रामभक्ति रूपी मेघ (बादल) ही बुझा सकते हैं। कवि का मानना है कि कर्मफल ईश्वर के अधीन है। ईश्वर को पेट की आग का शमन करने वाला बताना सिर्फ आस्था का विषय है। बिना कर्म के किसी फल की प्राप्ति संभव नही है। ईश्वर को पेट की आग बुझाने वाला मानना न तो तुलसी का युग सत्य था और न आज का युग सत्य है। जो मनुष्य परिश्रम करता है, वह आगे बढ़ता है | वर्तमान आर्थिक युग में ईश्वर कृपा की जगह परिश्रम को महत्व दिया जाता हे |

परीक्षोपयोगी प्रश्न (2 अंक वाले)

प्रश्न 1. तुलसी दास ने पेट की आग को शांत करने के लिए क्या उपाय बताया है?

उत्तर- तुलसी दास ने पेट की आग को शांत करने के लिए श्री राम की शरण में जाने का उपाय बताया है। उनके अनुसार राम रूपी घनश्याम यानी बादल के बरसने पर इस पेट रूपी बडवाग्नि का शमन होगा।

प्रश्न 2. तुलसी दास ने पेट की आग को समुद्र की आग से भी भयंकर क्यों कहा है?

उत्तर- तुलसीदास ने पेट को आग को समुद्र की आग से भयंकार इस लिए कहा है कि समुंद्र की आग तो बुझ जाती है, मगर पेट की आग मनुष्य के विवेक को नष्ट कर देती है वह कभी बुझती नहीं है। भूखा व्यक्ती भूख मिटाने के लिए धर्म-अधर्म सब कर बैठता है। यहाँ तक कि इसके लिए अपने बेटा- बेटी तक को भी बेच देता है।

प्रश्न 3. कवितावली के कवित्त के आधार पर बताइये कि राम के बारे में वेद पुराण और लोक में क्या अवधारणा प्रचलित है?

उत्तर- कवितावली के कवित्त में वर्णित पंक्तियो के आधार पर राम (ईश्वर) के बारे में यह अवधारणा प्रचलित है कि जब-जब मानवता या संसार पर संकट आता है। तब-तब राम (ईश्वर) अवतार लेकर उनके कष्टों का संहार करते है। अपने भक्तों पर कृपा दृष्टि दिखाते हैं।

लक्ष्मण मूर्छा और राम का विलाप

केंद्रीय भाव - रामचरितमानस' के लंका कांड से गृहीत लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने का प्रसंग कवि कीमार्मिक स्थलों की पहचान का एक श्रेष्ठ नमूना है। भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे-धीरेप्रलाप में बदल जाता है, जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसाअनावृत हो जाते हैं। यह प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण कर देता है, जिससे पाठकका काव्य-मर्म से सीधे जुड़ाव हो जाता है और वह भक्त तुलसी के भीतर से कवि तुलसी के उभरआने और पूरे प्रसंग पर उसके छा जाने की अनुभूति करता है। इस घने शोक-परिवेश में हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना कवि को करुण रस के बीच वीर रस के उदय के रूप में दिखता है। यहउपमा अद्‌भुत है और काव्यगत करुण-प्रसंग को जीवन के मंगल-विकास की ओर ले जाती है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित पद्यांश :-

उहाँ राम लछिमनहि निहारी | बोले बचन मनुज अनुसारी ||
अर्धराति गइ कपि नहि आयउ | राम उठाइ अनुज उर लायउ ||
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ | बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ||
मम हित लागि तजेऊ पितु-माता | सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ||
सो अनुराग कहाँ अब भाई| उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ||

1. बोले बचन मनुज अनुसारी का अभिप्राय है-

(क) मनुष्यों द्वारा बोले जाने योग्य वचन (ख) मनुष्यों द्वारा अनुसरण करने योग्य वचन
(ग) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन (घ) मानव सुलभ गुणों से युक्त वचन

2. सकहु न दुखित --------मृदुल सुभाऊ चौपाई के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँहैं-

(क) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी (ख) मृदुल, आज्ञाकारी, कोमलचित्त
(ग) कोमल, स्नेही, आज्ञाकारी (घ) कोमल,उदार, सहनशील

3. 'सो अनुराग कहाँ अब भाई' पंक्ति द्वारा राम लक्ष्मण के हृदय में विद्यमान किस भाव की ओर संकेत कर रहे हैं-

(क) बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव

(ख) सबके प्रति हृदय में विद्यमान कोमलता का भाव

(ग) बड़े भाई के प्रति कर्तव्य पालन का भाव

(घ) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

4. लक्ष्मण के हृदय में राम के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करने वाली पंक्ति है-

(क) अर्धरात्रि गइ कपि नहि आयउ | राम उठाइ-----

(ख) सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ | बंधु सदा ------

(ग) मम हित लागि तजेउ पितु माता | सहेहु बिपिन ----

(घ) सो अनुराग कहाँ अब भाई | उठहु न सुनि -----

5. काव्यांश का केन्द्रीय भाव है-

(क) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना |

(ख) दुःख की स्थिति और दुःख के प्रभाव का वर्णन करना |

(ग) राम के निर्मल और उदात्त चरित्र का वर्णन करना |

(घ) लक्ष्मण द्वारा राम के लिए किए गए त्याग का वर्णन करना |

उत्तर (1) ग, (2) क, (3)घ, (4) ग, (5) क

पठित पद्यांश-2

जथा पंख बिनु खगअति दीना| मनि बिनु फनि करिबर कर हीना||
अस मम जिवन बंधु बिन तोही | जौं जड़ दैव जियावै मोही ||
जैहऊँ अवध कवन मुहुँ लाई | नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई ||
बरु अपजस सहतेउँ जगमाहीं| नारि हानि बिसेष क्षति नाहीं||

1.भाई के बिना जीवन की तुलना किससे की गई है ?

(क)पंखों के बिना पक्षी से (ख) मणि के बिना साँप से (ग) सूंड के बिना हाथी से (घ) ये सभी

2.राम के वचनों को आप क्या कहेंगे?

(क) विलाप (ख)स्वभाव (ग) करुणा (घ) दुविधापूर्ण

3. 'तुमने पत्नी के लिए प्रिय भाई को गँवा दिया' - यह आरोप किसने किस पर लगाया ?

(क) तुलसी ने राम पर (ख) राम ने स्वयं को कोसते हुए

(ग) लक्ष्मण ने राम पर (घ) सीता ने राम पर

4 'नारि हानि बिसेष क्षति नाहीं' पंक्ति में कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?

(क) भाई के वियोग से उत्पन्न कष्ट का (ख) पत्नी के वियोग से उत्पन्न कष्ट का

(ग) प्रेम की समाप्ति का (घ) हर्ष का

5. अलंकार बताइए-

"जथा पंख बिनु खगअतिदीना| मनि बिनु फनि करिबर करहीना"

(क) उपमा (ख) उदाहरण (ग) उत्प्रेक्षा (घ) रूपक

उत्तर : (1)घ (2) क (3) ख (4) क (5) ग

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1.'तव प्रताप उर राखि प्रभु में किस के प्रताप का उल्लेख किया गया है?'और क्यों ?

उत्तर:-इन पँक्तियों में भरत के प्रताप का उल्लेख किया गया है।हनुमान जी उनके प्रताप का स्मरण करते हुए अयोध्या के ऊपर से उड़ते हुए संजीवनी लेकर लंका की ओर चले जा रहे हैं।

2.राम विलाप में लक्ष्मण की कौन- सी विशेषताएँ उद्घटित हुई हैं ?

उत्तर:- लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, त्यागमय जीवन इन पँक्तियों के माध्यम से उद्घाटित हुआ है ।

3.बोले वचन मनुजअनुसारी से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:-भगवान राम एक साधारण मनुष्य की तरह विलाप कर रहे हैं किसी अवतारी मनुष्य की तरह नहीं।भ्रातृप्रेम का चित्रण किया गया है।तुलसीदास की मानवीय भावों पर सशक्त पकड़ है।दैवीय व्यक्तित्व का लीलारूप ईश्वर राम को मानवीय भावों से समन्वित कर देता है।

4.भाई के प्रति राम के प्रेम की प्रगाढ़ता उनके किन विचारों से व्यक्त हुई है?

उत्तर:- जथा पंख बिन खग अति दीना।मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधुबिनु तोही।जो जड़ दैव जिआवै मोही।

5.'बहुविधि सोचत सोच विमोचन' का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- दीन जन को शोक से मुक्त करने वाले भगवान राम स्वयं बहुत प्रकार से सोच में पड़कर दुखी हो रहे हैं।

6.हनुमान काआगमन करुणा में वीर रस काआना किस प्रकार कहा जा सकता है?

उत्तर:- रुदन करते वानर समाज में हनुमान उत्साह का संचार करने वाले वीर रस के रूप में आ गए।करुणा की नदी हनुमान द्वारा संजीवनी ले आने पर मंगलमयी हो उठती है।

7.राम ने लक्ष्मण के किन गुणों का वर्णन किया है?

उत्तर:- राम ने लक्ष्मण के इन गुणों का वर्णन किया है-

- लक्ष्मण राम से बहुत स्नेह करते हैं ।
- उन्होंने भाई के लिए अपने माता -पिता का भी त्याग कर दिया ।
- वे वन में वर्षा, हिम, धूप आदि कष्टों को सहन कर रहे हैं ।
- उनका स्वभाव बहुत मृदुल है ।वे भाई के दुःख को नहीं देख सकते ।

8. राम के अनुसार कौन सी वस्तुओं की हानि बड़ी हानि नहीं है और क्यों?

उत्तर:- राम के अनुसार धन ,पुत्र एवं नारी की हानि बड़ी हानि नहीं है क्योंकि ये सब खो जाने पर पुन: प्राप्त किये जा सकते हैं पर एक बार सगे भाई के खो जाने पर उसे पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता |

9. पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है? काव्य- प्रसंग में इनका उल्लेख क्यों किया गया है ?

उत्तर:-राम विलाप करते हुए अपनी भावी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी पीड़ित हो जाताहै ,उनका अस्तित्व नगण्य हो जाता है वैसा ही असहनीय कष्ट राम को लक्ष्मण के न होने से होगा |

रुबाइयाँ

कवि का नाम -फ़िराक गोरखपुरी

केंद्रीय भाव -फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत हैं । रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है।इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है । इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है।माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है ।वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है।वह उसे साफ़ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है।

बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं।चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं।वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है।आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है । माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है। रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं।सावन में रक्षाबंधन आता है।सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वहीं संबंध भाई का बहन से है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठितकाव्यांश 1 –

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

1 प्रस्तुत काव्यांश में किस पर्व का उल्लेख किया गया है?

(क) होली का (ख) छठ का (ग) रक्षाबंधन का (घ) तीज का

2 किसके लच्छे चमक रहे हैं?

(क) चादर के (ख) राखी के (ग) धागे के (घ) दुपट्टे के

3 रक्षाबंधन के अवसर पर बहन क्या करती है?

(क) भाई के रंग लगाती है। (ख) अपने पति को राखी बाँधती है।

(ग) अपने भाई को राखी बाँधती है। (घ) भाई से झगड़ा करती है।

4 'रुबाइयाँ' में 'गोदी में चाँद' से क्या आशय है?

(क) आसमान में निकलने वाला चाँद (ख) बादल (ग) माता (घ) बच्चा

5 राखी के लच्छे किस तरह चमक रहे हैं?

(क) बिजली की तरह (ख) चाँद की तरह (ग) सूरज की तरह (घ) दर्पण की तरह

उत्तर 1. ग, 2.ख, 3. ग, 4. घ, 5. क

पठित काव्यांश 2

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े।

(I) उपर्युक्त काव्यांश किस के द्वारा रचित है?

(क) फिराक गोरखपुरी (ख) निजाम गोरखपुरी

(ग) नजीर इलाहाबादी (घ) फिराक जलाली

(ii) उपर्युक्त पंक्तियों का काव्य-रूप क्या है?

(क) दोहा (ख) कवित्त (ग) रुबाई (घ) ग़ज़ल

(iii) आँगन में कौन खड़ी है?

(क) बच्चे की माँ (ख) हवा (ग) बच्चा (घ) लड़कियाँ

(iv) माँ क्या काम करती है?

(क) बच्चे को हाथों पर झुलाती है। (ख) बच्चे को नहलातीहै।

(ग) बच्चे के बालों में कंघी करती है। (घ) उपर्युक्त सभी

(v) 'छलके-छलके' में किस अलंकार का प्रयोग है?

(क)अनुप्रास (ख) पुनरूक्तिप्रकाश

(ग)उपमा (घ) रूपक

उत्तर. (I) क, (II) ग, (III) क, (IV) घ, (V) ख

कथन-कारण पर आधारित प्रश्न

आंगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती हैं उसे गोद-भरी

रह-रह के हवा में जो लोका देतीहै
गूँज उठती हैं खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

नहला के छलके-छलकेनिर्मलजलसे
उलझे हुए गेसुओं में कंघी
किस प्यार से देखता हैं बच्चा मुँह को
करके जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े।

1 निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को पढ़कर सही विकल्प चुने |

कथन: (A) माँ अपने बच्चों को हाथों के झूले में झूला रही है तथा बीच-बीच में वह उसे हवा में भी उछाल देता है |

कारण:(R) - काव्यांश में मां का वात्सल्य अपने चरम रूप में है मां अपने बच्चों के प्रेम में विह्वल है|

(क) कथन (A) सही है, कारण R) गलत है |

(ख) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है |

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता |

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है|

2 कथन: (A) काव्यांश में बच्चा मां को देखकर अत्यंत प्रसन्न है |

कारण: (R) मां बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाकर उसके बाल में कंघी करके तैयार कर देती है |

(क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है |

(ख) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है |

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता |

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर : 1. घ, 2. घ

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव प्रकट करना चाहता है ?

उत्तर- कवि ने राखी के लच्छों को बिजली की चमक के समान बताया है जिसके माध्यम से वह यह कहना चाहता है कि बहनें अपने भाइयों को कलाई सजाने के लिए रंग-बिरंगी राखी खरीदती हैं।इन राखियों को चुनते समय उनकी पसंद का विशेष ध्यान रखती हैं।

2.टिप्पणी करें-

(क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता। (ख) रक्षाबंधन का पर्व |

उत्तर- (क) गोदी का चाँद माँ को बहुत प्यारा लगता है।माँ अपने बच्चे को चाँद मानती है और उसे बेहद प्यार करती है।बच्चे को आकाश में खिला हुआ चाँद बहुत प्यारा लगता है।वह उसे खिलौना मानकर अपने हाथों में लेना चाहता है।

(ख) सावन की घटा और राखी के त्योहार में अटूट संबंध है । राखी का त्योहार सावन मास में आता है । इधर आकाश में जल से भीगे बादलों को घटाएँ छाई रहती हैं।उधर भाई-बहनों के मन में प्यार की घटा-सी उमड़ी रहती है।

3.फिराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-दिवाली की शाम है।घर का आंगन साफ- सुथरा और सजा- सवँरा है।मां अपने बच्चे को लिए चीनी मिट्टी के खिलौने से जाती है ।उन के बीच एक दीया भी जलाती है।बच्चा इससे प्रसन्न होता है। राखी का दिन है।आसमान में बादलों की घटा छाई हुई है । नन्ही गुड़िया पाजेब पहने रस की पुतली सी जान पड़ती है।वह प्रसन्नतापूर्वक भाई की कलाई पर राखी बाँधती है।

4. माँ बच्चे की, चाँद पाने की जिद को कैसे पूरा करती है?

उत्तर- बच्चे की जिद पर माँ उसे आईना थमाकर उसमें चाँद दिखाते हुए कह रही है कि देखो बेटे! चाँद आइने में उतर आया है। वास्तव में,छोटे बच्चे जब जिद करते हैं, तो जल्दी मानते नहीं। ऐसे में जब तक उनकी मनपसंद वस्तु उन्हें न मिल जाए,वे शांत नहीं होते।

5. रुबाई किसे कहते हैं?

उत्तर- उर्दू व फ़ारसी भाषा में रुबाई एक छंद की श्रेणी का काव्य है, जो काफ़िया या तुकबंदी पर आधारित है। इसमें पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में लयात्मकता होती है, काफिया मिलाया जाता है। तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

6. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर- शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यक्त करना चाहता है कि रक्षाबंधन का पावन पर्व सावन मास में आता है। सावन में आकाश में घटाएँ छाई रहती हैं। बिजली चमकती रहती है। इस प्रकार सावन का जो नाता झीनी घटा से है, घटा का जो नाता बिजली से है वही नाता भाई का बहन से है। सावन में जैसे आकाश में छाए बादलों में बिजली चमकती रहती है, उसी प्रकार रक्षाबंधन के पर्व पर राखी के लच्छे चमकते हैं।

7. 'फ़िराक' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- दीपावली की शाम है। घर का आँगन साफ़-सुथरा और सजा -सँवरा है। माँ अपने बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के खिलौने सजाती है और उसके बनाए घरौंदे में भी दीया जलाती है। उस समय उसके चेहरे पर प्रेम, खुशी और वात्सल्य के जो भाव हैं, ये सुंदर बिंब बनकर कविता में उभरे हैं।

8.फिराक की रुबाई के आधार पर माँ द्वारा बच्चे को खिलाने और प्रसन्न करने का दृश्य प्रस्तुत कीजिए-

उत्तर-यह दृश्य वात्सल्य रस से पूरी तरह परिपूर्ण है।माँ अपने बच्चे को चाँद का टुकड़ा मानती है।वह उसे अपनी गोदी में लिए हुई आंगन में खड़ी है।कभी उसे अपने हाथों पर झुलाती है तो कभी हवा में उछाल देती है।इस प्रकार बच्चे का यह वात्सल्य पूर्ण दृश्य मनोरम है।

9. माँ द्वारा बच्चे को नहला ने धुलाने का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-माँ अपने शिशु को साफ -स्वच्छ जल में नहलाती है।यह अपने हाथों से जल को उछाल-उछाल कर बच्चे पर डालती है। बाद में वह उस के हुए गीले बालों में कंघी करती है। कंघी के बाद जब वह बच्चे को थामकर

कपड़े पहनाती है तो बच्चा बड़े मधुर प्यार से माँ की और निहारता है ।इस तरह कवि ने माँ का अपने बच्चे के प्रति वात्सल्य भाव प्रकट किया है।

10. बालक द्वारा चाँद मांगने की जिद का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए-

उत्तर- कवि बच्चों के स्वभाविक जिद्द के भाव को प्रकट करते हैं । बालक आकाश में खिले चाँद को देखकर उसे पाना चाहता है । वह मानता है कि चांद भी एक खिलौना है।अतः वह जिद्द कर लेता है।माँ उसे बहलाने के लिए दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है।बच्चा प्रतिबिंब देखकर प्रसन्न हो उठता है।

11. 'रुबाइयाँ' के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

अथवा

फिराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के चित्रों को स्पष्ट कीजिए

उत्तर- दीवाली की शाम है । घर का आँगन साफ-सुथरा और सजा संवरा है। माँ अपने बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के खिलौने सजाती है।उनके बीच एक दीया भी जलाती है, बच्चा इससे प्रसन्न हो उठताहै।

राखी का दिन है आसमान में बादलों की घटा छाई हुई है नन्ही गुड़िया पाजेब पहने हुए पुतली-सी जान पड़ती है |वह प्रसन्नतापूर्वकभाई की कलाई में राखी बांध रहीहै।

'छोटा मेरा खेत'

कवि का नाम - उमा शंकर जोशी

केंद्रीय भाव- छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कागज़ को खेत के रूप में प्रस्तुत किया है । कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है । इस खेत में किसी आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है । कहने का तात्पर्य यह है कि कवि के मन में कहीं से कोई भावनात्मक तूफान आया और उसके मन में विचार नामक बीज बोकर चला गया । यह बीज कवि की कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता हैऔर इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है । इस कारण से शब्दों के अंकुर फूटने से कवि के विचार रचना का रूप ले लेते है । कवि की रचना से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, उसका निर्माण भले ही क्षणभर में हुआ हो परन्तु इस की रस-धारा अनंतकाल तक चलने वाली होती है।कहने का आशय यह है कि खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य की किसी भी रचना का रस कभी समाप्त नहीं होता।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठितकाव्यांश 1

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज बहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

1. 'छोटा मेरा खेत' किसकी रचना है-

(क) रमाशंकर जोशी (ख) भीमसेनजोशी

(ग) उमाशंकर जोशी (घ) भीष्म जोशी।

2. यहाँ कवि किस खेत की बात करता है?

(क) मनरूपी खेत (ख) कागज़ रूपी खेत

(ग) प्यार रूपी खेत (घ) हरियालीरूपीखेत।

3. कवि ने अपने खेत में कौन-सा बीज बोया?

(क) प्रेमरूपी बीज (ख) विचाररूपी बीज

(ग) शब्दरूपी बीज (घ) धानरूपी बीज।

4. कवि ने अभिव्यक्ति रूपी बीज किस पर बोया था?

(क) कागज़ के पृष्ठ पर (ख) खेतमें

(ग) छतपर (घ) आँगनमें।

5 कवि विचारों का बीज बो कर कौन-सा रसायन डालता है?

(क) यूरिया का (ख) शब्दोंका

(ग) कल्पना का (घ) भावोंका।

उत्तर – 1 ग 2 ख 3 ग 4 क 5 ग

पठित काव्यांश 2

शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाईअनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस काअक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना

1. बीज किस रूप में अंकुरित होता है ?

(क) प्रेमरूप में (ख) घृणारूप में

(ग) लिखितरूप में (घ) शब्दरूपमें।

2. कवि ने किस रस की अमृतधारा को अक्षय बताया है ?

(क) साहित्य (ख) करुण

(ग) वात्सल्य (घ) श्रृंगार।

3. साहित्य की रस धारा कब तक चलती है ?

(क) प्रातःकाल (ख) सायंकाल

(ग) अनंतकाल (घ) समकाल।

4 'छोटा मेरा खेत' कविता में शैलीहै-

(क) चित्रात्मक (ख) वर्णनात्मक

(ग) प्रतीकात्मक (घ) अभिधात्मक

5. 'छोटा मेरा खेत' कविता में किसकी कटाई की बात कही है -

(क) क्षणकी (ख) अंकुरकी

(ग) अनंतता की (घ) फसलकी।

उत्तर 1 घ, 2 क, 3 ग, 4 ग, 5,ग

कथन और कारण पर आधारित प्रश्न-

1कथन: (A) कवि के द्वारा खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है।

कारण: (R)यह बीज रचना, विचारऔरअभिव्यक्ति का हो सकताहै।

(क). अभिकथन **(A)** सही हैजबकि कारण **(R)** गलतहै।

(ख). अभिकथन **(A)** गलत है जबकि कारण **(R)** सही है।

(ग). अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैं तथा **R, A** की व्याख्या करता है।

(घ). अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैं तथा **R,A** की व्याख्या नहीं करता है।

2.कथन: (A)- कवि काले बादलों में उड़ते बगुलों को रोककर रखने की गुहार लगाता है।

कारण: (R) - उसकी सुंदरता का आनंद लेना चाहता है।

(क). अभिकथन **(A)** सही है जबकि कारण **(R)** गलतहै।

(ख). अभिकथन **(A)** गलत है जबकि कारण **(R)** सहीहै।

(ग). अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैं तथा **R, A** की व्याख्या करता है।

(घ). अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैंतथा **R,A** की व्याख्या नहीं करता है।

3. कथन: (A) - कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है।

कारण: (R) - जिसमें वह कविता नहीं लिखता है।

(क). अभिकथन **(A)** सही हैजबकि कारण **(R)** गलतहै।

(ख). अभिकथन **(A)** गलत है जबकि कारण **(R)** सहीहै।

ग) अभिकथन **(A)** औरकारण **(R)** दोनों सही हैंतथा **R, A** की व्याख्या करता है।

(घ).अभिकथन **(A)** औरकारण **(R)** दोनोंसहीहैंतथा **R.A** की व्याख्या नहीं करता है।

उत्तर - 1ग, 2ग, 3 क,

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1.कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी ?

उत्तर:कवि बताना चाहता है कि कविता लिखना या रचना एक मुश्किल कार्य है।काफ़ी मेहनत करने के बाद और कल्पना करने के बाद ही कुछ शब्द कागज़ पर उतर पाते हैं। यही खेती का हाल है । खेत में बीज बोने से लेकर कटाई करने तक में बहुत मेहनत लगती है।

2.शब्दरूपी अंकुर फूटने से कवि का क्याआशय है?

उत्तर:कवि का कहना है कि जिस प्रकार खेत में बीज पड़कर कुछ दिनों बाद उसमें अंकुर फूटने लगते हैं, उसी प्रकार विचार रूपी बीज पड़ते ही शब्दरूपी अंकुर फूटने लगते है। यह कविता की पहली सीढ़ी है।

3.कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती?

उत्तर:यहाँ 'लुटनेसे' आशय बाँटने से है।जब कविता पाठकों तक पहुँचती है तो वह खत्म नहीं हो जाती, बल्कि उसको महत्त्व औरअधिक बढ़ता जाता है।ज्यों-ज्यों वह पाठकों के पास पहुँचती जाती है, वहऔरअधिक विकसित होती जाती है।

4.लौकिक रस की धारा कब फूटती है?

उत्तर:जब कोई विचाररूपी बीज अंकुरित होकर कविता का रूप धारणकर लेती है तो उसमें से आनंद की बहुत-सी धाराएँ फूटती रहतीहै।यह धाराएँ अनंत काल तकबहती जातीहै।यह आनंद पाठकों को चिरकाल तक खुशी देताहै।इसलिए यह रसअलौकिक है।

5.कवि कागज के पन्ने को खेत क्यों कहता है?

उत्तर - कवि को कागज का पन्ना किसी चार कोने के खेत की तरह लगता है।क्योंकि जिस तरीके से खेत पर किसान खेती करता है,ठीक उसी तरह पन्ने पर कवि कविता लिखता है।इसलिए कवि पन्ने को खेत कह रहा है।

6.'छोटा मेरा खेत' कविता के रूपक को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि ने कवि कर्म को कृषक के कार्य के समान बताया है।किसान भी खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर फसल बनता है और जनता का पेट भरता है। वह मनुष्य की दैहिक आवश्यकता को पूरी करता है।इसी तरह कवि भी कागज़ रूपी खेत पर अपने विचारों के बीज बोता है। कल्पना का आश्रय पाकर वह विचार विकसित होकर रचना का रूप धारण करता है। इस रचना के रस से मनुष्य की मानसिक जरूरत पूरी होती है।

7.चौकोने छोटे खेत को कवि ने कागज़ का पन्ना क्यों कहा है? उस खेत में 'रोपाई क्षण की कटाई अनंतता की" कैसे है?

उत्तर : कवि छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहता है। वह बताता है कि कवि कर्म भी खेती की तरह है। खेती में रोपाई से कटाई तक प्रक्रिया श्रम साध्य होती है। इसी तरह कविता सृजन भी श्रम साध्य कार्य है। इसमें भी खेती की तरह अनेक प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हैं। कविता का रस अनंतकाल तक आनंद देता है। खेती की फ़सल का समय निश्चित होता है। पकने पर फ़सल कट जाती है, परंतु कविता का रसक भी समाप्त नहीं होता।

8 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर खेत और कागज़ के पन्ने की समानता के तीन बिंदुओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: कवि ने खेत और कागज़ के पन्ने की समानता निम्नलिखित प्रकार से की है-

- खेत व कागज़- दोनों ही चौकोर होते हैं।
- दोनों ही समतल होते हैं।
- दोनों में ही बीज से फ़सल उत्पन्न होती है। खेत में बीज से तथा कागज़ पर विचार रूपी बीज से।
- दोनों ही अक्षय पात्र के समान हैं।

9. कवि के विचार रचना का रूप कैसे ले लेते है?

उत्तर - कवि के मन में कहीं से कोई भावनात्मक तूफान आया और उसके मन में विचार नामक बीज बोकर चला गया। वह विचार नामक बीज कवि के कल्पना नाम सभी रसायनों को पी जाता है और जिस प्रकार रसायनों को पी कर बीज गल जाता है और अंकुरित हो जाता है ठीक उसी प्रकार से कवि के मन का विचार कवि की कल्पनाओं के माध्यम से कागज पर अंकित हो जाता है। जिस प्रकार खेती में बीज विकसित हो कर पौधे का रूप धारण कर लेता है और पत्तों व फूलों से लदकर झुक जाता है। ठीक उसी प्रकर जब कवि के विचार कल्पना का सहारा लेते हैं तब शब्दों के अंकुर फूटने से कवि के विचार रचना का रूप ले लेते है।

10. जब पन्ने रूपी खेत में कविता रूपी फल उत्पन्न हो जाता है तो क्या होता है?

उत्तर - जब पन्ने रूपी खेत में कविता रूपी फल झूमने लगता है तो उससे अद्‌भुत रस की अनेक धाराएँ फूट पड़ती हैं जो अमृत की तरह लगती हैं। कवि ने अपनी रचना को पलभर में रचा था, परंतु उससे मिलने वाला फल अर्थात आनंद लंबे समय तक मिलता रहता है। कवि की रचना से मिलने वाले रस अर्थात आनंद को कोई जितना भी लूट ले वह कभी भी समाप्त होने वाला नहीं है, वह तो लगातार बढ़ता जाता है। कवि का कविता रूपी खेत छोटा- सा है, परन्तु उसके रस का पात्र हमेशा भरा रहने वाला है अर्थात कभी समाप्त होने वाला नहीं है।

11. 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षयपात्र क्यों कहा है?

उत्तर-कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती

है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन- कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

12. 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि- कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित हो कर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व हो कर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंत काल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

13. 'छोटा मेरा खेत हैं कविता का उद्देश्य बताइए।

उत्तर- कवि ने रूपक के माध्यम से कवि- कर्म को कृषक के समान बताया है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है। इसी तरह कवि ने कागज को अपना खेत माना है। इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है। फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है। शब्दों के अंकुर निकलते ही रचना स्वरूप ग्रहण करने लगती है तथा इससे अलौकिक रस उत्पन्न होता है। यह रस अनंत काल तक पाठकों को अपने में डुबोए रखता है। कवि ने कवि- कर्म को कृषि-कर्म से महान बताया है क्योंकि कृषि- कर्म का उत्पाद निश्चित समय तक रस देता है, परंतु कवि-कर्म का उत्पाद अनंत काल तक रस प्रदान करता है।

14. शब्द रूपी अंकुर फूटने से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कवि कहता है कि जिस प्रकार खेत में बीज पड़ने के कुछ दिनों बाद उसमें अंकुर फूटने लगते हैं, उसी प्रकार विचार रूपी बीज से अंकुर फूट पड़ते है। इसके बाद कविता की रचना प्रक्रिया शुरू हो जाती है ।

15.कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती ?

उत्तर- यहाँ 'लुटने से' आशय बाँट ने से है। कविता का आस्वादन अनेक पाठक करते हैं। इसके बावजूद यह खत्म नहीं होती क्योंकि कविता जितने अधिक लोगों तक पहुँचती है उतना ही अधिक उस पर चिंतन किया जाता है। वह शाश्वत हो जाती है।

बगुलों के पंख

केंद्रीय भाव - बगुलों के पंख कविता के कवि उमा शंकर जोशी जी है। बगुलों के पंख कविता प्रकृति के एक सुंदर दृश्य को प्रस्तुत करती है। कवि का ले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे काले बादलों के ऊपर तैरती हुई सांय काल की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। यह दृश्य कवि को इतना मनोहारी लगता है कि इनकी आँखें उस दृश्य से हटने का

नाम ही नहीं लेती। कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस दृश्य के जादू से अपने को बचाने कीगु हार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठितकाव्यांश 1

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोककर रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी
आँखें नभ में पाँती-बँधी बगुलों की पाँखें।

1.'बगुलों के पंख' कविता किसकी रचना है?

(क) शमशेर बहादुर सिंह (ख) उमाशंकरजोशी (ग) फिराक गोरखपुरी (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

2. आकाश में किसकी पंक्ति बंधी है- की सुंदरता का चित्रण किया गया है-

(क) हंसों की (ख) बत्तखों की (ग) बगुलों की (घ) कबूतरों

3. बगुलों के पंखों द्वारा क्या चुराए जाने की बात कही गई है ?

(क) मन ख) हृदय (ग) बुद्धि (घ) आँख

4. बगुलों के पंखों का रंग कैसा है ?

(क) नीले (ख) सफेद (ग) काले (घ) मटमैला।

5. कवि को बगुलों का कौन-सा सौंदर्य अपने आकर्षण में बाँध रहा है ?

(क) कायारूपी सौंदर्य (ख) मायारूपी सौंदर्य (ग) रूपरूपी सौंदर्य (घ) पंक्तिबद्ध रूपी सौंदर्य।

उत्तर – 1 ख , 2 ग, 3. घ, 4. ख, 5. ख

कथन और कारण पर आधारित प्रश्न-

1 अभिकथन: (A) – यह कविता सुंदर दृश्य बिंब युक्त कविता है।
कारण: (R)-जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है।
(क)अभिकथन **(A)** सही है जबकि कारण **(R)** गलत है।
(ख)अभिकथन **(A)** गलत है जबकि कारण **(R)** सही है।

(ग)अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही है तथा **R, A** की सही व्याख्या करता है।
(घ)अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैं तथा **R,A** की व्याख्या नहीं करता है।
उत्तर- ग

2 अभिकथन: (A)- कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुला देखता है।
कारण: (R) वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं।
(क)अभिकथन **(A)** सही है जबकि कारण गलत है।
(ख) अभिकथन **(A)** गलत है जबकि कारण **(R)** सही है।
(ग) अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही है तथा **R, A** की सही व्याख्या करता है।
(घ) अभिकथन **(A)** और कारण **(R)** दोनों सही हैं तथा **R,A** की व्याख्या नहीं करता।
उत्तर- 1 ग, 2 ग

कविता पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1 पाँती बँधे' से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर:'पाँती बँधे' से कवि का तात्पर्य एकता से है। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँध कर एक साथ चलते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी एक जुट रहना चाहिए। बगुलों की पंक्ति हमें 'एकता में ही शक्ति है' का भाव सिखाती है।

2 – कौन सा दृश्य कवि की आँखों को चुरा ले जाता है?
उत्तर – कवि आकाश में छाए काले बादलों में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए बगुलों के सुंदर पंखों को देखता है। यह दृश्य कवि की आँखों को चुरा ले जाता है अर्थात कवि को यह दृश्य अत्याधिक मनमोहक लगता है।

3 कवि को बगुलों की पंक्ति आकाश में कैसी प्रतीत हो रही है?

उत्तर – काले बादल आकाश पर किसी छाया अर्थात परछाई की तरह छाए हुए हैं और बगुलों की पंक्ति आकाश में ऐसी प्रतीत हो रही है जैसे सायं काल में चमकीला सफेद शरीर काले बादल भरे आकाश में तैर रहा हो।

आरोह भाग 2

(गद्य खंड)

पाठ- भक्तिन

लेखिका का नाम - महादेवीवर्मा

पाठ का सारांश- 'भक्तिन' महादेवी वर्मा का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखा चित्र है। इसमें उन्होंने भक्तिन के अतीत और वर्तमान के साथ ही उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक वर्णन किया है। भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था। यह नाम उसके माता- पिता द्वारा दिया गया था। बचपन में ही भक्तिन की माँ की मृत्यु हो गयी। सौतेली माँ ने पाँच वर्ष की आयु में विवाह तथा नौ वर्ष की आयु में गौना कर भक्तिन को ससुराल भेज दिया। ससुराल में भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जिठानियाँ आराम करती थीं। भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पड़ता था। भक्तिन की जिठानियों के लड़कों को दूध, मलाई, राब आदि खाने को मिलता था जबकि उसकी लड़कियों को चने-बाजरे की घूघरी खाने को मिलती थी। भक्तिन के पिता की बीमारी का समाचार उसे तब भेजा गया जब उसकी विमाता को यह विश्वास हो गया कि भक्तिन के वहाँ पहुँचने तक मृत्यु में बदल जाएगा। मायके में विमाता के दुर्व्यवहार से दुखी होकर भक्तिन पानी पिए बिना ही उल्टे पाँव ससुराल वापस आ गई। उसने विमाता के दुर्व्यवहार की खीझ सास को खरी-खोटी सुना कर तथा पति के ऊपर गहने फेंक कर निकाला। भक्तिन के ससुराल वाले उसको परेशान करने के लिए उसकी शिकायत पति से करते थे। लेकिन भक्तिन का पति उसे बहुत प्रेम करता था। अपने पति के स्नेह के बल पर भक्तिन ने ससुराल वालों से अलगौझा कर लिया। भक्तिन के कठिन परिश्रम के कारण जीवन सुख से व्यतीत होने लगा। बड़ी लड़की का विवाह करने के पश्चात भक्तिन के पति की मृत्यु हो गई। ससुराल वाले भक्तिन की दूसरी शादी कर, उसकी संपत्ति हड़पने की साजिश करने लगे। ऐसी परिस्थिति में भक्तिन ने अपने केश मुंडा लिए और गुरू से मन्त्र ले लिया। भक्तिन स्वाभिमानी, संघर्षशील, कर्मठ और दृढ संकल्प वाली स्त्री है जो पितृ सत्तात्मक मान्यताओं और छल-कपट से भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती है। भक्तिन ने दोनों छोटी बेटियों का विवाह कर उन्हें ससुराल विदा कर दिया और घर गृहस्थी सँभालने के लिए अपनी बड़ी बेटी, दामाद को बुला लिया। पर दुर्भाग्य ने यहाँ भी भक्तिन का पीछा नहीं छोड़ा, अचानक उसके दामाद की भी मृत्यु हो गई। भक्तिन का बड़ा जिठौता साजिश कर भक्तिन की विधवा बेटी का विवाह जबरदस्ती अपने तीतर बाज साले से करवाने का प्रयास करने लगे। एक दिन लड़की को अकेला देख कर युवक घर में घुस गया और भक्तिन के जिठौते बाहर से कुंडी लगाकर गाँववालों को पंचायत के लिए बुलाने चले गए। बाहर निकलने पर लड़के के चेहरे को देखकर निर्णय करना मुश्किल था कि लड़की ने उसे घर में बुलाया था, क्योंकि उसके चेहरे पर छपे पंजे के निशान कुछ और ही कहानी कह रहे थे फिर भी पंचायत द्वारा जबरन उन्हें पति-पत्नी के रूप में रहने का फैसला सुनाया गया। यह फैसला किसी तरह सुखकर नहीं रहा। दोनों माँ-बेटी का मन घर-गृहस्थी

से उचट गया, निर्धनता आ गई, लगान न चुका पाने के कारण जमींदार ने भक्तिन को दिन भर धूप में खड़ा रखा।

अपमानित भक्तिन पैसा कमाने के लिए गाँव छोड़ कर शहर आ जाती है और जीवन के अंतिम परिच्छेद में महादेवी की सेविका बन जाती है। भक्तिन के मन में महादेवी के प्रति बहुत आदर, समर्पण और अभिभावक के समान अधिकार भाव है। वह छाया के समान महादेवी के साथ रहती है। वह रात-रात भर जाग कर चित्रकारी या लेखन जैसे कार्य में व्यस्त अपनी मालकिन की सेवा के अवसर ढूँढ लेती है। महादेवी, भक्तिन को नहीं बदल पाई पर भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया। भक्तिन के हाथ का मोटा-देहाती खाना खाते-खाते महादेवी का स्वाद बदल गया, भक्तिन ने महादेवी को देहात के किस्से-कहानियाँ, किंवदंतियाँ कंठस्थ करा दीं। भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था। वह इधर-उधर पड़े पैसों को किसी मटकी में छुपाकर रख देती थी और महादेवी को खुश करने के लिए बात को घुमा-फिरा कर कहती थी। सेवा भाव में वह हनुमान के समान थी। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए तर्क दिया करती थी। युद्ध के समय जब बेटी दामाद उसे लेने आए तो वह लेखिका को छोड़कर जाने से मना कर देती है। स्वभाव से महाकंजूस होने पर भी भक्तिन, पाई-पाई जुटा कर जोड़ी हुई 105 रुपयों की राशि को सहर्ष महादेवी को समर्पित कर देती है। जेल के नाम से थर-थर काँपने वाली भक्तिन अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के लिए बड़े लाट साहब तक से लड़ने को भी तैयार हो जाती है। भक्तिन स्वामी से सेवक के अलग होने को सबसे बड़ा अन्याय मानती है। महादेवी भक्तिन के जीवन का अंतिम परिच्छेद पूरा कर उसे खोना नहीं चाहती हैं।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित गद्यांश-1

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई।भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई।विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता।भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी वजह से उसने वर को नापसंद कर दिया।बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अत: प्रस्ताव जहाँ का तहाँ रह गया।तब वे दोनों माँ-बेटी मन लगाकरअपनी संपत्ति कीदेख-भाल करने लगींऔर 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे।

1. गद्यांश के आधार पर भक्तिन का दुर्भाग्य किसे कहा गया है ?

(क) उसके पति का असमय मर जाना (ख) उसकी बेटी का असमय विधवा हो जाना

(ग) उसके द्वारा तीन-तीन कन्याओं का जन्म दिया जाना (घ) उसके पिता की मृत्यु हो जाना

2. कथन: भक्तिन का जिठौत अपने साले से चचेरी बहन का विवाह करवाना चाहता था।

तर्क : चचेरी बहन को वैधव्य के दुख से बचाने के लिए।

(क)कथन और कारण दोनों सही हैं(ख) कथन और तर्क दोनों गलत हैं

(ग) कथन सही और तर्क गलत है (घ) कथन गलत और तर्क सही है

3. भक्तिन के जेठों और जिठौतों को भक्तिन के दामाद के मरने पर आशा की कौन-सी किरण दिखाई दी ?

(क) अपनी पसंद के वर से चचेरी बहन का विवाह करने की

(ख) भक्तिन का आत्मसम्मान नष्ट कर उसकी संपत्ति हड़पने की

(ग) भक्तिन और उसकी बेटियों पर अपना हक जमाने की

(घ) भक्तिन और उसकी बेटियों पर उपकार करने की

4. भक्तिन की लड़की द्वारा चचेरे भाइयों की पसंद के वर से विवाह नहीं करने पर उन्होंने क्या किया ?

(क) उसके पुनर्विवाह का विचार त्याग दिया

(ख) उसके लिए दूसरे वर की तलाश की

(ग)उसे घर से भागने के लिए कहने लगे

(घ) अपनी पसंद का वर उस पर थोपने का उपाय सोचने लगे

5. भक्तिन के जेठ और जिठौते किस बात के लिए दृढ़-संकल्प थे ?

(क) विधवा बहन का पुनर्विवाह करवाने के लिए

(ख) बाहरी वर से उसका विवाह न होने देने के लिए

(ग) किसी भी तरह से भक्तिन की संपत्ति हड़पने के लिए

(घ) अपनी पसंद से उसका विवाह करवाने के लिए

उत्तर : 1.ख, .2.ग 3.ख 4. घ, 5. ग

पठित गद्यांश 2 -

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है - नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी।पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बंध सकी।वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं।केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी इस नाम का उपयोग ना करूँ।उपनाम रखने की प्रतिभा होती तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह

देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गदगद हो उठी।

1. लेखिका ने भक्तिन नाम को कवित्वहीन क्यों कहा है?

(क) भक्तिन नाम कविता का प्रतीक है (ख) सादगी व सरलता का बोध कराता है

(ग) भक्तिन आपसी प्रेम का प्रतीक है (घ) इनमे से कोई नहीं

2. भक्तिन की सेवाभाव की तुलना की गई है -

(क) अंजना के पुत्र से (ख) अंजना से

(ग) लक्ष्मी से (घ) इनमे से कोई नहीं

3. लेखिका ने अपने नाम को दुर्वह क्यों कहा है ?

(क) लेखिका के पास धनसंपत्ति नहीं है

(ख) लेखिका अपने को नाम से भी बड़ा मानती है

(ग) लेखिका अपने को इस भारी भरकम नाम के योग्य नहीं मानती

(घ) इनमे से कोई नहीं

4. उपर्युक्त गद्यांश की भाषा है

(क) उर्दू मिश्रित हिन्दी (ख) तत्सम शब्द बहुल हिन्दी

(ग) अवधी मिश्रित हिन्दी (घ) तद्भव शब्द बहुल हिन्दी

5. लक्ष्मी को भक्तिन नाम देने का आधार रहा है -

(क) भक्तिन की भक्ति देखकर (ख) भक्तिन का स्वभाव देखकर

(ग) गले में कंठीमाला देखकर (घ) सभी

उत्तर- 1.ख, 2. क, 3. ग, 4. ख, 5. ग

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1: भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है ? उनके विषय में लिखिए।

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है-

- पहला परिच्छेद- भक्तिन का बचपन, माँ की मृत्यु, विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल-विवाह करा देना।
- द्वितीय परिच्छेद- भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा कर लेना।
- तृतीय परिच्छेद- पति की मृत्यु, बड़ी बेटी का विधवा हो जाना, विधवा के रूप में संघर्षशील जीवन।

• चतुर्थ परिच्छेद- महादेवी वर्माकी सेविका के रूप में।

2: तीन कन्याएँ पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी।ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है।क्या इससे आप सहमत हैं ?

उत्तर- कन्या-रत्नों को पैदा करने के उपरांत भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी जिठानियों द्वारा उपेक्षा एवं घृणा का शिकार बनी क्योंकि उन्होंने केवल पुत्रों को ही जन्म दिया था।तीन पुत्रों की जननी भक्तिन की सास ने भी उसकी भरपूर उपेक्षा की।परंतु भक्तिन को उपेक्षा एवं घृणा का दंश केवल नारी जाति से ही झेलना पड़ा, उसका पति उसका अत्यधिक सम्मान करताथा।उसके स्नेह में कभी कोई कमी नहीं आई।इन घटनाओं एवं व्यवहारों से यह प्रमाणित होता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है।वस्तुत: स्त्रियाँ सदैव स्वयं को पुरुषों से ही समझती हैंऔर इसलिए वे पुत्रीवती के बजाय पुत्रवती होना चाहती हैं।कन्या- भ्रूण की हत्या तथा बेटे-बेटियों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार में अंतर स्वयं स्त्रियों की सहमति के बिना संभव नहीं है।पुत्रों के विवाह में दहेज की मांग भी सास ही करती है तथा दहेज हत्याओं में भी मुख्य रूप से सास की ही भूमिका होती है।अत: उक्त धारणा बहुत हद तक सही कही जा सकती है।

3: 'भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं'- लेखिका ने ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर- भक्तिन में अनेक गुणों के बावजूद ;लेखिका ने उसमें कई दुर्गुणों को भी देखा।अत: वह भक्तिन को अच्छी कहने में संकोच का अनुभव करती हैं।भक्तिन के निम्नलिखित व्यवहार लेखिका को दुर्गुण लगते हैं-

(क) वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे को मटके में छिपाकर रख देती है।उसके इस कृत्य की ओर जब उसका ध्यान आकृष्ट किया जाता है तो वह उसे संभालकर रखना बताती है।

(ख) वह अपनी स्वामिनी के क्रोध से बचने के लिए उसे घुमा-फिराकर बताने को झूठ नहीं मानती।

(ग) वह शास्त्रीय बातों की व्याख्या अपनी इच्छानुसार करती है।

(घ) वह दूसरों को अपने अनुसार बदल देना चाहती है किंतु स्वयं रंचमात्र भी बदलना नहीं चाहती।

4. भक्तिन के आजाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं ?

उत्तर : भक्तिन के आने के बाद महादेवी का खाना, पहनना आदि देहाती ढर्रे पर चल पड़ा। लेखिका के लिए भोजन वह अपने मन के अनुसार बनाती। मकई का रात को बना दलिया, बाजरे के तिल लगाकर बनाए गए ठंडे पुए, ज्वार के भूने हुए भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी तथा सफेद महुए की लपसी आदि व्यंजन भक्तिन की दृष्टि में उत्कृष्ट थे, जिन्हें वह दूसरों को बनाकर खिलाना चाहती थी किंतु स्वयं उसने कभी रसगुल्ले भी मुँह में नहीं डाले।

5: भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था, वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी ?

उत्तर: भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दू धर्म के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। चूँकि भक्तिन गरीब थी। उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

5. सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क- वितर्क करने में माहिर थी।

उत्तर: भक्तिन तर्क पटु थी। केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध।' घर में इधर- उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठाकर छुपा लेती है, टोके जाने पर वह इसे चोरी नहीं मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है। पढ़ाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँगी तो घर का काम कौन देखेगा?

6. **'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

अथवा

'भक्तिन' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- 'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

(क) व्यक्तित्व-भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

(ख) परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ग) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(घ) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

7. भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- भक्तिन झूँसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती सन्तान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। फलतः भक्तिन की देखभाल विमाता ने किया। पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही

उसका विवाह हँडिया गाँव के एक ग्वाले की सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। विमाता उससे ईर्ष्या रखती थी। उसने पिता की बीमारी का समाचार तक नहीं भेजा।

8. भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार कैसा था?

उत्तर- भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थी कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसके सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की के साथ जबरदस्ती की। अंत में, भक्तिन को गाँव छोड़ना पड़ा।

9. भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुखमय रहा। बचपन में ही माँ गुजर गई। विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियाँ उत्पन्न करने के कारण उसे सास व जेठानियों का दुर्व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालो ने उसकी संपत्ति छीननी चाही, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर जमाई बनाया। शीघ्र ही उसका देहांत हो गया। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दुखों से भरा रहा।

10. लछमिन के पैरों के पंख गाँव की सीमा में आते ही क्यों झड़ गए?

उत्तर- लछमिन की सास का व्यवहार सदैव कटु रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा की तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। ख़ुशी-ख़ुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि हाय! बेचारी लछमिन अब आई है। लोगों की नजरों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का अहसास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है या वे गंभीर बीमार थे। विमाता ने उसके साथ अन्याय किया था। इसलिए वह हतप्रभ थी। उसकी तमाम ख़ुशी समाप्त हो गई।

11. लछमिन ससुरालवालों से अलग क्यों हुई? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- लछमिन मेहनती थी। तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण सास व जेठानियाँ उसे सदैव प्रताड़ित करती थीं। वह व उसके बच्चे घर, खेत व पशुओं का सारा काम करते थे, परंतु उन्हें खाने तक में भेदभावपूर्ण व्यवहार का समाना करना पड़ता था। लड़कियों को दोयम दर्जे का खाना मिलता था। उसकी दशा नौकरों जैसी थी। अतः उसने ससुरालवालों से अलग होकर रहने का फैसला किया।

अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु, घर आदि में अच्छी चीजें ले ली। परिश्रम के बलबूते आर उसका घर समृद्ध हो गया।

12. भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था?

उत्तर- लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशानी थीं, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थी। इस आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकर कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी।

वह लेखिका की छाया बनकर घुमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक अस्तित्व रखती तथा हर सुख-दुख में साथ रहती थी।

13. लेखिका के परिचित के साथ भक्तिन कैसा व्यवहार करती थी?

उत्तर- लेखिका के पास अनेक साहित्यिक बंधु आते रहते थे, परंतु भक्तिन के मन में कोई विशेष सम्मान नहीं था। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती जैसा लेखिका करती थी। उसके सम्मान की भाषा, लेखिका के प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति लेखिका के सद्भाव से निश्चित होता है। भक्तिन उन्हें आकार-प्रकार व वेशभूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा। कवि तथा कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है, पर आदरभाव नहीं।

14. भक्तिन के आने से लेखिका अपनी असुविधाएँ क्यों छिपाने लगीं?

उत्तर- भक्तिन के आने से लेखिका के खान-पान में बहुत परिवर्तन आ गए। उसे मीठा, घी आदि पसंद था। उसके स्वास्थ्य को लेकर उसके परिवार वाले भी चिंतित रहते थे। घरवालों ने उसके लिए अलग खाने की व्यवस्था कर दी थी। अब वह मीठे व घी से विरक्ति करने लगी थी। यदि लेखिका को कोई असुविधा भी होती थी तो वह उसे भक्तिन को नहीं बताती थी। भक्तिन ने उसे जीवन की सरलता का पाठ पढ़ा दिया।

15. लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?

उत्तर- लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवारवालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवार्क द्वेष बढ़ने से खेती-बाड़ी चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

17. कारागार के नाम से भक्तिन पर क्या प्रभाव पड़ता था? वह जेल जाने के लिए क्यों तैयार हो गई?

उत्तर- भक्तिन को कारागार से बहुत भय लगता था। वह उसे यमलोक के समान समझती थी। कारागार की ऊँची दीवारों को देखकर कर चकरा जाती थी। जब उसे पता चला कि महादेवी जेल जा रही हैं तो वह उनके साथ जेल जाने के लिए तैयार हो गई। वह महादेवी के बिना अलग रहने की कल्पना मात्र से परेशानी हो उठती थी।

18. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति क्यों थोपा गया? इस घटना के विरोध में दो तर्क दीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति इसलिए थोपा गया क्योंकि भक्तिन की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की थी। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की परंतु पंचायत ने कोई भी तर्क न सुनकर एकतरफा फैसला सूना दिया। इसके विरोध में दो तर्क-

(i) महिला के मानवाधिकार का हनन होता है।

(ii) योग्य लड़की का विवाह अयोग्य लड़के के साथ हो जाता है।

19. 'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर- अनेक अवगुणों के होते हुए भी भक्तिन महादेवी वर्मा के लिए इसलिए अनमोल थी क्योंकि-

- भक्तिन में सेवाभाव कूट-कूट कर भरा था
- भक्तिन लेखिका के हर कष्ट को स्वयं झेल लेना चाहती थी।

- वह लेखिका द्वारा पैसों की कमी का जिक्र करने पर अपने जीवनभर की कमाई उसे दे देना चाहती है।
- भक्तिन की सेवा और भक्तिन में निःस्वार्थ भाव था। वह अनवरत और दिन-रात लेखिका की सेवा करना चाहती थी।

20. महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) परिश्रमी-परिश्रमी भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं अदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ii) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वार अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(iii) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिकाने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

21. भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था? वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी ?

उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दुओं के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। चूँकि भक्तिन गरीब थी। उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

22. लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा ?

उत्तर- घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला और भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया। यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णतः मेल खाता था।

23. भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है। भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था। भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे

24. भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जिठौत ने संपति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया। पंचायत के अंधे कानून से दुष्टों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला।

25 .भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था , लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर- भक्तिन का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता था

1. बचपन में ही माँ की मृत्यु।
2. विमाता की उपेक्षा।
3. भक्तिन (लक्ष्मी) का बालविवाह।
4. पिता का निधन।
5. तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।
6. पति की असमय मृत्यु।
7. दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।

26.भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया ?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

27. भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है

1. लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव
2. विधवाओं की समस्या
3. न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के मानवाधिकार को कुचलना
4. अशिक्षा और अंधविश्वास।

बाज़ार दर्शन

लेखक का नाम - जैनेंद्र कुमार

पाठ का सारांश- "बाजार दर्शन" जैनेंद्र कुमार जी द्वारा लिखित एक रोचक निबंध है। जिसमें उन्होंने बाजार के बारे में खुलकर अपने दिल की बात सामने रखी है। वे अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत कैसे हमें अपना गुलाम बना लेती है। अगर हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें, तो उसका लाभ उठा सकते हैं। लेकिन

अगर हम ज़रूरत को तय कर बाजार में जाने के बजाय उसकी चमक-दमक में फँस गए तो वह असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर हमें सदा के लिए बेकार बना सकता है। इस मूलभाव को जैनेंद्र कुमार ने तरह-तरह के उदाहरण देकर समझाने की कोशिश की है।

लेखक कहते हैं कि उनका एक मित्र अपनी पत्नी के साथ कुछ जरूरत का सामान लेने बाजार गया था लेकिन बाजार से उन्होंने इतना गैर जरूरी सामान खरीद लिया कि उनके पास घर वापस आने के लिए रेल का टिकट खरीदने तक के लिए भी पैसे नहीं बचे थे। इस धटना पर वो कहते हैं कि पैसा ही पावर है क्योंकि आज के समय में पैसे से ही सब कुछ खरीदा जा सकता हैं। बिना पैसे के जीवन जीना असंभव है। लेखक कहते हैं कि पैसे में पर्चेजिंग पावर है कहने का आशय यह है कि जेब में जितना अधिक पैसा होगा, उतना ही अधिक सामान की खरीदारी की जा सकेगी। फिर चाहे वो सामान उनकी जरूरत का हो या न हो। कुछ लोग इसी पर्चेजिंग पावर का इस्तेमाल करने में खुशी महसूस करते हैं। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो पैसे के महत्व को समझते है और फ़जूल खर्ची करने से अपने मन पर नियंत्रण रखते हैं और अपनी बुद्धि और संयम से जोड़े हुए पैसों को खर्च करने के बजाय सहेज कर रखने में ज्यादा गर्व महसूस करते हैं। लेखक ने जब अपने मित्र से इस बारे में पूछा कि उसने इतना फजूल सामान क्यों खरीदा तो उन्होंने बाजार को दोष देते हुए जबाब दिया कि यह बाजार तो शैतान का जाल है। जहाँ सामान को कुछ इस तरह आकर्षक तरीके से रखा जाता हैं कि आदमी आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता हैं। लेखक कहते हैं कि बाजार सबको मूक आमंत्रित करता हैं। बाजार का तो काम ही ग्राहकों को आकर्षित करना है। जब कोई व्यक्ति बाजार में खड़ा होता है तो आकर्षक तरीके से रखे हुए सामान को देख कर उसके मन में उस सामान को लेने की तीव्र इच्छा हो जाती है। और अगर उसके पास पर्चेजिंग पावर है तो वह बाजार की गिरफ्त में आ ही जाएगा।

अपने एक और मित्र का उदाहरण देते हुए लेखक कहते हैं कि उनके एक और मित्र जो दिल्ली के चांदनी चौक में चक्कर लगाकर वहां से बिना कोई सामान खरीदे वापस लौट आए थे। जब लेखक ने अपने मित्र से बाजार से खाली हाथ लौट आने का कारण पूछा, तो उन्होंने लेखक को जबाब दिया कि बाजार में जिन भी वस्तुओं को उसने देखा उन्हें उन सभी वस्तुओं को लेने का मन कर रहा था। लेकिन वे सभी को तो ले नहीं सकते थे और अगर वे थोड़ा लेता तो बाकी छूट जाता और वे तो कुछ भी नहीं छोड़ना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कुछ भी नहीं खरीदा। लेखक कहते हैं कि जब पता ही न हो कि हमें क्या लेना हैं? तो बाजार की सभी वस्तुएं हमें अपनी और आकर्षित करेंगी। जिसका परिणाम हमेशा बुरा ही होगा। क्योंकि हम ऐसी स्थिति में बेकार की चीजों को ले आएँगे। लेखक आगे कहते हैं कि बाजार में एक जादू हैं जो आँखों के रास्ते काम करता हैं। बाजार के जादू से कैसे बचा जाए, इसका उपाए बताते हुए लेखक कहते हैं कि अगर मन खाली हो तो बाजार जाना ही नहीं चाहिए। क्योंकि अगर आँखे बंद भी कर ली जाए तो तब भी मन यहां वहां घूमता रहता है। हमें अपने मन पर खुद ही नियंत्रण रखना होगा। क्योंकि अगर व्यक्ति की जेब भरी है और मन भी भरा है तो बाजार का जादू उस पर असर नहीं करेगा। लेकिन अगर जेब भरी है और मन खाली है तो बाजार उसे जरूर आकर्षित करेगा। और फिर व्यक्ति को सभी चीज़े अपने काम की लगेगी और बिना सोचे विचारे वह सारा सामान खरीदने लगेगा।

लेखक अब अपने एक पड़ोसी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि भगत नाम के एक व्यक्ति जो पिछले दस वर्षों से लेखक के पडोसी हैं वे चूरन बेचते हैं। वे रोज चूरन बेचने जाते हैं। परन्तु वह उतना ही चूरन बेचते हैं जितने में उनकी छः आने की आमदनी होती है। छः आने की कमाई होने के बाद वह बचा हुआ सारा चूरन बच्चों में बांट देते हैं। वो चाहते तो और भी पैसे कमा सकते थे। लेकिन वह ऐसा नहीं करते हैं। जब भगत बाजार जाते हैं तो इधर-उधर न झांकते हुए सीधे पन्सारी की दुकान पर ही जाते हैं जहां उनकी जरूरत का सारा सामान मिल जाता है। वो वहां से अपना सामान लेकर सीधे घर आ जाते हैं। इसके आलावा वह न तो बहुत पैसा कमाने का लालच रखते हैं और न ही बाजार से गैर जरूरी सामान खरीदने में विश्वास रखते हैं।

लेखकबाजार की सार्थकता तभी मानते हैं जब व्यक्ति केवल अपनी जरूरत का सामान खरीदें। बाजार हमेशा ग्राहकों को अपनी चकाचौंध से आकर्षित करता है। व्यक्ति का अपने मन पर नियंत्रण होना चाहिए। लेकिन जो लोग अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रखते हैं। ऐसे व्यक्ति न तो खुद बाज़ार से कुछ लाभ उठा सकते हैं और न ही बाजार को लाभ दे सकते हैं। ये लोग सिर्फ बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिससे बाजार में छल कपट बढ़ता हैं। सद्भावना का नाश होता हैं। फिर ग्राहक और विक्रेता के बीच संबंध सद्भावना का न होकर, केवल लाभ-हानि तक ही सीमित रहता हैं। सद्भाव से हीन बाजार मानवता के लिए विडंबना है और ऐसे बाज़ार का अर्थशास्त्र अनीति का शास्त्र है।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठितगद्यांश 1 -

इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृत और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है और यह बाजार का ही नहीं, बल्कि इतिहास का, सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है, तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं।

1 गद्यांश में किस सद्भाव के ह्रास की बात की जा रही है?

(क) ग्राहक के सद्भाव(ख) दुकानदार के सद्भाव

(ग) क और ख दोनों(घ) इनमें से कोई नहीं

2 सद्भाव के ह्रास का क्या परिणाम होता है?

(क) ग्राहक पैसे की ताकत दिखाता है(ख) बहुत खरीददारी करता है

(ग) दुकानदार निरर्थक वस्तुएं बेच देता है(घ) उपर्यक्त सभी

3 'ऐसे बाजार को' कथन से लेखक का तात्पर्य है-

(क) जहां कपट हो(ख) जहां ग्राहक को संतुष्टि मिले

(ग) ग्राहक व दुकानदार के मध्य सद्भाव हो(घ) एक की हानि में दूसरे की हानि हो।

4 ग्राहक और विक्रेता के बीच बाजार में कैसा संबंध होता है?

(क) सद्भावना का(ख) परस्पर लाभ वितरण का

(ग) ठगी का(घ) प्रेम का

5 बाजारूपन में ग्राहक और विक्रेता का क्या गायब हो जाता है?

(क) सौहार्द भाव(ख) लूट का भाव

(ग) शोषण का संबंध(घ) ठगी का संबंध

उत्तर: 1.ग , 2. घ , 3. क , 4. ग , 5. क

पठित गद्यांश 2-

उस बल को नाम जो दो, पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहां पर संसारी वैभव फलता फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं, आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं, मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखें और प्रतिपादन करूं। मुझ में शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकं। लेकिन इतना तो है कि जहां तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहां उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उस बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए, तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रभावित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

1."अपर जाति का तत्त्व" किसे कहा गया है ?

(क) निम्न वर्ग को (ख) अभिजात वर्ग को

(ग) मध्यम वर्ग को (घ) विजित वर्ग को

2. लेखक ने अबलता किसे माना है?

(क) संचय की तृष्णा (ख) संतोष न होना

(ग) धन की ओर झुकाव (घ) ये सभी

3 निर्धन धन की ओर क्यों झुकता है ?

(क) धन के आकर्षण के कारण (ख) धन की कमी के कारण

(ग) आत्मिक शक्ति के अभाव के कारण (घ) वैभव की चाल के कारण

4 मनुष्य पर धन की विजय को किसके समान बताया है ?

(क) असत्य पर सत्य की विजय (ख) चेतन पर जड़ की विजय

(ग) सत्य पर असत्य की विजय (घ) मनुष्य पर धर्म के विजय

5 उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

(क) बाजार दर्शन (ख) लोक बाजार (ग) बाजारवाद (घ) पैसे की पावर

उत्तर 1. ख, 2.घ, 3.ग, 4.ख , 5. क

पठित गद्यांश 3

उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन ना हो। मन खाली हो, तो बाजार ना जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए । पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ ना कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

1 बाजार के जादू से बचने के लिए जरूरी है कि हम-

(क) बाजार में खाली मन न जाएं (ख) बाजार में से कुछ लेने जाएं

(ग) बाजार में ही न जाएं (घ) बाजार से बचें

2 यदि मन में कुछ खरीदने का लक्ष्य हो तो क्या होता है?

(क) बाजार अपना रूप जाल नहीं फैलाता। (ख) बाजार केवल लक्ष्य सिद्ध करता है।

(ग) बाजार का जादू बेअसर हो जाता है। (घ) तीनों ठीक है।

3 बाजार की सार्थकता किस में है?

(क) लक्ष्य सिद्ध करने में (ख) आवश्यकता पूर्ति में

(ग) धन कमाने में (घ) व्यापारिक प्रगति करने में

4 बाजार का सच्चा लाभ इसी में है कि हम-

(क) अपना काम धंधा चला सकें (ख) लोगों को सामान बेच सकें

(ग) धन कमा सकें (घ) लोगों की आवश्यकताओं का सामान उपलब्ध करा सकें।

5 बाजार कब आनंद देने लगता है?

(क) जब मन खाली हो (ख) मन में भटकाव हो

(ग) मन में लोभ लालच हो (घ) जब ग्राहक की जरूरत को पूरा करें।

उत्तर: 1.क, 2 घ, 3 ख, 4. घ , 5. घ

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1.लेखक के मित्र परेशान क्यों थे?

उत्तर: लेखक के मित्र परेशान थे क्योंकि उनकी पत्नी बाज़ार से बहुत सारा अनुपयोगी सामान खरीद लायीं थी। इस सामान की जरूरत भी नहीं थी उसे जो भी समान दिखता है उसे यही लगता है कि यह सामान घर के लिए आवश्यक है और बस वह उसे खरीदती चली गई।

2.बाज़ार के लिए हर व्यक्ति क्या है?

उत्तर: बाज़ार प्रत्येक व्यक्ति को बस एक ग्राहक की नज़र से देखता है।बाज़ार के लिए किसी का लिंग, क्षेत्र या धर्म कोई मायने नहीं रखता। इसलिए कह सकते हैं कि बाज़ार के लिए हर व्यक्ति एक सामान है। बाजार का निमंत्रण मूक होता है वह कभी यह नहीं कहता कि आओ और मुझे लूट लो।

3.लेखक के पास से मोटर के गुजरने पर उसके मन में क्या विचार आया?

उत्तर: बाज़ार में घूमते समय लेखक के पास से एक मोटर धुल उड़ाते हुए गुज़रती है| तब लेखक के मन में विचार आता है कि जैसे ये मोटर उनपर व्यंग्य कर रही हो 'देखो मैं हूँ मोटर और तुम मुझसे वंचित हो|' लेखक के मन में मोटर न होने का अभाव जागृत हुआ।

4.बाज़ार में मनुष्य किस जाल में फंस जाता है? मनुष्य को कब पश्चाताप होता है?

उत्तर: बाज़ार एक मायाजाल की तरह है जिसमें कोई भी फंस जाता है| बाज़ार की चकाचोंध में कोई भी इसके आकर्षण में फंस कर वो चीज़े भी खरीद लेता है जिनकी उसे जरूरत नहीं। इस तरह वो गैर ज़रूरी खर्च कर बैठता है। लेकिन जब वो घर पहुँचता है तो उसे अपनी इस फ़िज़ूल खर्ची पर पश्चाताप होता है।

5.भगत जी बाज़ार में क्या करते हैं?

उत्तर: भगत जी एक समझदार व्यक्ति हैं और वो बाज़ार के मायाजाल में नहीं उलझते| उन पर बाज़ार की

चका-चौंधका कोई असर नहीं पड़ता है| उन्हें यदि ज़ीरा, काला नमक, आदि खरीदना होता है तो वो बाज़ार फालतू दुकानों पर नहीं भटकते| बल्कि वो सीधा पंसारी की दूकान पर जातें है और ज़रूरत का सामान खरीद लेते हैं| इस तरह वो फालतू की चीज़े ना खरीदकर फ़िज़ूल खर्च से बचे रहते हैं|

6.बाज़ार को सार्थक किस प्रकार के दुकानदार तथा ग्राहक बनातें हैं?

उत्तर: बाज़ार की सार्थकता दुकानदार और ग्राहक के सार्थक लेन-देन से जुड़ी होती है। यदि दुकानदार सिर्फ ग्राहक की ज़ररूरतों को पूरा कर सकने वाले सामान ही अपनी दुकान पर रखता है, चमक-दमक के सहारेसामान बेचने की कोशिश नहीं करता है, तो ये सार्थक दुकानदार है।इस प्रकार ही जब ग्राहक खरीदारी के समय सजग रहते हुए बिना किसी चमक-दमक के जाल में फंसे सिर्फ ज़रूरत का सामान ही खरीदता है, तो यह एक सार्थक ग्राहक है।

7.बाज़ार किस आधार पर समाज को विभाजित करता है?

उत्तर: वैसे तो बाज़ार के लिए हर व्यक्ति बस एक ग्राहक होता है।बाज़ार किसी को भी उसकी जात, धर्म, या क्षेत्र के आधार पर विभाजित नहीं करता।लेकिन सामजिक विभाजन से अलग एक आधार है जिसके आधार पर बाज़ार अपने ग्राहकों विभाजित करता है।बाज़ार किसी भी व्यक्ति को उसकी क्रय शक्ति अर्थात उसके खर्च करने की क्षमता और मानसिकता के आधार पर देखता है। बाज़ार का किसी भी व्यक्ति से संबंध उसके लेनदेन के आधार पर ही है।

8.पाठ के अनुसार ग्राहक कितने प्रकार के होते है?

उत्तर: पाठ के अनुसार निम्न प्रकार के ग्राहक होतें हैं:

1.क्रय-शक्ति को प्रदान करने वाले

2 भरी जेब एवं भरे मन वाले

3.खाली ज़ेब एवं ख़ाली मन वाले

4.मितव्ययी और धैर्य रखने वाले

5.अपव्ययी ग्राहक

6.बाज़ारूपन को प्रोत्साहित करने वाले

9.बाज़ार ग्राहकों से क्या कहता है?

उत्तर: लेखक ने पाठ में बाज़ार का मानवीकरण किया है।लेखक के अनुसार बाज़ार कहता है “आओ मुझे लूटो, और लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है ? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो तो भी देखने में क्या हर्ज़ है। अजी आओ भी।” बाज़ार किसी ग्राहक के साथ ये संवाद शाब्दिक भाषा में न करके अपनी चका-चौंध के मायाजाल से करता है।यदि ग्राहक धैर्यवान और सजग नहीं होता है तो वह बाज़ार की इस चका-चौंध से सम्मोहित होकर गैर ज़रूरी चीज़े खरीद कर फ़िज़ूल खर्च कर बैठता है। जिसके कारण आर्थिक व अन्य समस्या ग्राहक के साथ उत्पन हो सकती हैं।

10.लेख़क के मित्र बाज़ार से कुछ भी क्यों नहीं ले सके?

उत्तर: लेखक के मित्र जब बाज़ार में जाते हैं तो बाज़ार में घूमते हुए उनकी नज़र हर दुकान पर जाती है। बाज़ार की चकाचौंध से लेखक के मित्र सम्मोहित होने लगते हैं।वहाँ बिक रही हर चीज़ को खरीदने की इच्छा

लेखक के मित्र में मन में बलवती होने लगती है। वो बाज़ार में बिक रही हर चीज़ की तरफ मोहित होने लगते हैं।ये सबकुछ पा लेने की इच्छा ही मनुष्य के त्रास का कारण बनती है। लेकिन लेखक के मित्र अपने विवेक से इस त्रासदी को सजगता से टाल देते हैं और वो कुछ भी नहीं खरीदते। इस तरह वो दोपहर को बाज़ार में जाने के बाद शाम को बिना कुछ ख़रीदे ही घर वापस लौट आते हैं।

11.बाज़ार में क्या चीज़ ग्राहकों को आकर्षित करती है? तथा जादू का असर कब अधिक होता है?

उत्तर: बाज़ार एक मायाजाल की तरह है। बाज़ार की चका-चौंध में बाज़ार की हर चीज़ किसी को भी सम्मोहित करके अपनी तरफ खींचती है। व्यक्ति की बाज़ार की हर चीज़ को पा लेने की इच्छा होने लगती है। बाज़ार में बिक रही हर छोटी-बड़ी चीज़ ग्राहक को ऐसे अपनी तरफ खींचती है जैसे चुम्बक लोहे को। बाज़ार की चमक आँखों को आकर्षित करती है।इस बाजारू आकर्षण का असर मानव मस्तिष्क पर तब ज़्यादा पड़ता है जब उसका स्वयं पर नियंत्रण नहीं होता है या उसकी जेब भरी और मन खाली होता है।

12. लेखक ने बाज़ार के जादू से बचने का क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर: बाज़ार की चमक-दमक से आकर्षित हो जाना सामान्य है लेकिन लेखक ने अपने लेख में बाज़ार के इस मायाजाल से बचने के लिए कुछ उपाय भी सुझाये हैं। जैसे जब भी बाज़ार खरीदारी करने जाओ तो एक सूचि बनाकर जाओ। उन दुकानों पर ही जाओ जहाँ से तुम्हें वो सामान मिलेगा।यदि जो भी खरीदना, ये पहले से सुनिश्चित करके जाओगे तो अनावश्यक खरीदारी से बच पाओगे। इस तरह ग्राहक के पैसे भी बचेंगेऔर घर आकर उसे पश्चाताप भी नहीं होगा।इसके अलावा स्वयं पर नियंत्रण बहुत ज़रूरी है। जहाँ से कुछ खरीदारी नहीं करनी उस दुकान पर मत जाओ।बाज़ार में दुकानों की चकाचौंध आँखों को आकर्षित करती है।सजगता से स्वयं पर संयम रखना चाहिए ताकि बाज़ार की चकाचौंध मस्तिष्क पर हावी न हो।

13.बाज़ारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर: बाजारुपन से तात्पर्य ऊपरी चमक-दमक से है। जब सामान बेचने वाले बेकार की चीजों को आकर्षक बनाकर मनचाहे दामों में बेचने लगते हैं, तब बाज़ार में बाजारुपन आ जाता है,इसके अलावा धन को दिखावे की वस्तु मान कर व्यर्थ में उसका दिखावा करने वाले ग्राहक भी बाजारमेंबाजारूपन लाने में सहायक होते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नहीं करते साथ ही जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। इस प्रकार विक्रेता और ग्राहक दोनों ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं।मनुष्य की आवश्यकताओं की ज्यादा से ज्यादा पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है।

14. बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर: बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का यह सशक्त पहलू उभरकर सामने आता है कि उन्हें अपनी आवश्यकताओं का भली-भाँति ज्ञान हैं। वे उतना ही कमाना चाहते हैं जितनी की उन्हें आवश्यकता है। बाज़ार उन्हें कभी भी आकर्षित नहीं कर पाता वे केवल अपनी जरुरत के सामान के लिए बाज़ार का उपयोग करते हैं। वे खुली आँखें, संतुष्ट मन और मग्न भाव से बाजार जाते हैं।भगतजी जैसे व्यक्ति समाज में शांति और व्यवस्था लाते हैं क्योंकि इस प्रकार के व्यक्तियों की दिनचर्या संतुलित होती है और ये बाज़ार के आकर्षण में

फँसकर अधिक से अधिक वस्तुओं का संग्रह और संचय नहीं करते हैं जिसके फलस्वरूप मनुष्यों में होड़, अशांति के साथ महँगाई भी नहीं बढ़ती। अत: समाज में भी शांति बनी रहती है।

15. बाज़ार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं क्योंकि आज हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, पढ़ाई, आवास, राजनीति, धार्मिक स्थल आदि सभी में लिंग,जाति,धर्म के आधार पर होने वाले विभिन्न भेदभाव देखते हैं किन्तु बाजार इस विचारधारा से अलग होता है।
बाज़ार को किसी लिंग, धर्म या जाति से कोई लेना-देना नहीं होता है, वह हरेक के लिए खुला होता है। उसके लिए तो हर कोई केवल और केवल ग्राहक है जहाँ लोग आकर अपनी आवश्कताएँ पूरी करते हैं। इस प्रकार यदि हम देखें तो बाज़ार एक प्रकार की सामाजिक समता की रचना करता है।

काले मेघा पानी दे

लेखक का नाम-धर्मवीर भारती

पाठ का सारांश- लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं।ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लैंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं।जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं।इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं।ये पुकार लगातेहैं–

काले मेघा पानी दे, पानी दे, गुड़धानी दे
गगरी फूटी बैल पियासा, काले मेघा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था।ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते।यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे; कुएँ सूखने लगते थे; नलों में बहुत कम पानी आता था, खेतों की मिट्टी में पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी।लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे।

पशु पानी की कमी से मरने लगते थे, लेकिन बारिश का कहीं नामो निशान नहीं होता था।जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाती थी तो इंदरसेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्रदेवता से पानी की माँग करती थी।लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे। इसप्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है।अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उमर का था।वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था।उस में समाज सुधार का जोश ज्यादा था। उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थीं। जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ़ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता। त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तर्कों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंक कर बुवाई करते हैं। इसी से शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बना कर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो, तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सच है। गाँधी जी महाराज भी यही कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास साल पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भों में ये बातें मन को कचोटती हैं कि हम देश के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में माँगें बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है।आज स्वार्थ एक मात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं, पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है। बैल प्यासे ही रह जाते हैं। यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित गद्यांश 1

एक बात देखी है कि अगर तीस - चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच - छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा, तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

1. किसान के उदाहरण मे लेखक का आशय है?

(क) त्याग के लिए कुछ प्राप्त करना (ख)कुछ प्राप्ति के लिए त्याग करना

(ग) किसान की इच्छा,कुछ भी पहले करे (घ) त्याग बड़ा है, प्राप्ति से

2.'पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे' - कथन में भारतीय-संस्कृति की कौन-सी विशेषता निहित है?

(क)'ईशावास्यमिदं सर्वम्'अर्थात् ईश्वर हर जगह है (ख)'चरैवेति','चरैवेति' अर्थात् चलते रहो, कर्म करते रहो

(ग) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' अर्थात् संयम के साथ भोग करो

(घ) 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात् प्रजा राजा का अनुसरण करती है

3. उपर्युक्त गद्यांश किसका कथन है?

(क) लेखक का (ख)जीजी का (ग) ऋषि-मुनियों का (घ)कोई भी नहीं

4. 'यथा राजा तथा प्रजा' इससे लेखक का क्या अभिप्राय है?

(क) जैसा राजा वैसी प्रजा (ख)प्रजा राजा का अनुकरण करती है

(ग) लोकतंत्र में बेईमान प्रजा बेईमान को शासन सौंपती है (घ) जनता हमेशा जनार्दन होती है

5. पानी को गली में बोने से क्या अभिप्राय है ? 1

(क) पानी के व्यर्थ में मेंढक मंडली पर फेंकना (ख)पानी का स्वयं उपयोग न करना

(ग) पानी का अधिक महत्त्वपूर्ण न होना (घ) पानी का दान करना

उत्तर - 1. ख, 2. ग, 3. ख, 4. क, 5. घ

पठित गद्यांश 2 -

लेकिन इस बार मैंने साफ इनकार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भर कर पानी इस गंदी मेंढक मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भर कर पानी ले गई उनके बूढ़े पाँव उगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रह गया। पास आ कर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोली, "देख भइया रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं। "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।

1. लेखक ने साफ इनकार क्यों कर दिया?

(क) क्योंकि वह अंधविश्वासी था

(ख) क्योंकि उसे उछलना कूदना पसंद नहीं था

(ग) क्योंकि वह इन सब बातों को अंधविश्वास मानता था

(घ) क्योंकि वह जीजी से गुस्सा था

2. लेखक अपनी जीजी से क्यों रूठा ?

(क) उसके अनुसार इंद्रसेना पर पानी डालना पाखंड था

(ख) उसकी जीजी इस रिवाज पर आस्था रखती थी

(ग) लेखक जीजी से इंद्रसेना पर पानी डलवाना चाहता था

(घ) जीजी की इच्छा थी कि लेखक इंद्रसेना पर अपने हाथ से पानी डाले

3. लेखक के गाल फुलाने पर जीजी की प्रतिक्रिया व उसके सही कारण को पहचाने?

(क) पहले क्रोध किया, फिर समझाया क्योंकि वह चाहती थी कि लेखक भी इंद्रसेना के महत्त्व को समझे

(ख) लेखकके कहने पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह सोच रही थी कि इसी तरह इसकी बुद्धि ठिकाने आएगी

(ग) उसे क्रोध करते हुए समझाया क्योंकि वह कठोरता के बिना नहीं समझ रहा था

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. नीचे लेखक व जीजी के विचार दिए हैं, कौन -सा मतभेद नहीं है?

(क) लेखक इन्द्रसेना पर पानी डालने को अंधविश्वास समझता है, जीजी नहीं

(ख) जीजी इंद्रसेना पर पानी डालने को जलदान समझती है, लेखक नहीं

(ग) लेखक ऋषि-मुनियों को महत्त्व देता है , जीजी नहीं देती है

(घ) लेखक पानी फेंकने को बरबादी मानता है, जीजी नहीं मानती

5. दिए गए तर्कों में से कौन-सा जीजी का तर्क नहीं है?

(क) जल चढ़ाना अर्घ्यदान है

(ख) जल के दान को पाकर देवता कई गुना देते हैं

(ग) खेत में बीज फेंकने से देवता खुश होते हैं

(घ) मेढक मंडली के प्रति जल दान करने से वर्षा होती है

उत्तर -1. ग, 2. घ, 3. क, 4. ग, 5. ग

पाठपर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1 लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक– मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदरसेना कहकर क्यों बुलाती थी?

उत्तर–लोग जब इन लड़कों की टोली को कीचड़ में धंसा देखते, उनके नंगे शरीर को, उनके शोर-शराबे को तथा उनके कारण गली में होने वाली कीचड़ या गंदगी को देखते हैं तो वे इन्हें मेढक-मंडली कहते हैं। लेकिन बच्चों की यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहती थी क्योंकि ये इंदर देवता को बुलाने के लिए लोगों के घर से पानी माँगते थे और नहाते थे। प्रत्येक बच्चा अपने आपको इंद्र कहता था इसलिए यह इंदर सेना थी।

2 जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर–जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने के समर्थन में कई तर्क दिए जो निम्नलिखित हैं–

किसी से कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा देना पड़ता है। इंद्र को पानी का अर्घ्य चढ़ाने से ही वे वर्षा के जरिये पानी देंगे।

त्याग भावना से दिया गया दान ही फलीभूत होता है। जिस वस्तु की अधिक जरूरत है, उसके दान से ही फल मिलता है। पानी की भी यही स्थिति है।

जिस तरह किसान अपनी तरफ से पाँच-छह सेर अच्छे गेहूँ खेतों में बोता है ताकि उसे तीस-चालीस मन गेहूँ मिल सके, उसी तरह पानी की बुवाई से बादलों की अच्छी फसल होती है और खूब वर्षा होती है।

3 'पानी दे, गुड़धानी दे' मेघों से पानी के साथ– साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जार ही है?

उत्तर–'गुड़धानी' शब्द का वैसे तो अर्थ होता है गुड़ और चने से बना लड्डू लेकिन यहाँ गुड़धानी से आशय 'अनाज' से है। बच्चे पानी की माँग तो करते ही हैं, लेकिन वे इंदर से यह भी प्रार्थना करते हैं कि हमें खूब अनाज भी देना ताकि हम चैन से खा- पीकर खुश रह सकें। केवल पानी देने से हमारा कल्याण नहीं होगा। खाने के लिए अन्न भी चाहिए। इसलिए हमें गुड़धानी भी दो।।

4 इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती हैं? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व हैं?

उत्तर- गंगा माता के समान पवित्र और कल्याण करने वाली है। इसलिए बच्चे सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलते हैं। भारतीय संस्कृति में नदी को माँ' की तरह पूजने वाली बताया गया है। सभी नदियाँ हमारी माताएँ हैं। भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में सभी नदियाँ पवित्रता और कल्याण की मूर्तियाँ हैं। ये हमारी जीवन की आधार हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय समाज गंगा और अन्य नदियों को धारित्री बताकर उनकी पूजा करता है ताकि इनकी कृपा बनी रहे।

प्रश्न5. "रिश्तों में हमारी भावना– शक्ति का बँट जाना, विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजनी हमारी बुद्धि की शक्ति को कमज़ोर करती है।" पाठ में जीजी लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के ओचित्य की समीक्षा कीजिए?

उत्तर–यह कथन पूर्णत: सत्य है। रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति बँट जाती है। ऐसे में विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है। इस पाठ में जीजी लेखक को बेपनाह स्नेह करती हैं। वे अनेक तरह की धार्मिक क्रियाएँ लेखक से करवाती थीं जिन्हें लेखक अंधविश्वास मानता था। इंदर सेना पर पानी फेंकने से मना करने पर जीजी अपने तर्क देती हैं। लेखक उन तर्कों की काट नहीं दे पाता, क्योंकि उन तर्कों के पीछे भावनात्मक लगाव था। भावना में जीवन के अनेक सत्य छिप जाते हैं तो कुछ प्रकट हो जाते हैं। बुद्धि शुष्क होती है तथा तर्क पर आधारित होती है। भावना में तर्क का स्थान नहीं होता, वहाँ विश्वास ही प्रमुख होता है। विश्वास खंडित होने पर रिश्ते समाप्त हो जाते हैं तथा समाज का ढाँचा बिखर जाता है।

6. क्या इंदर सेना आज के युवा वर्ग का प्रेरणा-स्रोत हो सकती हैं? क्या आपके स्मृति-कोश में ऐसा कोई अनुभव हैं जब युवाओं ने संगठित होकर समाजोपयोगी रचनात्मक कार्य किया हो? उल्लेख करें?

उत्तर–इंदर सेना आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकती है। इंदर सेना के कार्यों को देखकर कोई भी युवा सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकता है। हमारे मोहल्ले में भी पिछले दिनों कुछ युवाओं ने ऐसा ही कार्य किया। एक गरीब बुढ़िया बहुत बीमार हो गई। उसके इलाज पर दस हजार रुपए का खर्चा था। उस बुढ़िया के पास तो दो सौ रुपए मिले। देखते ही देखते लगभग 12,000 रुपए इकट्ठे हो गए। इस प्रकार बुढ़िया का इलाज हो गया। वह बीमारी से निजात पा चुकी थी।

7. तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि-समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह बहुत महत्वपूर्ण हैं, पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता हैं?

उत्तर–तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि-समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह महत्वपूर्ण हैं, पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास भर देता है। इसका कारण यह है कि इस महीने

में अधिकतर वर्षा होती है और किसानों को आशा की नयी किरण दिखने लगती है। जमीन की प्यास बुझती है तथा खेत बुवाई के लिए तैयार हो जाते हैं। खेतों में धान की रोपाई होती है तथा इस समय उल्लास छा जाता है। गरमी से राहत मिलने, पानी की कमी दूर होने, कृषि-कार्य के प्रारंभ होने आदि से गाँवों में प्रसन्नता का माहौल बन जाता है।

8. पाठ के संदर्भ में इसी पुस्तक में दी गई निराला की कविता 'बदलराग' पर विचार कीजिए और बताइए कि आपके जीवन में बादलों की क्या भूमिका है?

उत्तर–बादल हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। बादलों के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है बादलों के आकाश में छा जाने से सभी का मन प्रसन्न हो जाता है। बादल यदि अपने निर्धारित समय पर बरसते हैं तो खूब धन-धान्य होता है। खेत फसलों से लहलहा उठते हैं। अतः बादल हमारे जीवन के आधार हैं।

9. पानी का संकट वर्तमान स्थिति में भी बहुत गहराया हुआ हैं। इसी तरह के पर्यावरण से संबद्ध अन्य संकटों के बारे में लिखिए ।

उत्तर–पानी के संकट की तरह अन्य कई संकट हमारे पर्यावरण में बने हुए हैं। खतरनाक गैसों का संकट, बाढ़ का संकट, सूखे का संकट, भूखमरी का संकट, खाद्यान्न का संकटआदि संकट पर्यावरण में बने हैं। इन संकटों के कारण कभी-कभी तो देश की गति तक रुक जाती-सी प्रतीत होती है। कहीं बाढ़ है तो कहीं सूखा है। कहीं लोग भूखमरी के कारण बेहाल हैं। तो कहीं खाद्यान्न पड़ा-पड़ा सड़ रहा है। हवा में फैली खतरनाक गैसें सभी को दूषित कर रही हैं। इन हवाओं में साँस लेना भी कठिन होता जा रहा है।

10. आपकी दादी– नानी किस तरह के विश्वासों की बात करती है? ऐसी स्थिति में उनके प्रति आपका रवैया क्या होता है?

उत्तर–हमारी दादी-नानी अनेक तरह के व्रत करती हैं ताकि परिवार पर कोई कष्ट न आए। वे अंधविश्वासों से ग्रस्त हैं; जैसे बिल्ली का रास्ता काटना, छींकना, आँख फड़कना आदि। वे पुराने विचारों की हैं। मैं ऐसे विश्वासों/अंधविश्वासों को नहीं मानता, परंतु उनके प्रतिविरोध भी प्रकट नहीं करता, क्योंकि उनका विरोध करने पर तनाव उत्पन्न होता है।दूसरे, वे ये सारे कार्य परिवार को कष्टों से दूर रखने की भावना से करती हैं। ऐसे में भावनात्मक लगाव के कारण उनका विरोध नहीं किया जा सकता।

11. काले मेघा पानी दे, संस्मरण के लेखक ने लोक– प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकर उनके निराकरण पर बल दिया है।– इस कथन की विवेचना कीजिए?

उत्तर–लेखक ने इस संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वह पाखंड मानता है। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तर्कों से सही मानता है, परंतु लेखक इन्हें गलत बताता है। इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की क्षति है जबकि गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है। हालाँकि एक बार इन्हीं अंधविश्वास की वजह से देश को एक बार गुलामी का दंश भी झेलना पड़ा।

12. 'काले मेघा पानी दे' पाठ की 'इंदरसेना' युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती हैं- तर्क सहित उतार दीजिए।

उत्तर–इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। इंदर सेना सामूहिक प्रयास से इंद्र देवता को प्रसन्न करके वर्षा कराने के लिए कोशिश करती है। यदि युवा वर्ग के लोग समाज की बुराइयों,

कमियों के खिलाफ़ सामूहिक प्रयास करें तो देश का स्वरूप अलग ही होगा। वे शोषण को समाप्त कर सकते हैं।दहेज का विरोध करना, आरक्षण का विरोध करना, नशाखोरी के खिलाफ़ आवाज उठाना-आदि कार्य सामूहिक प्रयासों से ही हो सकते हैं।

13. यदिआप धर्मवीर भारती के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर क्या करतेऔर क्यों? 'काले मेघा पानी दे'-पाठ केआधार पर बताइए।

उत्तर–यदि मैं लेखक के स्थान पर होता तो जीजी का तर्क सुनकर वही करता जो लेखक ने किया, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, उनका दिल दुखताऔर हमारे प्रति उनका सद्भाव भी घट जाता।लेखक की भाँति मैं भी जीजी के प्यार और सद्भाव को खोना नहीं चाहता।यही कारण है कि आज भी बहुत-सी बेतुकी परंपराएँ हमारे देश को जकड़े हुए हैं।

14-'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर–गली-मोहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुन-भुनकर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे।जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका थाऔरअब तोआषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे।कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था।खेत की माटी सूख-सूखकर पत्थर हो गई थी।पपड़ी पड़कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं।झुलसा देने वाली लू चलती थी।ढोर-ढंगर प्यास से मर रहेथे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा-पाठ में लगे थे।अंत में इंद्र से वर्षा के लिए प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

15. दिन-दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवावर्ग 'काले मेघा पानी दे' का इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकताहैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर–आज के समय पानी के गहरे संकट से निपटने के लिए युवावर्ग सामूहिकआंदोलन कर सकताहै।युवावर्ग शहर व गाँवों में पानी की फिजूलखर्ची कोरोकने के लिए प्रचार आंदोलन कर सकता है।गाँवों में तालाब खुदवा सकता है ताकि वर्षा के जल का संरक्षण किया जा सके।युवा वृक्षारोपण अभियान चला सकता है ताकि वर्षा अधिक होती ,पानी भी संरक्षित रह सके।वह घर-घर में पानी के सही उपयोग की जानकारी दे सकताहै।

16 -ग्रीष्म में कम पानी वाले दिनों में गाँव-गाँव में डोलती मेढ़क-मंडली पर एक बाल्टी पानी उड़ेलना जीजी के विचार से पानी का बीज बोना हैं, कैसे?

उत्तर–जीजी का मानना है कि गरमी के दिनों में मेढक-मंडली पर एक बाल्टी पानी उड़ेलना पानी का बीज बोना है। वे कहती हैं कि जब हम किसी को कुछ देंगे तभी तो अधिक लेने के हकदार बनेंगे।इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वह हमें क्यों पानी देगा।ऋषि-मुनियों ने भी त्याग व दान की महिमा गाई है।पानी के बीज बोने से काले मेघों की फसल होगी जिस से गाँव, शहर, खेत-खलिहानों को खूब पानी मिलेगा।

17- जीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–लेखक ने जीजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं

(क) स्नेहशील-जीजी लेखक को अपने बच्चों से भी अधिक प्यार करती थीं।वे सारे अनुष्ठान, कर्मकांड लेखक से करवाती थीं ताकि उसे पुण्य मिलें।

(ख) आस्थावती-जीजी आस्थावती नारी थीं।वे परंपराओं, विधियों, अनुष्ठानों में विश्वास रखती थीं तथा श्रद्धा से उन्हें पूरा करती थीं।

(ग) तर्कशीला-जीजी अपनी बात के समर्थन में तर्क देती थीं।उनके तर्कों के सामने आम व्यक्ति पस्त हो जाता था।इंदर सेना पर पानी फेंकने के पक्ष में जो तर्क वे देती हैं, उनका कोई सानी नहीं।लेखक भी उनके समक्ष स्वयं को कमजोर मानताहै।

18- 'गगरी फूटी बैल पियासा' का भाव या प्रतीकार्थ देश के संदर्भ में समझाइए।

उत्तर– 'गगरी फूटी बैल पियासा' एक ओर जहाँ सूखे की ओर बढ़ते समाज का सजीव एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है वहीं यह देश की वर्तमान हालत का भी चित्रण करता है।यहाँ गाँव तथा आम लोगों के कल्याणार्थ भेजी अरबों-खरबों की राशि न जाने कहाँ गुम हो जाती है।भ्रष्टाचार का दानव इस समूची राशि को निगल जाता है और आम आदमी की स्थिति वैसी की वैसी ही रह जाती है अर्थात उसकी आवश्यकता रूपी प्यास अनबुझी रह जातीहै।

19- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं- स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–' काले मेघा पानी दे' संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें सत्य से परिचित कराता है।इस सत्य पर लोक-प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।लोगों में प्रचलित विश्वास इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते।

20- धर्मवीर भारती मेढ़क-मंडली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे?

उत्तर–लेखक धर्मवीर भारती मेढक-मंडली पर पानी डालना इसलिए व्यर्थ मानते थे क्योंकि चारों ओर पानी की घोर कमी थी।लोग पीने के लिए बड़ी कठिनाई से बाल्टी-भर पानी इकट्ठा कर के रखे हुए थे, जिसे वे इस मेढक-मंडली पर फेंककर पानी की घोर बर्बादी करते हैं।इससे देश की अति क्षति होती है।वह पानी को यूँ फेंकना अंधविश्वास के सिवाय कुछ नहीं मानने थे।

21-'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने लोक-मान्यताओं के पीछ छिपे किस तर्क को उभारा है? आप' भी अपने जीवन के अनुभव से किसी अंधविश्वास के पीछे छिपे तर्क को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'काले मेघा पानीदे" में लेखक ने लोक-मान्यताओं के पीछे छिपे उस तर्क को उभारा है, जिसके अनुसार ऐसी मान्यता हैं कि जब तक हम किसी को कुछ देंगे नहीं, तब तक उस से लेने का हकदार कैसे बन सकते हैं।उदाहरणतया, यदि हम इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वे हमें पानी क्यों देंगे।इंदर सेना पर बाल्टी भरकर पानी फेंकना ऐसी ही लोकमान्यता का प्रमाण है।हमारे जीवन के अनुभव से अंधविश्वास के पीछे छिपा तर्क यह है कि यदि काली बिल्ली रास्ता काट जाती है तो अंधविश्वासी लोग कहते हैं कि रुक जाओ, बादमें जाना पर मेरा तर्क यह है कि इसमें कोई सत्यता नहीं है।यह समय को बरबाद करने के अलावा कुछ नहीं है।

22-मेढ़क मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक और जीजी के विचारों में क्या भिन्नता थी?

उत्तर–मेढ़क मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक का विचार यह था कि यह पानी की घोर बर्बादी है।भीषण गर्मी में जब पानी पीने को नहीं मिलता हो और लोग दूर-दराज से इसे लाए हों तो ऐसे पानी को इस मंडली पर फेंकना देश का नुकसान है।इसकेविपरीत, जीजी इसे पानी की बुवाई मानती हैं।वे कहती हैं कि सूखे

के समय हम अपने घर का पानी इंदर सेना पर फेंकते हैं, तो यह भी एक प्रकार की बुवाई है।यह पानी गली में बो या जाता है जिसके बदले में गाँवों, शहरों में, कस्बों में बाद पानी की फसलआ जातीहै।

पहलवान की ढोलक
लेखक का नाम - फणीश्वरनाथ रेणु

पाठ का सार- पहलवान की ढोलक कहानी व्यवस्था-परिवर्तन के साथ लोक-कलाऔर इसके कलाकार के अप्रासंगिक होने की कहानी है| राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ़ व्यक्तिगत सत्ता-परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नई व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है।इसमें भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या है| यह कहानी लुट्टन सिंह पहलवान के जीवन पर आधारित है|माता-पिता की मृत्यु के बाद उसकी विधवा सास द्वारा उसके पालन-पोषण के बाद ढोल की ताल पर पहलवानी सीखी और अच्छा पहलवान बन गया|श्यामनगर के दंगल में चाँद सिंह को हराने पर राजा साहब द्वारा राज पहलवान की पदवी मिली।उसके बाद वह पंद्रह वर्ष तक अजेय रहा| कुछ समय बाद उसकी पत्नी का देहांत हो गया|उसके दोनों बेटे उसके साथ राजमहल में ही रहते थे और राज-दरबार के भावी-पहलवान घोषित हो चुके थे| उसने अपने बेटों को कुश्ती के साथ सांसारिक ज्ञान की शिक्षा भी दी और ढोल को गुरु बताया| राजा साहब की मृत्यु के बाद विलायत से आए राजकुमार के राजा बनने के बाद लुट्टन व उसके बेटों को राजमहल से निकाल दिया गया|इसके बाद लुट्टन व उसके बेटे अपने गाँव चले गए| उसके दोनों बेटे मजदूरी करते जिससे उनका जीवन-यापन होता था| गाँव में मलेरिया व हैज़े की महामारी और भुखमरी के कारण दिन में तो लोग कराहते हुए बाहर निकलते थे परन्तु रात्रि में केवल सियारों व कुत्तों के रोने की आवाज़ें ही आती थी| भीषण रात में पहलवान लुट्टन की ढोलक की आवाज़ गाँव के लोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी| भूख व महामारी से दोनों बेटों की मृत्यु के बाद उनको नदी में बहाने के पश्चात वह रात भर ढोलक बजाता रहा जिससे गाँव के लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई।चार-पाँच दिनों बाद एक रात ढोलक की आवाज़ नहीं आई , लुट्टन की मृत्यु हो गई थी|

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित गद्यांश 1 -

अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी।अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलाखिलाकर हँस पड़ते थे।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी।गांव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज 'हरे राम! हेभगवान!' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी।बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है।वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़ कर ,मनमारकर पड़े रहते थे।संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे।

1. निम्नलिखित कथन (क) तथा कारण (र) को पढ़कर सही विकल्प चुने |

कथन (क) निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।

कारण(र) -कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है।

विकल्प -(क) कथन (क) सही है, कारण (र) गलत है।

(ख) कथन (क) गलत है , कारण (र) सही है।

(ग) कथन (क) तथा कारण (र) दोनों सही है किंतु कारण (र) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(घ) कथन (क) तथा कारण (र) दोनों सही है तथा कारण (र) कथन (क) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर: **(ग) कथन (क) तथा कारण (र) दोनों सही है किंतु कारण (र) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।**

2. यह गद्यांश किस पाठ से अवतरित है?

(क) पहलवान की ढोलक (ख) बाजार दर्शन (ग) भक्तिन (घ) काले मेघा पानी दे

3.अँधेरी रात के वातावरण में क्या नहीं था?

(क) निस्तब्धता (ख) सिसकियाँ (ग) तारों की चमक (घ) कोलाहल

4. रात्रि की निस्तब्धता को कौन भंग कर देती थी?

(क) सियारों का क्रंदन (ख) पेचक की डरावनी आवाज

(ग) क-ख दोनों (घ) कोईनहीं

5. कुत्तों में क्या होती है?

(क) परिस्थिति को ताड़ने की विशेष बुद्धि (ख) वे राख के ढेर पर पड़े रहते हैं

(ग) वे रात को रोते हैं (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. इस पाठ के रचयिता कौन है?

(क) महादेवीवर्मा (ख) फणीश्वरनाथ रेणु (ग) जैनेंद्र कुमार (घ) धर्मवीरभारती

उत्तर. 1,क, 2. क, 3. घ, 4. ग , 5. क, 6.ख

पठित गद्यांश 2 -

जाड़े का दिन। अमावस्या की रात-ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी घास-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य अँधेरा और निस्तब्धता! अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों औरआहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

1 ठंडी और काली रात किसकी थी?

(क) सर्दी की (ख) गर्मी की (ग) अमावस्या की (घ) पूर्णिमा की

2 गांव भयार्त्त शिशु की तरह क्यों कांप रहा था?

(क) सर्दी से (ख) डर से (ग) हैजा एवं मलेरिया से (घ) अमावस्या के अँधेरे से

3 अंधकार और सन्नाटे का साम्राज्य कहां था?

(क) गांव में (ख) शहरों में (ग) झोपड़ियों में (घ) लुट्टन के घर में

4 खिलखिला कर कौन हंस पड़ते थे?

(क) भावुक तारे (ख) अन्य तारे (ग) चमकते तारे (घ) सभी तारे

5 **निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।**

कथन (अ) दुखी लोगों के प्रति संवेदनशीलता की भावना होनी चाहिए।

कारण (ब)दुखी व्यक्तियों के प्रति समाज के लोगों में संवेदनशीलता की भावना का अभाव है।

(क) कथन (अ) तथा कारण (ब) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (अ) गलत है तथा कारण कारण (ब) सही है।

(ग) कथन (अ) तथा कारण (ब) दोनों गलत है।

(घ) कथन (अ) सही है लेकिन कारण (ब) उसकी गलत व्याख्या करता है।

उत्तर 1-ग, 2-ग, 3-क, 4-ख , 5 घ

पठित गद्यांश 3 -

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी अवश्य ही ढोलक की आवास में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

1. रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था?

(क) सियारों की आवाजें (ख) तारों की जगमगाहट

(ग) पहलवान की ढोलक (घ) चांदनी रात

2. ढोलक की आवाज से गाँववालों की आँखों के आगे क्या नाचने लगता था ?

(क) मेले का दृश्य (ख) दंगल का दृश्य

(ग) मौत का दृश्य (घ) राजदरबार का दृश्य

3. पहलवान की ढोलक किसके लिए संजीवनी शक्ति का काम करती थी?

(क) कुश्ती लड़ने वालों के लिए (ख) मेहनत मजदूरी करने वालों के लिए

(ग) अर्धमृत, औषधि उपचार पश्य विहीन प्राणियों के लिए (घ) गाँव के बच्चों के लिए

4. पहलवान की ढोलक क्या करने में समर्थ नहीं थी?

(क) बुखार व महामारी को समाप्त करने में। (ख) जीविका का माध्यम बनने में।

(ग) गाँव वालों का मनोरंजन करने में। (घ) उपरोक्त सभी।

5. पहलवान की ढोलक पाठ के लेखक कौन है?

(क) प्रेमचंद्र (ख) फणीश्वर नाथ 'रेणु'

(ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर- 1- ग, 2- ख, 3-ग, 4-क, 5- ख

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1-कुश्ती को लोकप्रिय बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं? पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर लिखिए ।

उत्तर - कुश्ती को लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर परविभीन प्रतियोगिताएं करवाई जा सकती हैं,पुरस्कार राशि बधाई जा सकती है,पहलवानों को उचित प्रशिक्षण दिया जा सकता है,कुश्ती के प्रचार के लिए मीडिया का सहारा लिया जा सकता है।

2 - कोरोना काल में आपके गांव/ मोहल्ले की क्या स्थिति थी पहलवान की ढोलक पाठ में मलेरिया और हैजा पीडित गाँव वालों की दशा के साथ उसकी तुलना कीजिए.

उत्तर कोरोना काल में हमारे गांव / मोहल्ले की स्थिति अत्यंत दयनीय थी।घर से बाहर निकलना दूभर हो गया था।सभी लोगों द्वारा मास्क का प्रयोग किया जा रहा था।घर के बाहर सन्नाटा छाया रहता था।द्वितीय खण्ड का उत्तर छात्र अपने विवेक से देंगे।

3- शेर के बच्चे की उपाधि किसे मिली थी ? उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर- चांद सिंह को।वह जवान और सुंदर था।उसने तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों को पछाड़ दिया।

4 - लुटूटन के पक्ष में न तो राजमत था न बहुमत, फिर भी उसे कुश्ती में विजय प्राप्त कैसे हुई?

उत्तर -लुट्टन सिंह सुडौल शरीर वाला एक देहाती पहलवान था।उसने श्यामनगर के मेले में वहां के राजा की आज्ञा लेकर पंजाब के पहलवान चांद सिंह को पराजित किया। उसने ढोलक की आवाज का अनुसरण करते हुए चांद को पराजित किया।

5-लुट्टन सिंह को दरबार छोड़ने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा ?

उत्तर. राजा साहब की मृत्यु के बाद विलायत से आए नए राजकुमार ने लुट्टन को महल से निकाल दिया।इसी कारण लुट्टन को दरबार छोड़ना पड़ा।

6.पहलवान की ढोलक पाठ के माध्यम से लुट्टन ने क्या संदेश संप्रेषित किया है ?

उत्तर-इस पाठ के माध्यम से हमें संदेश मिलता है कि लोककलाएं अपने बल पर जीवित नहीं रह पाती।उनका विकास करने के लिए सामाजिक या सरकारी सहायता आवश्यकता रहतीहै।

7. कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था ? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर–कुश्ती के समय जब ढोलक बजती थी तो लुट्टन की रगों में अजीब-सी हलचल पैदा हो जाती थी। उसका खून हर थाप पर उबलने लगता था।उसे ढोल की थाप प्रेरणा देती थी।उनके दाँव-पेंचों में अचानक फुरती और गति बढ़ जाती थी। पाठ में कई ध्वन्यात्मक शब्दों का उल्लेख भी कहानीकार ने कियाहै। उदाहरण के लिए – चटाक -चट -धा, चटाक-चट-धा, धाक -तिना-तिरकिट-तिना, धाक -तिना-तिरकिट-तिना आदि

ये शब्द हमारे मन को रंजित करते हैं, साथ ही हमें यह प्रेरणा भी देते प्रतीत होते हैं।इन शब्दों से मन में कुछ करने की लालसा जोर मारने लगती है।परोक्ष रूप से ये शब्द शक्ति देतेहैं।

8. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवतन आए?

उत्तर –कहानी में अनेक मोड़ ऐसे हैं जहाँ पर लुट्टन के जीवन में परिवर्तन आते हैं। वे निम्नलिखित हैं-

1. बचपन में नौ वर्ष की आयु में उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई और उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। सास पर हुए अत्याचारों को देखकर बदला लेने के लिए वह पहलवानी करने लगा।
2. किशोरावस्था में उसने श्यामनगर दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराया तथा 'राज-पहलवान' का दर्जा हासिल किया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवानों को जमीन सुंघा दी तथा अजेय पहलवान बन गया।
3. वह पंद्रह वर्ष तक राज-दरबार में रहा। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवानी सिखाई। राजा साहब के अचानक स्वर्गवास के बाद नए राजा ने उसे दरबार से हटा दिया। वह गाँव लौट आया।
4. गाँव आकर उसने गाँव के बाहर अपना अखाड़ा बनाया तथा ग्रामीण युवकों को कुश्ती सिखाने लगा।
5. अकस्मात सूखा व महामारी से गाँव में हाहाकार मच गया। उसके दोनों बेटे भी इस महामारी की चपेट में आ गए। वह उन्हें कंधे पर लादकर नदी में बहा आया।
6. पुत्रों की मृत्यु के बाद वह कुछ दिन अकेला रहा और अंत में चल बसा।

9.लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि 'मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं यहीं ढोल है'?

अथवा

'पहलवान की ढोलक' पाठ केआधार बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?

उत्तर–वास्तव में, **लुट्टन** पहलवान का कोई गुरु नहीं था। जब पहली बार वह दंगल देखने गया तो वहाँ ढोल की थाप पर दांव-पेंच चल रहे थे।पहलवान ने इन थापों को ध्यान से सुनाऔर उसमें अजीब-सी ऊर्जा भर गई। उसने चाँद सिंह को ललकारा और उसे चित कर दिया।ढोल की थाप ने उसे दंगल लड़ने की प्रेरणा दीऔर वह जीत गया।इसीलिए उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं बल्कि यही ढोल है।

10. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर–गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल बजाता रहा। इसका कारण था -गाँव में निराशा का माहौल।महामारी व सूखे के कारण चारों तरफ मृत्यु का सन्नाटा था।घर-के-घर खाली हो गए थे।रात्रि की विभीषिका में चारों तरफ सन्नाटा होता था। ऐसे में उस विभीषिका को पहलवान की ढोलक ही चुनौती देती रहती थी। ढोलकी आवाज से निराश लोगों के मन में उमंग जगती थी। उनमें जीवंतता भरती थी। वह लोगों को बताना चाहता था कि अंत तक जोश व उत्साह से लड़ते रहो।

11.ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

अथवा

पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है?

अथवा

पहलवान की ढोलक साधनहीन गाँववालों के प्रति क्या भूमिका निभाती थी? कैसे?

उत्तर–ढोलक गाँव वालों के लिए संजीवनी का काम करती थी।उनके मन में छाई उदासी को दूर करने में सहायक थी।उनके मन में जिजीविषा पैदा हो जाती थी।ढोल की हर थाप से उनके मन में चेतना आ जाती थी।बूढ़े, बच्चे जवानों की आँखों में अचानक चमक भर जाती थी।स्पंदनहीन और शक्तिहीन रगों में अचानक बिजली की तरह खून दौड़ने लगता था।

12.महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर–सूर्योदय का दृश्य- महामारी फैलने की वजह गाँव में सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूंखते, कराहते अपने घरों से निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँडस देते थे।इस प्रकार उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी।वे बचे हुए लोगों को शोक न करने की बात कहते थे।

सूर्यास्त का दृश्य- सूर्यास्त होते ही सभी लोगअपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे।उस समय वे चूँ तक नहीं करते थे।उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी।यहाँ तक कि माताओं में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार'बेटा!" कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं होती थी।ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहतीथी।

13.कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शोक हुआ करता था।पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था-

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं हैं?

(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले लीहै?

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर–(क) अब न तो राजा रहे और न ही वे पहलवान।वास्तव में पहलवानी बहुत खर्चीला खेल है।फिर इसके लिए अभ्यास की नियमितआवश्यकता है।आजकल लोगों के पास इतना समय नहीं कि वे दिन में 18-20 कसरत करें फिर बदले में मिलता भी कुछ नहीं है।केवल नाम के सहारे पेट नहीं पल सकता।

(ख) कुश्ती की जगह अब घुड़सवारी, फुटबाल, क्रिकेट, टेनिस, बॉलीबाल, बेसबॉल आदि खेलों ने ली है।इन खेलों में पैसा और शोहरत दोनों हैं।फिर खेल से रिटायर होने के बाद भी जीविका बनी रहती है।

(ग) कुश्ती को यदि फिर से प्रिय खेल बनाना है तो इसके लिए राज्य और केंद्र दोनों सरकारों को योजना बनानी चाहिए।व्यायाम शालाएँ होनी चाहिए ताकि पहलवान कसरत कर सकें।अन्य खेलों की तरह ही जीतने वाले पहलवान को अच्छी खासी रकम इनाम में दी जानी चाहिए।यदि कोई पहलवान रिटायर हो जाए या दुर्घटना में उसे चोट लग जाए तो जीवन भर उसके लिए रोटी का प्रबंध किया जाना चाहिए।

14.आशय स्पष्ट करें–

आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी।अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर–लेखक अमावस्या की रात की विभीषिका का चित्रण करता है। महामारी के कारण गाँव में सन्नाटाहै । ऐसी स्थिति में कोई भावुक तारा आकाश से टूटकर अपनी रोशनी गाँव वालों को देना चाहे तो भी उसकी चमक व शक्ति रास्ते में ही खत्म हो जाती है।तारे धरती से बहुत दूर हैं। भावुक तारे की असफलता परअन्य तारे खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। दूसरे शब्दों में, स्थिर तारे चमकते हुए लगते हैं तथा टूटा हुआ तारा समाप्त हो जाताहै।

15 :पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गयाहैं । पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) "अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।निस्तब्धता सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।"

गाँव में छाई मायूसी को देखकर लगता था मानो अँधेरी रात भी रो रही है।ऐसा लगता था कि खाली पड़े आकाश में करुण कराहें वह अपने मन में दबा लेना चाहती हो ताकि गाँव का दुख कम हो सके।

(ख) "रात्रि अपने भीषणताओं के साथ चलती रही।"

यद्यपि गाँव का परिवेश भयानक और उदासी से भरपूर था। अतः रात भी इस मायूसी को समेटे अपनी गति से बीतती रही।

(ग) "रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी।" रात जो बहुत ही भयानक प्रतीत होती थी। अपने स्वाभाविक शोर से वह सभी को भयभीत कर देती थी। लेकिन पहलवान की ढोलक की थाप ने इस भयानकता को चुनौती दे डाली।

शिरीष के फूल
लेखक का नाम- हज़ारी प्रसाद द्विदेदी

पाठ का सारांश-'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' शिरीष को अद्भुत अवधूत मानते हैं, क्योंकि संन्यासी की भाँति वह सुख-दुख की चिंता नहीं करता। गर्मी, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है। शिरीष के फूल के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा, धैर्यशीलता और कर्तव्यनिष्ठ बने रहने के मानवीय मूल्यों को स्थापित किया गया है।लेखक ने शिरीष के कोमल फूलों और कठोर फलों के द्वारा स्पष्ट किया है कि हृदय की कोमलता बचाने के लिए कभी-कभी व्यवहार की कठोरता भी आवश्यक हो जाती है| महान कवि कालिदास और कबीर भी शिरीष की तरह बेपरवाह, अनासक्त और सरस थे तभी उन्होंने इतनी सुन्दर रचनाएँ संसार को दीं| गाँधीजी के व्यक्तित्व में भी कोमलता और कठोरता का अद्भुत संगम था | लेखक सोचता है कि हमारे देश में जो मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा? गुलामी, अशांति और विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए गाँधीजी जी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितयों मे भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह कर विकास कर सकता है।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न-

पठित गद्यांश 1 -

एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्‌भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख,वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना,न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं,तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था ? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी ज़रूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? कहते हैं कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे,दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को दिया,दूसरे ने रामायण को और तीसरे ने महाभारत को।

1. लेखक ने शिरीष के लिए' अवधूत' शब्द का प्रयोग क्यों किया है?

(क) विषय-वासनाओं से युक्त व्यक्ति के लिए

(ख) श्मशान में रहने वाले साधु के लिए

(ग) गरीब व दुःखी व्यक्ति के लिए

(घ) शिरीष को एक संन्यासी के समान बताने के लिए

2. कबीर किस प्रकार के कवि थे?

(क) मस्तऔर बेपरवाह (ख) सरसऔर मादक

(ग) क्रोधीऔर क्रूर **(घ) विकल्प(क)और(ख)दोनों**

3. लेखक नेअनासक्त योगी किसे कहा है?

(क) तुलसीदासको **(ख) कालिदासको**

(ग) मीराबाई (घ) वाल्मीकि को

4. गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(i) कवि को उस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जो अनासक्त न रह सके।

(ii) कवि को उस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जो फक्कड़ न बन सके।

(iii) लेखक के अनुसार कवि को उस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जो कार्य का लेखा-जोखा मिलाने में उलझा हो।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?

(क) I और II **(ख) केवल II** (ग) केवल III (घ) केवल I

5. 'मेघदूत' काव्य किसके द्वारा रचा गया ?

(क) कबीर द्वारा **(ख) लेखक द्वारा** (ग) वाल्मीकि द्वारा (घ) **कालिदास द्वारा**

उत्तर : 1- घ , 2- घ, 3 -ख, 4 -ख, 5 - घ

पठित गद्यांश 2-

शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरु-शुरु में प्रचार की होगी। उनका इस पुष्प पर कुछ पक्षपात था (मेरा भी है) कह गए है, शिरीष पुष्प भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं 'पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्त्रिणाम्"अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे करूँ? सिर्फ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था, यहाँ तो इच्छा भी नहीं है। मैं दूसरी बात कह रहा था। शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

1. शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कैसा माना गया है?

(क) कोमल (ख) मजबूत (ग) कठोर (घ) सख्त

2. किसे अपने स्थान से हटते न देखकर लेखक को पुराने नेताओं की याद आती है?

(क) पुराने फूलों को (ख) पुराने पत्तों को (ग) पुराने फलों को (घ) पुरानी डालों को

3. किस कवि का शिरीष के साथ पक्षपात रहा है?

(क) रहीमदास (ख)मलिक मुहम्मद जायसी

(ग)) कबीरदास (घ) कालिदास

4. शिरीष के फूल किसके पैरों का दबाव सहन कर सकते हैं?

(क) भोरों (ख) मानव

(ग) पक्षी (घ) जानवर

5. कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
1.कालिदास द्वारा प्रचारित	अ. पुष्प-पत्र से मर्मरित
2. नई पौध के	ब. शिरीष
3-वनस्थली	स. लोग

(क) I.अ 2ब 3.स (ख) 1ब 2अ 3.स (ग) 1.ब 2.स 3.अ (घ) 1.स 2.ब 3.अ

उत्तर (1) क (2) ग (3) घ (4) क (5) ग

पठित गद्यांश 3

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी- 'धरा को प्रमान यही तुलसी, जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे!

1. लेखक ने किसे अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य कहा है?

(क) अमृत व विष को (ख) सुख-दुख को

(ग)नवीन व प्राचीन को (घ) जय और मृत्यु को

2. उपर्युक्त गद्यांश में महाकाल देवता सपासप क्या चला रहे हैं?

(क) रथ (ख) कोडे (ग)घोड़े (घ) डंडे

3. धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा से झरा, जो बरा सो बुताना!' यह कथन किसका है?

(क) कबीरदास (ख) कालिदास (ग)तुलसीदास (घ)बिहारी

4. शिरीष के फूल को देखकर लेखक क्या सोचता है?

(क) संसार में कोई असर नहीं है। (ख) चलते रहना ही जीवन है।

(ग)जो स्थिर होता है, उसका जल्दी विनाश होता है। (घ)उपर्युक्त सभी

5. लेखक के अनुसार काल से बचाना है तो क्या होनी चाहिए?

(क) स्थायित्व (ख)जड़ता (ग)गतिशीलता (घ)उक्त सभी

उत्तर (1) घ, (2) ख, (3)ग, (4) घ, (5) ग

कथन और कारण पर आधारित प्रश्न

1.निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए, उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए

कथन: (A) शिरीष के वृक्ष सघन व छायादार होते हैं।

कारण: (R) शिरीष के वृक्ष की डाल अन्य वृक्षों की अपेक्षा कमजोर होती है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सहीहै।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनोंगलतहैं।
(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करताहै।

2.**निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए -**
कथन: (A) जेठ की जलती धूप में जब धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी।
कारण: (R) तब शिरीष का वृक्ष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था।
(क) कथन (A) औरकारण (R) दोनोंगलतहैं।
(ख) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सहीहै।

3.**निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए, उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए -**
कथन: (A) शिरीष कालजयी अवधूत की भांति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है।
कारण: (R) महात्मा गाँधी भी शिरीष के फूल की भांति प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखतेथे।
(क) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करताहै।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलतहैं।
(ग) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सहीहै।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4.- निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-
कथन (A):पुष्प या पेड़ अपने सौंदर्य से यह बताते हैं कि यह सौंदर्य अंतिम नहीं है।
कारण (R):भारतीय शिल्प कला विशेष रूप से प्रसिद्ध है।विभिन्न कवियों ने इस बात की पुष्टि की है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R)दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करताहै।
(ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R)सहीहै।
(ग) कथन (A) तथाकारण (R)दोनोंगलतहैं।
(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R)उसकी गलत व्याख्या करता है।

5 - निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए -

कथन (A):कर्णाट-राज की रानी ने ब्रह्मा,वाल्मीकि व व्यास को कवि माना।

कारण (R):क्योंकि इन्होंने क्रमशः वेदों की,रामायण की व महाभारत की रचना की है।

(क) कथन (A)सही है तथा कारण (R)कथन (A)की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A)सही है तथा कारण (R)गलतहै।

(ग) कथन (A)गलत है तथा कारण (R)सहीहै।

(घ) कथन (A)तथा कारण (R)दोनों गलतहैं।

उत्तर : 1.क 2. ग, 3.घ , 4. घ, 5, क

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1- सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है?

उत्तर- शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है| जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है|बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है | शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

2- आरग्वध (अमलतास) की तुलना शिरीष से क्यों नहीं की जा सकती ?

उत्तर- शिरीष के फूल भयंकर गरमी में खिलते हैं और आषाढ़ तक खिलते रहते हैं जबकि अमलतास का फूल केवल पन्द्रह-बीस दिनों के लिए खिलता है | उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते हैं और पेड़ फिर से ठूँठ का ठूँठ हो जाता है | अमलतास अल्पजीवी है | विपरीत परिस्थितियों को झेलता हुआ ऊष्ण वातावरण को हँसकर झेलता हुआ शिरीष दीर्घजीवी रहता है | यही कारण है कि शिरीष की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती |

3- शिरीष के फलों को राजनेताओं का रूपक क्यों दिया गया है?

उत्तर- शिरीष के फल उन बूढ़े, ढीठ और पुराने राजनेताओं के प्रतीक हैं जो अपनी कुर्सी नहीं छोड़ना चाहते | अपनी अधिकार-लिप्सा के लिए नए युवा नेताओं को आगे नहीं आने देते | शिरीष के नए फलों को जबरदस्ती पुराने फलों को धकियाना पड़ता है | राजनीति में भी नई युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को हराकर स्वयं सत्ता सँभाल लेती है |

4- काल देवता की मार से बचने का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर- काल देवता कि मार से बचने का अर्थ है- मृत्यु से बचना | इसका एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्य स्थिर न हो| गतिशील, परिवर्तनशील रहे | लेखक के अनुसार जिनकी चेतना सदा ऊर्ध्वमुखी (आध्यात्म की ओर) रहती है, वे टिक जाते हैं |

5- गाँधीजी और शिरीष की समानता प्रकट कीजिए |

उत्तर- जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है, अनासक्त रहकर अपने वातावरण से रस खींचकर सरस, कोमल बना रहता है, उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपनी आँखों के

सामने आजादी के संग्राम में अन्याय, भेदभाव और हिंसा को झेला| उनके कोमल मन में एक ओर निरीह जनता के प्रति असीम करुणा जागी वहीं वे अन्यायी शासन के विरोध में डटकर खड़े हो गए|

6- लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है?

उत्तर:-लेखक नेशिरीष को कालजयीअवधूत की तरह माना है क्योंकि जिस प्रकार संन्यासी किसी भी स्थिति तथा युग में विचलित नहीं होता उसी प्रकार शिरीष के फूल तेज लू या उमस में भी खिले रहतेहै। वे जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करतेहै। वसंत के आगमन के साथयह लहक उठता हैऔरआषाढ-भादों तक फलता - फूलता रहता है । जब उमस से प्राण उबलते है,लू से हृदय सूखता है तब शिरीष ही एकमात्र कालजयीअवधूत की भांति अजेय बना रहता है।शिरीष एक ऐसे अवधूत के सामान है जो दुख हो या सुख में हार नही मानता ।

7- हाय! वह अवधूत कहाँ है? लेखक ने यहाँ किसे स्मरण किया है क्यों? ऐसा कह कर लेखक ने आत्मबल पर देह बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के किस संकट की ओर संकट की ओर संकेत किया है ?

उत्तर: - हाय ! वह अवधूत कहाँ है? ऐसा कह कर लेखक ने महात्मा गांधी को स्मरण किया है क्योंकि आज के हिंसा के युग में जब मार- काट, अग्निदाह, लूट-पाट, का बवंडर बह गया है,देहबलहावी हो रहा है। आज का मनुष्य मूल्यों को त्यागकर हिंसा, असत्य आदि गलत प्रवृतियों को अपनाकर ताकत का प्रदर्शन कर रहा है।ऐसी स्थिति किसी भी सभ्यता के लिए संकट की स्थितिहै। ऐसे में लेखक ने सत्य और अहिंसा के पुजारीगांधी जी को याद करउनके मूल्यों की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता को रेखांकित किया है।

8- हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है-शिरीष के फूल के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर - सज्जनों के हृदय जनित भावों को वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल माना जाता है। शिरीष का फूल भी वायुमंडल का रस खींचकर इतना कोमल बना है कि वह केवल भौंरों के पदों का दबाव ही सह सकता है और उसके फल इतने कठोर होते हैं कि नए फल आने तक अपना स्थान नहीं छोड़ते व इसकी लकड़ी इतनी मजबूत अवश्य होती है कि उस पर झूला डाला जा सके।

9- द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल होकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर- शिरीष गर्मी, लू, वर्षा और आंधी में भी अविचल खड़ा रहता है। वह तब भी लहलहाता है, जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है। शिरीष से सीख लेते हुए लेखक सोचता है कि हमारे देश में जो मार-काट, अग्नि-दाह, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा? गुलामी, अशांति और विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए गांधीजी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितियों में भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह सकता है। इस प्रकार द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल होकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है।

10-कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर - गांधीजी अहिंसावादी थे। सत्य, अहिंसा, दया, धर्म, सहिष्णुता, परोपकार, स्नेह, सहानुभूति आदि भाव उनके कोमल व्यक्तित्व के परिचायक हैं। दूसरी ओर उन्होंने किसी भी स्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उन्होंने मार-काट, अग्निकांड, लूटपाट जैसी विषम परिस्थितियों से निपटने के लिए कठोरता का परिचय दिया। अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए वे स्वयं अनशन पर चले जाते थे और विपरीत परिस्थितियों को काफी हद तक रोकने में सफल हुए। इस प्रकार कोमल और कठोर दोनों भाव गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

11-लेखक ने 'एक बूढ़ा' किसे कहा है?किस संदर्भ में उनका उल्लेख किया गया है?

उत्तर - लेखक ने एक बूढ़ा महात्मा गांधी को कहा है। उनका उल्लेख समाज में फैली अशांति और विरोधी वातावरण के संदर्भ में किया गया है। गांधीजी ने देश में हिन्दू-मुसलमानों में व्याप्त घृणा, ईर्ष्या, खून-खराबे, हत्या, लूटपाट, आगजनी के वातावरण में भी अपने सिद्धांतों की रक्षा की और अपने आत्मबल के आधार पर देहबल को पराजित कर संघर्ष करते रहे।

12- वर्तमान समाज की उथल-पुथल के संदर्भ में शिरीष वृक्ष से क्या प्रेरणा ली जा सकती है?

उत्तर - वर्तमान समाज में मच रही मार-काट, अग्निकांड, लूट-पात, उथल-पुथल आदि अशांतिकर परिस्थितियों के संदर्भ में शिरीष के पेड़ से मनुष्य स्थिर, सरस और मस्त बने रहने की प्रेरणा ले सकता है।

13- शिरीष के फूल को 'शीतपुष्प' भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गर्मी में फूलने वाले फूल को 'शीतपुष्प' संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर - शिरीष का फूल प्रचंड गर्मी, लू, और आंधी में भी खिला रहता है। विषम परिस्थितियों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ग्रीष्म ऋतु में जब सब कुछ झुलस जाता है तब शिरीष का फूल शीतलता प्रदान करता है इसलिए गर्मी में शीतलता प्रदान करने के आधार पर ही शिरीष के फूल को 'शीतपुष्प' कहा गया होगा।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

लेखक का नाम - बाबा साहेब भीमरावआंबेडकर

श्रम विभाजन और जाति-प्रथा पाठ का सार:-

भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज: पाठ का सार

इस पाठ में लेखक ने बताया है कि आदर्श समाज में तीन तत्व अनिवार्यत: होने चाहिए-समानता, स्वतंत्रता व बंधुता। इनसे लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के अर्थ तक पहुँच सकता है। सारांश-लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत्त पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता,

संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है।

मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है -

i शारीरिक वंश परंपरा,

ii सामाजिक उत्तराधिकार,

iii मनुष्य के अपने प्रयत्न।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उत्तम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वश में है, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अत: वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

पठित गद्यांश-01

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं हैं। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य - कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति -प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है, इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक - विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक वजन नहीं करती। भारत की जाति प्रथा की एक और शेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

1 आधुनिक युग में भी किसके पोषकों की कमी नहीं है?

(क) धर्मवाद के (ख)जातिवाद के (ग) भाषावाद के (घ) संप्रदायवाद के

2 कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए, और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	कॉलम 2
1.जातिवाद	A. श्रम विभाजन के लिए आवश्यक
2.विश्व के किसी भी समाज में	B. विडंबना
3. कार्यकुशलता	C. ऊँच-नीच का स्थान नहीं है

(क) 1.B 2.C 3.A (ख) 1.A 2.B 3.C

(ग) 1.B 2.0 3.C (घ) 1.C 2.A 3.B

3 कौन-सा समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम- विभाजन को आवश्यक मानता है?

(क) आधुनिक असभ्य समाज (ख) पुरातन सभ्य समाज

(ग) आधुनिक सभ्य समाज (घ) मध्यकालीन समाज

4 जाति प्रथा किसका दूसरा रूप है?

(क) कार्य कुशलता का (ख) श्रम विभाजन का

(ग) देश-विभाजन का (घ) सभ्य समाज का

5 भारत की जाति प्रथा क्यों आपत्तिजनक है? यह-

(क) श्रम-विभाजन के साथ श्रमिक विभाजन भी करती है

(ख) जाति प्रथा को प्रमुखता देती है।

(ग) कार्य कुशलता के साथ श्रम विभाजन करती है।

(घ) श्रम विभाजन के साथ श्रमिक विभाजन नहीं करती।

उत्तर:- 1.ख, 2. क, 3. ग, 4. ख, 5.क

पठित गद्यांश-02

श्रम विभाजन की दृष्टि से जाति-प्रथा प्रथा गम्भीर दोषों से युक्त है | जाति-प्रथा श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता है |मनुष्य की व्यक्तिगत भावना का इसमें कोई महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित' कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा

हानिकारक प्रथा है। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

1.श्रम विभाजन की दृष्टि से किसे दोषपूर्ण माना गया है?

(क) व्यक्तिगत भावनाओं को (ख) व्यक्तिगत रुचि को

(ग) जाति प्रथा को (घ) कार्य कुशलता को

2. कैसी स्थिति मनुष्य में काम टालने या कम काम करने की प्रवृत्ति जाग्रत करती है?

(क) कार्य के प्रति रुचि (ख) कार्य के प्रति अरुचि

(ग) कार्य की अधिकता (घ) कम वेतन

3. जाति प्रथा को किससे ज्यादा हानिकारक माना गया है?

(क) सामाजिक प्रथा से (ख) दहेज प्रथा से

(ग) आर्थिक असमानता से (घ) वर्ग-भेद से

4. जाति प्रथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उसे कैसा बना देती है?

(क) सक्रिय (ख) गतिशील (ग) क्रियाशील (घ) निष्क्रिय

5. जब व्यक्ति दिल और दिमाग से काम नहीं करता, तो उस काम में क्या प्राप्त नहीं होती?

(क) क्षमता (ख) कुशलता (ग) कर्मशील (घ) सक्रियता

उत्तर 1.ग, 2. क, 3. ग, 4.घ, 5.ख

गद्यांश-03

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिएँ। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो ।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्पों का चयन कीजिए-

1. अम्बेडकर किस समाज को आदर्श मानते हैं?

(क) जिसमे स्वतन्त्रता हो। (ख) जिसमें भाईचारा हो ।

(ग) जिसमे समानता हो (घ) ये सभी।

2. अबाध सम्पर्क से लेखक का क्या तात्पर्य है?

(क) बिना बाधा के सम्पर्क (ख) बाधा सहित सम्पर्क

(ग) गतिशीलहीन सम्पर्क (घ) सबके साथ सम्पर्क

3. 'भाईचारे' का दूसरा नाम क्या है?

(क) लोकतन्त्र (ख) भ्रातृता

(ग) राजतन्त्र (घ) समूह

4. गतिशीलता अबाध सम्पर्क और दूध पानी के मिश्रण में कौन-सी समानता है?

(क) सबसे मेल-मिलाप (ख) उदारतापूर्वक मेल-मिलाप

(ग) बिना गति मिलना (घ) प्रेमपूर्वक मिलना

5. डॉ. अम्बेडकर समाज में कैसा भाईचारा चाहते थे?

(क) जिसमे दूध-पानी जैसा मिश्रण हो । (ख) जिसमे आग पानी जैसा मिश्रण हो ।

(ग) जिसमें किसी को स्वतन्त्रता न हो। (घ) जिसमें गतिशीलता न हो।

उतर : 1-घ, 2-क, 3-ख, 4-ख, 5-क

कथन और कारण पर आधारित प्रश्न-

1.कथन- जातिवाद पौषक जातिवाद का समर्थन करतेहैं।

कारण- आधुनिक सभ्यसमाज कार्य-कुशलता' केलिएश्रम विभाजन कोआवश्यकमानताहै।

(क) कथनऔर कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या है।

ख) कथनऔर कारण दोनों सही है परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करताहै।

(ग) कथन सही है, कारण गलतहै।

(घ) कथन गलतहै. कारण सहीहै।

2. कथन- भारत की जाति व्यवस्था विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

कारण-यह श्रमिकों काअस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित वर्गों को एक - दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है।

(क) कथनऔर कारण दोनों सही हैऔर कारण कथन की सही व्याख्या करताहै।

(ख) कथनऔर कारण दोनों सही है, परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, कारण गलत है।

(घ) कथन गलतहै, कारण सहीहै।

3.कथन- भारत की जातिप्रथा स्वाभाविक विभाजन नहीं है।

कथन -यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

(क) कथनऔर कारण दोनों सही है और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथनऔर कारण दोनों सही है परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, कारण गलत है।

(घ) कथन गलत है, कारण सहीहै।

4. कथन (A): डॉक्टर अंबेडकर जी ने अपने आदर्श समाज के भाईचारा में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है।

कारण (R): समाज स्त्रीऔरपुरुष दोनों से ही बनता है।

(क) कथन **A** और कारण दोनो सही है और कारण, कथन **A** की सही व्याख्या है।

(ख) कथन **A** और कारण दोनों सही हैऔर कारण **R.** कथन **A** की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन **A** सही है, किंतु कारण **R** गलत है।

(घ) कथन **A** गलतहै, किंतु कारण सही है।

5. कथन (A): जातिप्रथा आधारित भारतीय समाज में कोई कमी नहीं है।

कारण (R): भारतीय समाज में जातियों के आधार पर जीवन के अनेक क्षेत्र में भेदभावपूर्ण व्यवहार होता है जो एक शब्द समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता है।

(क) कथन **A** और कारण दोनो सही हैंऔर कारण, कथन **A** की सही व्याख्या है।

(ख) कथन और कारण दोनों सही हैऔर कथन **A** की सही व्याख्या नहीं

(ग) कथन **A** सहीहै, किंतु कारण **R** गलत है ।

(घ) कथन **A** गलत है, किंतु कारण सही है।

6. कथन: (A) अंबेडकर जी भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि की आधार पर जातिवाद का उन्मूलन चाहते हैं।

कारण :(R) डॉक्टर अंबेडकर जी ने जातिवाद के उन्मूलन हेतु तथा भावनात्मक समता के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का समर्थन किया है।

(क)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या है।

(ख)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग)कथन A सही है, किंतु कारण R गलत है

(घ)कथन A गलत है, किंतु कारण R सही है

7. कथन: (A) सभी मनुष्य बराबर नहीं होते हैं।

कारण: (R) शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार व मनुष्य के अपने प्रयत्न के कारण अंतर होता है।

(क)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ख)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या है।

(ग)कथन A सही है, किंतु कारण R गलत है।

(घ)कथन A गलत है, किंतु कारण R सही है ।

8. कथन (A): डॉक्टर अंबेडकर जी ने अपने आदर्श समाज के भाईचारा में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है।

कारण (R): समाज स्त्री और पुरुष दोनों से ही बनता है।

(क)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ख)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या है।

(ग)कथन A सही है, किंतु कारण R गलत है।

(घ)कथन A गलत है, किंतु कारण R सही है।

9. कथनः फ्रांसीसी क्रांति के नारे में समता विवाद का विषय रहा है।

कारण : फ्रांसीसी क्रांति का समता से कोई संबंध नहीं है

(क)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ख)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या है।

(ग)कथन A सही है, किंतु कारण R गलत है।

(घ)कथन A गलत है, किंतु कारण R सही है।

10. कथन: राजनीतिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन और अवसर उपलब्ध है।
कारण राजनीति से व्यक्ति और समाज में भ्रष्टाचार फैलता है।

(क)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ख)कथन A और कारण R दोनो सही हैं और कारण R, कथन A की सही व्याख्या है।

(ग)कथन A सही है, किंतु कारण R गलत है।

(घ)कथन A गलत है, किंतु कारण R सही है ।

उत्तर : 1 क 2 क 3 क 4 क 5 घ6-क 7-ख 8-क 9-ख 10-ग

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर (2 व 3 अंकवाले)

1 - जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास

और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।

ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिंदू धर्म की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्राय है। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है।

2. जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप नहीं मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर- जाति विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं-प्रथा को श्रम-

- जाति-प्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी करती है।
- सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है।
- भारत की जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता। वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार करके जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है।

3.आंबेडकर ने जाति प्रथा के भीतर पेशे के मामले में लचीलापन न होने की जो बात की है-उस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब समान भौतिक स्थितियाँ व जीवन-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। समाज में जाति-प्रथा का उन्मूलन समता का भाव होने से ही हो सकता है। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। शहर में कान्वेंट स्कूल व सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के बीच स्पर्धा में कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी ही जीतेगा क्योंकि उसे अच्छी सुविधाएँ मिली हैं। अत: जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

4. 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' के तीन प्रमुख स्तंभों का विस्तार सहित अपनी भाषा में वर्णन कीजिए|

उत्तर- स्वतन्त्रता, समानता एवं भाईचारा 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' के तीन प्रमुख स्तंभ हैं |

1. स्वतन्त्रता:- देश एवं समाज में स्वतन्त्रता होगी तभी मानवीय खुशहाली का वातावरण बनेगा| व्यक्ति की स्वतन्त्रता से ही एक मनुष्य में आत्मविश्वास जागृत होता है | स्वतंत्र वातावरण में ही मनुष्य को व्यक्तित्त्व विकास का अवसर मिल पाता है |

2. समानता:- समानता अर्थात भेदभाव रहित वातावरण में ही समस्त का विकास साथ साथ हो पाता है | जाति,वर्ण, लिंग एवं रंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं हो |

3.भाईचारा:- समाज में आपस में भाईचारा होना अति आवश्यक है| बिना बंधुत्त्व की भावना के समाज में सरकार द्वारा दिए गए समान अवसरों का विकास में समुचित उपयोग नहीं हो सकता |

5 श्रम-विभाजन के विषय में लेखक क्या कहता है?

उत्तर - श्रम-विभाजन के विषय में लेखक कहता है कि आधुनिक समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु कोई भी सभ्य समाज श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करता।

6- श्रम-विभाजन व श्रमिक-विभाजन में क्या अंतर हैं?

उत्तर - 'श्रम-विभाजन' का अर्थ है-अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण। 'श्रमिक-विभाजन' का अर्थ है-जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निश्चित कर देना।

7 - लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्शा समाज की धुरी माना हैं और क्यों?

उत्तर - लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो। उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिएँ तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

8 - भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - भ्रातृता' का अर्थ है-भाईचारा। लेखक ऐसा भाईचारा चाहता है जिसमें बाधा न हो। सभी सामूहिक रूप से एक-दूसरे के हितों को समझे तथा एक-दूसरे की रक्षा करें।

9 - अबाध संपर्क ' से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- 'अबाध संपर्क' का अर्थ है-बिना बाधा के संपर्क। इन संपकों में साधन व अवसर सबको मिलने चाहिए।

11-आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेंगी?

उत्तर:लेखक ने अपने आदर्श समाज में भ्रातृता के अंतर्गत स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। भ्रातृता से अभिप्राय भाईचारे की भावना अथवा विश्व बंधुत्व की भावना से है। जब यह भावना किसी व्यक्ति विशेष या लिंग विशेष की है ही नहीं तो स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। आखिर स्त्री का स्त्री के प्रति प्रेम भी तो बंधुत्व की भावना को ही प्रकट करता है। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि यह शब्द पूर्णता का द्योतक है।

12.डॉ० भीमराव की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में समझाइए। आदर्श सामाज की स्थापना में डॉ० आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर: डॉ० भीमराव आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें निम्नलिखित हैं -उनका यह आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा।उस समाज में गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके।ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होगा तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।सामाजिक जीवन में अवाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। डॉ० आंबेडकर के विचार निश्चित रूप से क्रांतिकारी हैं, परंतु व्यवहार में

यह बेहद कठिन हैं। व्यक्तिगत गुणों के कारण जो वर्ग समाज पर कब्ज़ा किए हुए हैं, वे अपने विशेषाधिकारों को आसानी से नहीं छोड़ सकते। यह समाज कुछ सीमा तक ही स्थापित हो सकता है।

13- लोकतंत्र से लेखक को क्या अभिप्राय है?

उत्तर: लेखक कहता है कि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। यह मूलतः सामूहिक दिनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का लाभ प्राप्त है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। उनका मानना है कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का नाम ही लोकतंत्र है। इसमें सभी का सहयोग होना चाहिए।

14. डॉ० आंबेडकर 'समता' को काल्पनिक वस्तु क्यों मानते हैं?

उत्तर: डॉ० आंबेडकर का मानना है कि जन्म, सामाजिक स्तर, प्रयत्नों के कारण भिन्नता व असमानता होती है। पूर्व समता एक काल्पनिक स्थिति है। इसके बावजूद वे सभी मनुष्यों को विकसित होने के समान अवसर देना चाहते हैं। वे सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार चाहते हैं|

वितान भाग 2

सिल्वर वैडिंग

लेखक का नाम -मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सारांश 'सिल्वर वेडिंग' कहानी की रचना मनोहर श्याम जोशी ने की है। इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है। आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं। उनका उसूल पसंद होना दफ्तर एवं घर के लोगों के लिए सरदर्द बन गया था। यशोधर बाबू को दिल्ली में अपने पाँव जमाने में किशनदा ने मदद की थी, अतः वे उनके आदर्श बन गए।दफ्तर में विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह के दिन दफ्तर के कर्मचारी, मेनन और चड्ढा उनसे जलपान के लिए पैसे माँगते हैं। जो वे बड़े अनमने ढंग से देते हैं क्योंकि उन्हें फिजूलखर्ची पसंद नहीं। यशोधर बाबू के तीन बेटे हैं। बड़ा बेटा भूषण, विज्ञापन कम्पनी में काम करता है। दूसरा बेटा आई. ए. एस. की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृति के साथ अमेरिका जा चुका है। बेटी भी डाक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है, वह विवाह हेतु किसी भी वर को पसंद नहीं करती। यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश हैं किंतु परंपरागत संस्कारों के कारण वे दुविधा में हैं। उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के साथ ढाल लिया है। आधुनिक न होते हुए भी, बच्चों के ज़ोर देने पर वे अधिक माडर्न बन गई है।बच्चे घर पर सिल्वर वेडिंग की पार्टी रखते हैं, जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था। उनका बेटा उन्हें ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है तथा सुबह दूध लेने जाते समय उसे ही पहन कर जाने को कहता है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता। बेटे का ज़रूरत से ज़्यादा तनख्वाह पाना, तनख्वाह की रकम स्वयं खर्च करना, उनसे किसी भी बात पर सलाह न माँगना और दूध लाने का जिम्मा स्वयं न लेकर उन्हें ड्रेसिंग गाउन पहनकर दूध लेने जाने की बात कहना जैसी बातें, यशोधर बाबू को बुरी लगती है। जीवन के इस मोड़ पर वे स्वयं को अपने उसूलों के साथ अकेले पाते हैं।

पाठ पर आधारित 5 अंक के प्रश्नोत्तर -

1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं।ऐसा क्यों?

उत्तर- यशोधर बाबू बचपन में ही माता-पिता के देहांत हो जाने की वजह से जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। वे सदैव पुराने ख्यालों वाले लोगों के बीच रहे, पले, बढ़े। यशोधर बाबू अपने आदर्श घोर संस्कारी किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं।अतः वे उन परंपराओं को चाहकर भी छोड़ नहीं पाये।इन्हीं सब कारणों से परिवार के सदस्यों से उनका मतभेद बना रहता है; जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है । विवाह के बाद उसे संयुक्त परिवार के कठोर नियमों का निर्वाह करना पड़ा। इसलिए वह अपने बच्चोंके आधुनिक दृष्टिकोण से जल्दी ही प्रभावित हो गई।वे बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती हैंऔर बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती। यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित हो जाती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं। वे बदलते समय को समझते तो हैं किन्तु पूरे मन से स्वीकार न कर पाने के कारण असफल रहते हैं।

2. सिल्वर वेडिंग पाठ में "जो हुआ होगा" वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर- 'जो हुआ होगा' एक भाव है, उस बात को समाप्त करने का जिसमें आपका मन नहीं लगता है। जो हुआ होगा के मेरे अनुसार निम्नलिखित अर्थ छवियाँ हो सकती हैं-

- जो बीत गया, वह लौटकर नहीं आता।
- मनुष्य का आत्मसम्मान समाप्त हो जाता है।
- मनुष्य जीवन में निराशा का भाव इन पंक्तियों के भाव से दिखाई देता है। असहाय तथा एकाकीपन का अनुभव होता हैं।

3. "समहाउ इंप्रापर" वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रांरभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं।इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर- यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रांरभ में 'समहाउइंप्रापर' शब्द का उपयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं।उन्हें जो अनुचित लगता है, तबअचानक यह वाक्य कहतेहैं।

पाठ में 'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग निम्नलिखित संदर्भो में हुआ है-

- दफ़्तर में सिल्वर वैडिंग की पार्टी देने की मांग पर
- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- स्कूटर की सवारी पर
- पत्नी एवं पुत्री के पहनावे पर
- डीडीए फ्लैट का पैसा न भरनेपर
- खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
- छोटे साले के ओछेपन पर
- केक काटने की विदेशी परंपरा परआदि

इन सन्दर्भों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं।यशोधरबाबू आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्योंऔर संस्कारों के विरूद्ध हैं। वे उन्हें अपनाना नहीं चाहते, इसी आदत के कारण प्रायः परिवार

से उनका मन मुटाव बना रहता है और असहजता एवं अस्वाभाविक स्थिति में यह वाक्यांश उनके मुँह से निकल पड़ता है।

4.यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।आपके जीवन को दिशा देने में किस का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?

उत्तर- जिस प्रकार यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसे ही मेरे जीवन को दिशा देने में मेरी दादी का हाथ रहा है। मैं यह तय नहीं कर पा रहा था कि मैं दसवीं के बाद किस विषय पर आगे पढ़ाई करूँ।माता-पिता मुझे मेडिकल के लिए तैयार करना चाहते थे और मैं मेडिकल के लिए स्वयं को उचित नहीं पाता हूँ।तब मुझे दादी ने समझाया कि माता-पिता को झूठी उम्मीद देने से अच्छाहै, उन्हें वो उम्मीद दो जो तुम कर सकते हो।उनकी यह बात मेरे दिल को छू गई।मैंने अपने माता-पिता को बताया कि मैं आगे चलकर सी.ए. के लिए तैयारी करना चाहता हूँ। मेरी बात से वे बहुत प्रसन्न हुए और तैयार हो गए। आगे चलकर मैंने दादी को अपना आदर्श बनाया।उनके विचारों तथा जीवन शैली को समझने का प्रयास किया और जो मुझे अच्छा लगता चला गया, उसेअपना लिया।आज में खुश हूँ मैंने जो निर्णय लिया था, वह बिलकुल सही था।

5.वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी (सिल्वरवेडिंग) से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर- इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है।आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं। उनका उसूल पसंद होना दफ्तर एवं घर के लोगों के लिए सिरदर्द बन गया था। यशोधर संस्कारों से जुड़ना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। वे पुरानी मान्यताओं को नहीं मानते हैं। इन सब वजहों से उनके और उनके परिवार के बीच हमेशा मतभेद बना रहता है।
अतः मेरे मत से पुरानी-पीढ़ी को कुछ आधुनिक होना पड़ेगा और नई-पीढ़ी को भी पुरानी परंपराओं और मान्यताओं का ख्याल रखना होगा,ये तभी संभव है जब दोनों पक्ष एक दूसरे का सम्मान करेंगे एवं सुख-सुविधा का ख्याल रखेंगे।

6.निम्नलिखित में से किसे आप सिल्वर वेडिंग कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगीऔरक्यों?

1. हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य
2. पीढ़ी काअंतराल
3. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

उत्तर- उपरोक्त तीनों मूल्यों में मुझे पीढ़ी का अंतराल प्रतीत होता है।यशोधर बाबू किशनदा की तरह जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।किशनदा पुरातनपंथी थे।

जबकि यशोधर बाबूकेबच्चे आधुनिक पीढ़ी के हैं और स्वयं आत्मनिर्भर भी है।वे अपने अनुसार खर्च और जीवन यापन करते हैं। उनकी माँ भी उनका समर्थन करतीहैं। इसप्रकार जीवन में यशोधर बाबू अकेले पड़ जातेहैं। उनके जीवन में अनिर्णय की स्थिति बनी रहती है। यह मात्र पीढ़ियों के अंतराल के कारण है। पुरानी पीढ़ी संयुक्त परिवार का समर्थन करती है।वहीं नयी पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हैं।

प्रश्न-7 अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुज़ुर्गों को अच्छे नहीं लगते।अच्छा न लगने के क्या कारण होंगे?

उत्तर- हमारे घर व विद्यालय के आस-पास निम्नलिखित बदलाव हो रहे हैं जिन्हें बुजुर्ग पसंद नहीं करते-

1. युवाओं द्वारा मोबाइल का प्रयोग करना।
2. युवाओं द्वारा पैदल न चलकर तीव्र गति से चलाते हुए मोटर-साइकिल या स्कूटर का प्रयोग।
3. लड़कियों द्वारा जीन्स व शर्ट पहनना।
4. लड़के-लड़कियों की दोस्ती व पार्क में घूमना।
5. खड़े होकर भोजन करना।
6. तेज आवाज में संगीत सुनना।
7. प्रात: काल में देर से उठना।

प्रश्न-8 यशोधरबाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए-

1. यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं है।
2. यशोधरबाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की ज़रूरत है।
3. यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व है और नयी पीढ़ी द्वारा उनके विचारों का अपनाना ही उचित है।

उत्तर- यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की ज़रूरत है। प्रस्तुत पाठ में अनेक ऐसे प्रसंग आये है जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है। मेरा मेरे छोटे भाई के साथ भी कुछ यही अनुभव है। मेरा छोटा भाई मुझसे सात साल छोटाहै। उसकी और मेरी सोच में अभी से यह अंतर देखने को मिलताहै। मैंने जहाँ आठवीं कक्षा में कंप्यूटर सीखना आरंभ किया था, वह आठ साल में लैपटॉप पर काम कर रहा है। वह मुझसे ज़्यादा आधुनिक चीज़ों के विषय में जानकारी रखता है। आज वह ग्यारह साल काहै। उसकी बातें मेरी बातों से अधिक रोचक होतीहैं। मैं उसके साथ बातें करना चाहता हूँ लेकिन मेरा बड़ापन मुझे उसकी ओर जाने नहीं देता है। अतः मैं यशोधर बाबू की स्थिति को समझ सकता हूँ।

9. यशोधर बाबू बार-बार किशनदा को क्यों याद करते हैं? इसे आप उनका सामर्थ्य मानते हैं या कमज़ोरी? सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू किशनदा के आदर्श का त्याग क्यों नहीं पाते?

उत्तर- यशोधर बाबू किशनदा को बार-बार याद करते हैं। उनका विकास किशनदा के प्रभाव से हुआ है। वे किशनदा की प्रतिच्छायाहैं। यशोधर छोटी उम्र में ही दिल्ली आगए थे। किशनदा ने उन्हें घर में आसरा दिया तथा नौकरी दिलाई यशोधर बाबू उनकी हर बात काअनुकरण करते थे।उन्होंने यशोधर को सामजिक व्यवहार सिखाया किशनदा उन्हें जिन्दगी के हर मोड़ पर सलाह देते थे।इस कारण उन्हें किशन दा की याद बार-बारआती थी। सहयोगियों के साथ संबंध हों, सुबह की सैर हो, शाम को मंदिर जाना, पहनने-ओढ़ने का तरीका, किराए के मकान में रहना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाने की बातआदि, बात कहकर मुस्कराना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जानाआदि सभी पर किशनदा का प्रभाव है। बेटे द्वारा ऊनी गाउन उपहार में देने पर उन्हें लगता है कि उनके अंगों में किशनदा उतर आए हैं।

यह उनका सामर्थ्य है।

10 . 'सिल्वर वैडिंग' में लेखक का मानना है कि रिटायर होने के बाद सभी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं। कहानी के अनुसार यह 'जो हुआ होगा' क्या है? इसके क्या लक्षणहैं?

उत्तर- 'जो हुआ होगा' काअर्थ है- कुछ पता नहीं। यह मनुष्य की सामाजिक उदासीनता को दर्शाती है।इस समस्या से ग्रस्त व्यक्ति को नये विचार व नयी बातें अच्छी नहीं लगती।उन्हें हर कार्य में कमी नज़र आती है। युवाओं के काम पर वे पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव मानते हैं।युवापीढ़ी के साथ वे अपना तालमेल नहीं बिठा पाते हैं ऐसे लोग युवाओं यहाँ तककि अपने बच्चों के कामों में भी दोष निकालने लगते हैं। इस कारण वे समाज से कट जाते हैं।

11.'सिल्वर वैडिंग' में उपहार में मिले ड्रेसिंग गाउन को पहनते हुए यशोधर पंत की 'आँखों' की कोर में ज़रा सी नमी चमकआई।' इस का कारण आप क्या मानते हैं?

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर ने उपहार में मिले ड्रेसिंग गाउन को पहना तो उनकी आँखों में नमी आ गई।इसका कारण यह था कि वे किशनदा के आदर्शों पर चल रहे थे किशनदा अकेलेपन से भरे थे, जबकि यशोधर के साथ उनका पूरा परिवार था। वे अकेलेपन की मौत मरना नहीं चाहते थे। नयी पीढ़ी से असहमति के बावजूद वे उनके साथ रहना चाहते थे।

12 यशोधर बाबू ऐसा क्यों सोचते हैं कि वे भी किशनदा की तरह घर-गृहस्थी का बवाल न पालते तो अच्छा था?

उत्तर- यशोधर बाबू परंपरा को मानने तथा बनाए रखने वाले इंसान थे।उन्हें पुराने रीति-रिवाजों से लगाव था।वे संयुक्त परिवार के समर्थक थे। उनकी पुरानी सोच बच्चों को अच्छी नहीं लगती है। बच्चों का आचरण और व्यवहार देख उन्हें दुख होता है। उनकी पत्नी भी बच्चों का ही पक्ष लेती हैं और ज्यादातर समय बच्चों के साथ बिताती हैं । इसके अलावा यशोधर बाबू को घर के कई काम करने होते हैं। घर में अपनी ऐसी स्थिति देखकर वे सोचते हैं कि किशनदा की तरह घर-गृहस्थी का बवाल न पालते तो अच्छा था।

13. क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में युवा पीढ़ी को पाश्चात्य रंग में रंगा हुआ दिखाया गया है। इस पीढ़ी की नजर में भारतीय मूल्य व परंपराओं के लिए कोई स्थान नहीं है।वे रिश्तेदारी, रीति-रिवाज, वेशभूषा आदि सबको छोड़कर पश्चिमी रूप को अपना रहे हैं, परंतु यह कहानी की मूल संवेदना नहीं है। कहानी के पात्र यशोधर पुरानी परंपराओं को जीवित रखे हुए हैं, भले ही उन्हें घर में अकेलापन सहन करना पड़ रहा हो। वे अपने दफ्तर व घर में विदेशी परंपरा पर टिप्पणी करते रहते हैं। इस से तनाव उत्पन्न होता है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पीढ़ीअंतराल के कारण ज्यादा रहता है।

14. यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- यशोधर बाबू के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i) परंपरावादी-यशोधर बाबू परंपरावादी हैं। उन्हें पुराने रीति-रिताज अच्छे लगतेहैं। वे संयुक्त परिवार के समर्थक हैं। उन्हें पत्नी व बेटी का सँवरना अच्छा नहीं लगता। घर में भौतिक चीजों से उन्हें चिढ़ है।

(ii) असंतुष्ट-यशोधरअसंतुष्ट व्यक्तित्व के हैं।उन्हें अपनी संतानों की विचारधारा पसंद नहीं।वे घर से बाहर जान-बूझकर रहते हैं। उन्हें बेटों का व्यवहार व बेटी का पहनावाअच्छा नहीं लगता। घर में उनसे कोई राय नहीं लेता।

(iii) चरित्र नायक-यशोधर कहानी के नायक हैं। वे सेक्शन अफसर हैं, परंतु नियमों से बँधे हुए वस्तुतः वे नए परिवेश में मिसफिट हैं। वे नए को ले नहीं सकते, तथा पुराने को छोड़ नहीं सकते।

15. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के पात्र किशनदा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे।

उत्तर- 'सिल्वरवैडिंग' कहानी के पात्र किशनदा के अनेक जीवन मूल्य ऐसे थे जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे।उनमें से कुछ जीवन मूल्य निम्नलिखित है-

1. सादगी- यशोधर बाबू अत्यंत सादगी पूर्ण जीवन जीते थे। वे सुविधा के साधनों के फेर में नहीं पड़े। वे साइकिल पर आफिस जाते थे तथा फटा पुलोवर पहनकर दूध लातेथे।

2.सरलता- यशोधर बाबू सरलता की मूर्ति थे।वे छल-कपट या दूसरों को धोखा देने जैसे कुत्सित विचारों से दूर थे।

3. भारतीय संस्कृति से लगाव- यशोधर बाबू को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव है। उनके बच्चों पर पाश्चात्य सभ्यता से लगाव है फिर भी वे पुरानी परंपरा और भारतीय संस्कृति के पक्षधर है।

4. आत्मीयता- यशोधरबाबू अपने पारिवारिक सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से भी आत्मीय संबंध रखते हैं और यह संबंध बनाए रखते हैं।

5. पारिवारिक जीवन शैली- यशोधर बाबू सहज पारिवारिक जीवन जीना चाहते हैं। वे निकट संबंधियों से रिश्ते बनाए रखना चाहते हैं तथा यह इच्छा रखते हैं कि सब उन्हें परिवार के मुखिया के रूप में जाने।उपर्युक्त जीवन-मूल्य उन्हें किशन दा से मिले थे जो उन्होंने आजीवन बनाए रखा।

जूझ

लेखक का नाम - आनंद यादव

पाठ का सारांश -यह मराठी के प्रख्यात कथाकार डॉ. आनंद यादव का बहुचर्चितएवं बहुप्रशंसित आत्मकथात्मक उपन्यास हैका एक अंश है। यहएक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंगपरिवेश की अत्यंत विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में जीवनका मर्मस्पर्शी चित्रण तो है ही, अस्त-व्यस्त-अलमस्त निम्नमध्यवर्गीय ग्रामीण समाज औरलड़ते-जूझते किसान-मज़दूरों के संघर्ष की भी अनूठी झाँकी है।आत्मकथात्मक उपन्यास के इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे- धीरे साहित्य, संगीतऔर अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है।जो निश्चय ही किशोर होते विद्यार्थियों के लिए हमकदम बन सकती है।

पाठ पर आधारित 5 अंक के प्रश्नोत्तर

1.'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता हैं।

उत्तर -जूझ का साधारण अर्थ है जूझना अथवा संघर्ष करना। यह उपन्यास अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करता है। उपन्यास का कथानायक भी जीवनभर स्वयं से और अपनी परिस्थितियों से जूझता रहता है। यह शीर्षक कथानायक के संघर्षशील वृत्ति का परिचय देता है। हमारे कथानायक में संघर्ष की भावना है। वह संघर्ष करने के लिए मजबूर है लेकिन उसका यह संघर्ष ही उसे एक दिन पढ़ा-लिखा इंसान बना देता है। इस संघर्ष में भी उसने आत्मविश्वास बनाए रखा है। यद्यपि परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध होती हैं तथापि वह अपने आत्मविश्वास के बल इस प्रकार की परिस्थितियों से जूझने में सफल हो जाता है। वास्तव में कथानक की संघर्षशीलता ही उसकी चारित्रिक विशेषता है।शीर्षक से यही केंद्रीय विशेषता उजागर होती है।

2. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर -लेखक की पाठशाला में मराठी भाषा के अध्यापक न०बा० सौंदलगेकर कविता के अच्छे रसिक व मर्मज्ञ थे। वे कक्षा में सस्वर कविता-पाठ करते थे तथा लय, छद, गति-यति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे। लेखक इनको देखकर बहुत प्रभावित हुआ। इससे पहले उसे कवि दूसरे लोक के जीव लगते थे। सौंदलगेकर ने उसे अन्य कवियों के बारे में बताया। वह स्वयं भी कवि थे। इसके बाद आनंद को यह विश्वास हुआ कि कवि उसी की तरह आदमी ही होते हैं। एक बार उसने देखा कि उसके अध्यापक ने अपने घर की मालती लता पर ही कविता लिख दी, तब उसे लगा कि वह अपने आस-पास के दृश्यों पर कविता बना सकता है। इस प्रकार उसके मन में स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।

3. **श्री सौंदलगकर के अध्यापन की उन विशषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।**

उत्तर -श्री सौंदलगेकर मराठी भाषा के अध्यापक थे। वे मराठी भाषा का अध्यापन बड़े ही सुरुचि ढंग से करवाते थे। उनके पढ़ाने का तरीका सबसे अलग था। पढ़ाते समय वे पूरी तरह पढ़ाई में ही रम जाया करते थे। छंद की बढ़िया चाल और सुरों का ज्ञान उन्हें था। उस पर मीठा गला। वे गा-गाकर कविता पाठ करवाते थे। वे सबसे पहले कविता गाकर सुनाते थे फिर बैठे-बैठे ही अभिनय करते हुए कविता के भावों को ग्रहण करते थे।

4. **कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?**

उत्तर -कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को ढोर चराते हुए, पानी लगाते हुए, दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था। उसे ऐसा लगता था कि कोई-न-कोई हमेशा साथ में होना चाहिए। उसे किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हँसी-मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था। कविता के प्रति लगाव के बाद उसे अकेलेपन से ऊब नहीं होती। अब वह स्वयं से ही खेलना सीख गया। पहले की अपेक्षा अब उसे अकेला रहना अच्छा लगने लगा। इस स्थिति में वह ऊँची आवाज़ में कविता गा सकता था। वह अभिनय भी कर सकता था। इस तरह अब उसे अकेलापन आनंद देने लगा था।

5. आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के सबध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का । सहित उत्तर दें।

उत्तर -मेरे खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया बिलकुल सही था क्योंकि लेखक को पढ़ने की इच्छा थी जिसे दत्ताजी राव ने सही पहचाना। उसकी प्रतिभा के बारे में दत्ताजी ने पूरी तरह जान लिया था। वैसे भी लेखक को पढ़ाने के पीछे दत्ताजी राव का कोई स्वार्थ नहीं था जबकि लेखक के पिता का पढ़ाई-लिखाई के बारे में रवैया बिलकुल गलत था। वास्तव में लेखक का पिता अपने स्वार्थ के लिए अपने बेटे को

नहीं पढ़ाना चाहता था। उसे पता था कि यदि उसका बेटा स्कूल जाने लगा तो उसे ऐश करने के लिए समय नहीं मिलेगा। इसलिए हमें दत्ताजी राव और लेखक का रवैया पढ़ाई के संबंध में बिलकुल ठीक लगता है।

6. **दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेते तो आगे का घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ।**

उत्तर - दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि दोनों ने झूठ का सहारा नहीं लिया होता तो दत्ता जी राव उसके पिता पर दबाव नहीं दे पाते। लेखक पिता द्वारा दिए गए ही काम करता। उसकी पढ़ाई-लिखाई नहीं हो पाती। वह सारा जीवन खेती में ही लगा रहता। इस झूठ के बिना हमें यह प्रेरणादायक कहानी भी नहीं मिल पाती। इस तरह कभी-कभी एक झूठ भी मनुष्य व समाज का विकास करने में सक्षम साबित होता है।

7. पाँचवीं कक्षा में दुबारा पढ़ने आए लेखक की किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?' 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए।

उत्तर -जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए थे, लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाय और किसी को जानता तक नहीं था। जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था, उन्हीं के साथ अब उसे बैठना पड़ रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपाठी तो उसे सब तरह से जानते-समझते थे, मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती, उसका गमछा, उसका थैला आदि सब चीजों का मजाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि इतनी कोशिश करके पढ़ने का अवसर मिला तो उसके आत्मविश्वास में भी कमी आ गई।

8. 'जूझ' कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई हैं। क्या ऐसा कहना ठीक है?

उत्तर -'जूझ' कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। यह कहना बिलकुल ठीक है। लेखक के पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। वे खुद ऐय्याशी करने के लिए बच्चे को खेती के काम में लगाना चाहते थे। पढ़ने की बात करने पर वे जंगली सुअर की तरह गुर्राते थे। उन पर दत्ता जी राव का दबाव ही काम कर सकता था। अत: लेखक की माँ व दत्ता जी राव ने मिलकर उन्हें मानसिक तौर पर घेरा तथा आगे पढ़ने की स्वीकृति ली। यदि यह उपाय नहीं किया जाता तो लेखक कभी शिक्षित नहीं हो पाता।

9. 'जूझ' कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर -'जूझ' कहानी में ग्रामीण जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। गाँव में किसान, जमींदार आदि कई वर्ग हैं। लेखक स्वयं कृषिकार्य करता है। उसके पिता बाजार में गुड़ के ऊँचे भाव पाने के लिए गन्ने की पेराई जल्दी करा देते हैं। गाँव में पूरा परिवार कृषि-कार्य में लगा रहता है, चाहे बच्चे हों, महिलाएँ हों या वृद्ध। कुछ बड़े जमींदार भी होते हैं जिनका गाँव पर काफी प्रभाव होता है। गाँव में कृषक बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर कम ध्यान देते हैं। ग्रामीण स्कूलों में बच्चों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते। बच्चों को घर व पाठशाला का काम करना पड़ता था।

10. 'लेखक की माँ उसके पिता की आदतों से वाकिफ थी।"-लेखक की माँ न लेखक का साथ किस प्रकार दिया?

उत्तर - लेखक की माँ अपने पति के स्वभाव से अच्छी तरह वाकिफ़ थी। वह जानती थी कि वह अपने लड़के को पढ़ाना नहीं चाहता। पढ़ाई की बात से ही वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। इसके बावजूद वह लेखक का साथ देती है और दत्ता जी राव के पास जाकर अपने पति के बारे में सारी बातें बताती है। अंत में, वह देसाई को अपने आने की बात पति को न बताने के लिए भी कहती है।

11. मंत्री नामक अध्यापक पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - मंत्री नामक अध्यापक गणित पढ़ाते थे। वे प्राय: छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। काम न करने वाले बच्चों की गर्दन हाथ से पकड़कर उनकी पीठ पर घूसा लगाते थे। इस प्रकार से बच्चों के मन में दहशत थी। शरारती बच्चे भी शांत रहने लगे थे। ये पढ़ने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देते थे। अगर किसी का सवाल गलत हो जाता तो वे उसे समझाते थे। एकाध लड़कों द्वारा मूर्खता करने पर उन्हें वहीं ठोंक देते थे। उनके डर से सभी बच्चे घर से पढ़ाई करके आने लगे।

12. वसंत पाटिल कौन है? लेखक ने उससे दोस्ती क्यों व कैसे की?

उत्तर - वसंत पाटिल दुबला-पतला, परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था। वह घर से पूरी तैयारी करके आता था तथा उसके सभी सवाल ठीक होते थे। वह दूसरों के सवालों की जाँच करता था। उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया था। लेखक भी उसकी देखा-देखी मेहनत करने लगा। उसने बस्ता व्यवस्थित किया, किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे। वह भी वसंत पाटील की तरह लड़कों के सवाल जाँचने लगा। इस तरह दोनों दोस्त बन गए तथा एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम करने लगे।

13. दत्ता जी राव की सहायता के बिना 'जूझ' कहानी का 'मैं' पात्र वह सब नहीं पा सकता था जो उसे मिला।"-टिप्पणी कीजिए।

उत्तर -यह बात बिलकुल सही है कि दत्ता जी राव की सहायता के बिना लेखक पढ़ नहीं सकता था। यदि दत्ता जी राव लेखक के पिता को नहीं समझाते तो लेखक को कभी स्कूल नसीब न होता। वह अर्धशिक्षित ही रह जाता तथा गीत, कविता, उपन्यास न लिख पाता। उच्च शिक्षा के अभाव में उसे अपने खेतों में मजदूर की तरह आजीवन काम करना पड़ता। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसे जमींदार के खेतों में काम भी करना पड़ता। वस्तुत: उसका जीवन ही अंधकारमय हो जाता।

अतीत में दबे पाँव

लेखक का नाम -ओम थानवी

पाठ का सारांश - इतिहास हमें दिशा दे सकता है तो ऐतिहासिक नगरसभ्यता के विकास को दिशा दे सकते हैं। इसी संदर्भ में यह रचना ओम थानवी की यात्रावृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है, जो अब तक के ज्ञान में भारतीय भूमि ही नहींविश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को उतने ही सुनियोजित ढंगसे पुनर्जीवित करता है, जितने सुनियोजित ढंग से उ दो महान नगर मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा बसे थे। लेखक ने टीलों, स्नानागारों, मृदभांडो, वुफओं-तालाबों, मकानों व मार्गों सेप्राप्त पुरातत्त्वों में मानव-संस्कृति की उस समझदार-भावात्मक घटना को बड़े इत्मीनान सेखोज-खोज कर हमें दिखलाया है, जिससे हम इतिहास की सपाट वर्णनात्मकता से ग्रस्त होने की जगह इतिहास बोध् से तर(सिक्त) होते हैं (जिस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता एक समय प्राणधरा से तर थी।) सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना अभिभूत करती है। वह आज के सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज्यादा रचनात्मक थी, क्योंकि उसकी बसावट शहर के खुद विकसने का अवकाश भी छोड़ कर चलती थी। पुरातत्त्व के निष्प्राण पड़े

चिह्नों से एक ज़माने में, आबाद घरों, लोगों और उनकी सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियों का पुख्ता अनुमान किया जा सकता है। वह सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने की जगह आपसी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी, पर आडंबर नहीं था। उसकी खूबी उसका सौंदर्यबोध था, जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज पोषित था।अतीत की ऐसी कहानियों के स्मारक चिह्नों का आधुनिक व्यवस्था के विकास-अभियानों की भेंट चढ़ते जाना भी लेखक को कचोटता है।

पाठ पर आधारित 5 अंक के प्रश्नोतर

1-सिंधु-सभ्यता साधन-सपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।कैसे?

उत्तर–सिंधु सभ्यता बहुत संपन्न सभ्यता थी। प्रत्येक तरह के साधन इस सभ्यता में थे। इतना होने के बाद भी इस सभ्यता में दिखावा नहीं था।कोई बनवावटीपन याआडंबर नहीं था।जो भी निर्माण इस सभ्यता के लोगों ने किया, वह सुनियोजित और मनोहारी था। निर्माण शैली साधारण होने के बाद भी दिखावे से कोसों दूर थे।जो वस्तु जिस रूप में सुंदर लग सकती थी, उसका निर्माण उसी ढंग से किया गया था। इसीलिए सिंधु सभ्यता में भव्यता थी, आडंबर नहीं।

2- "सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध हैं जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।" ऐसा क्यों कहा गया?

अथवा

"सिंधु-सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषितथा।"- अतीत में दबे पाँव' पाठ केआधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"सिंधु-घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था"- उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–सिंधु-सभ्यता के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था।यहाँ प्राप्त नगर-नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति व पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, खिलौने, आभूषण तथा सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप आदि सब कुछ इसे तकनीक-सिद्ध से अधिक कला-सिद्ध जाहिर करता है। यहाँ से कोई हथियार नहीं मिला। इस बात को लेकर विद्वानों का मानना है कि यहाँ अनुशासन जरूर था, परंतु सैन्य सभ्यता का नहीं।यहाँ पर धर्मतंत्र या राजतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाली वस्तुएँ-महल, उपासना-स्थल आदि-नहीं मिलतीं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। इन सारी चीजों से उसका सौंदर्य-बोध उभरताहै।इसीआधार पर कहा जाता है कि सिंधु-सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित था।

3- पुरातत्व के किन चिहनों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि- "सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी?"

अथवा

'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी"-अतीत में दबे पाँव के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर–पुरातत्ववेत्ताओं ने जो भी खुदाई की और खोज की।उसमें उन्हें मिट्टी के बर्तन, सिक्के, मूर्तियाँ, पत्थर और लकड़ी के उपकरण मिले। इन चित्रों के फलस्वरूप यही बात सामने आई कि लोग समय के अनुरूप इन वस्तुओं का उपभोग करते थे।दूसरा उनकी नगरयोजना भी उनकी समझ का पुख्ता प्रमाण है। आज की

नगरयोजना भी उनकी योजना के समकक्ष नहीं ठहरती।जो कुछ उन्होंने नगरों, गलियों, सड़कों को साफ़-सुथरा रखने की विधि अपनाई, वह उनकी समझ को ही दर्शाती है।

4- 'यह सच है कि यहाँ किसी आंगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँअबआपको कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं।" इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय हैं?

अथवा

मुअनजो-दड़ो की सभ्यतापूर्ण विकसित सभ्यता थी, कैसे? पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्ट कीजिए।

उत्तर–लेखक कहता है कि मुअनजो-दड़ो में सिंधु-सभ्यता के अवशेष बिखरे पड़े हैं। यहाँ के मकानों की सीढ़ियाँ उस काल खंड तथा उससे पूर्व का अहसास कराती हैं जब यह सभ्यता अपने चरम पर रही होगी।इतिहास बताता है कि यहाँ कभी पूरी आबादी रहती थी।यह सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है।यहाँ के अधूरे पायदानों पर खड़े होकर हम गर्व महसूस कर सकते हैं कि जिस समय दुनिया में ज्ञानरूपी सूर्योदय नहीं हुआ था, उस समय हमारे पास एक सुसंस्कृत व विकसित सभ्यता थी। इसमें महानगर भी थे।इन को विकसित होने में भी काफी समय लगा होगा।यह हमारे इतिहास को आँखों के सामने प्रत्यक्ष कर देता है।उस समय का ज्ञान, उनके द्वारा स्थापित मानदंड आज भी हमारे लिए अनुकरणीय हैं।तत्कालीन नगर-योजना को आज की नगरीय संस्कृति में प्रयोग किया जाता है।

5- 'टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यताऔर संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं।"-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जब कोई सभ्यता या संस्कृति काल के ग्रास में समाज तो पीछे टूटे-फूटे खंडहर छोड़ जाती है।इन्हीं टूटे-फूटे खंडहरों की खोज के आधार पर अमुक सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानने का प्रयास किया जाता है। सिंधुघाटी की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता थी किंतु वह भी एक दिन समाप्त हो गई।अपने पीछे छोड़ गई टूटी-फूटी इमारतों के आधार पर पुरातत्ववेत्ता कहते हैं कि वह एक सुसंस्कृत और विकसित संस्कृति थी, उस समय का समाज उसमें रहने वाले लोग कैसे थे इन सभी के बारे में खंडहरों के अध्ययन से ही जाना जा सकता है। कोई भी खंडहरऔर नगर में मिले अन्य अवशेषों और चीज़ों के आधार पर उस युग के लोगों के आचार-व्यवहार के बारे में पता चल जाता है।उस समय केलोगों का खान-पान भी यही वस्तुएँ बता देती हैं।इसलिए कहा गया है कि टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं।

6- इस पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन हैं जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है।किसी ऐस ऐतिहासिक स्थल, जिसको आपने नजदीक से देखा हो, का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- इस साल की गर्मियों की में कक्षा के कुछ दोस्तों ने दिल्ली के लालकिले को देखने का कार्यक्रम बनाया।निर्धारित तिथि को हम छह दोस्त वहाँ गए।लालकिले को देखने के बाद मन में कल्पना हिलोरें मारने लगी।इसे देखकर मुगलसत्ता के मजबूत आधार का पता चलता है। इतने विशाल किले का निर्माण शाहजहाँ ने

करवाया जिस पर अत्यधिक धन खर्च हुआ।यह निर्माण उस समय के शांत शासन व समृद्ध के युग का परिचय कराता है।इस का निर्माण लाल पत्थरों से करवाया गया।किले के अंदर अनेक महल हैं।दीवान-ए-आम से लेकर दीवान-ए-खास तक को देखकर मुगल बादशाह के दरबार का दृश्य सामने आता है।यह किला मुगल प्रभु सत्ता का परिचायक था।आज भी इसका ऐतिहासिक महत्व है।यहाँ स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री तिरंगा झंडा फ़हराते हैं।यह मेरे जीवन के सुखद अनुभवों में से एकहै।

7- नदी, कुएँ स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

अथवा

क्या सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- यह बिलकुल सत्य है कि नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था सिंधुघाटी की विशेष पहचान रही है।लेखक अंत में पाठकों से यह प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधुघाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं तो मैं यही कहूँगा/कहूँगी कि उस सभ्यता की नकल ही हमने की है। उस सभ्यता का कोई मुकाबला नहीं।आज चंडीगढ़, ब्रासीलिया और इस्लामाबाद की नगर योजना पर सिंधु सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है लेकिन यह प्रभाव गहरा नहीं है।सिंधु घाटी के लोगों ने अपनी समझ और दूरदर्शिता का परिचय दिया है।जबकि इन शहरों में समझ तो दिखाई देता है लेकिन दूरदर्शिता नहीं।इसीलिए मैं सिंधुघाटी की सभ्यता को नव्य-संस्कृति के लिए एक आदर्श कहूँगा/कहूँगी।

8.“सिंधुघाटी की सभ्यता केवल अवशेषों‘ के आधार पर बनाई गई एक धारणा है “-इस विचार के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर- सिंधुघाटी सभ्यता के विषय में जानकारी मुअनजो-दड़ो व अन्य क्षेत्रों की खुदाई से मिले अवशेषों से मिलती है।यहाँ नगर–योजना, मकान, खेती, कला, आदि के अवशेष मिले हैँ। इनके आधार पर ही एक धारणा बनाई गई है कि यह सभ्यता अत्यंत विकसित थी।अनुमान लगाया गया कि यहाँ की नगर–योजना आज की शहरी योजना से अधिक विकसित थी, यहाँ पर मरुभूमि नहीं थी, कृषि उन्नत दशा में थी, पशुपालन व व्यापार भी विकसित था। समाज के दो वर्ग “उच्चवर्ग‘ व “निम्नवर्ग को परिकल्पना की गई आदि।वस्तुत: ये सब अनुमान हैं।मुअन-जोदड़ो के बारे में बनी अवधारणा के विषय में मेरा मत निम्नलिखित है–

1.इस क्षेत्र से जो लिपि मिली है, वह चित्रलिपि है।उसे आज तक पढ़ा नहीं जा सका है।अत: यह लिपि अपने में रहस्य छिपाए हुए है।

2.लिपि पढ़े न जाने पर अवशेष ही किसी सभ्यता व संस्कृति के बारे में बताते हैं।इतनी पुरानी सभ्यता के तमाम चिह्न सुरक्षित नहीं रह सकते।इस क्षेत्र की जलवायु व मजबूत निर्माण–कला के कारण काफीअवशेष ठीक दशा में मिले हैं।इसी केआधार पर सिन्धुघाटी की सभ्यता व संस्कृति को परिकल्पना की गई है।

अभिव्यक्ति और माध्यम

पाठ :3 विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

पाठ का सार- जनसंचार के जितने भी माध्यम हैं उनके लिए लेखन के अलग-अलग तरीके हैं।जैसे अखबार और पत्र-पत्रिकाओं में लिखने की अलग शैली है, जबकि रेडियो और टेलीविज़न के लिए यदि लिखना हो तो उसकी अलग कला है।क्योंकि माध्यम अलग-अलग हैं इसलिए उनकी ज़रूरतें भी अलग-अलग हैं।माध्यमों के लेखन के लिए बोलने, लिखने के अतिरिक्त पढ़ने वालों और सुनने वालों और देखने वालों की ज़रूरत को भी ध्यान में रखा जाता है। इस पाठ में हम इन सभी को समझेगें।

सबसे पहले प्रमुख जनसंचार माध्यम कौन-कौन से हैं? यह जान लेते हैं- जनसंचार माध्यमों में प्रिंट, टी.वी., रेडियोऔर इंटरनेट प्रमुख है। जहाँ समाचारों को अखबारों में पढ़ा जाता है, वहीँ टी.वी. पर देखा जाता है, रेडियो पर सुना जाता है और इंटरनेट पर समाचारों को पढ़ा, सुना या देखा जाता है।

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की खूबियाँ और खामियाँ:-

हर माध्यम की अपनी कुछ खूबियाँ हैं तो कुछ खामियाँ भी हैं।खबर लिखने के समय इनका पूरा ध्यान रखना पड़ता है और इन माध्यमों की ज़रूरत को समझना पड़ता है।इन्ही खूबियों और खामियों के कारण कोई माध्यम-विशेष किसी को अधिक पसंद आता है तो किसी को कम।लेकिन इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि जनसंचार का कोई एक माध्यम सबसे अच्छा या बेहतर है या कोईएक-दूसरे से कम बेहतर है।सबकी अपनी कुछ खूबियाँ और खामियाँ हैं।जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के बीच फ़र्क चाहे जितना हो लेकिन वे आपस में प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं।

अखबार में समाचार पढ़ने और रुककर उस पर सोचने में एक अलग तरह की संतुष्टि मिलती है।

टी.वी. पर घटनाओं की तसवीरें देखकर उसकी जीवंतता का एहसास होता है।इस तरह का रोमांच अखबार या इंटरनेट पर नहीं मिल सकता।

रेडियो पर खबरें सुनते हुए आप जितना उन्मुक्त होते हैं, उतना किसी और माध्यम में संभव नहीं है।

प्रिंट माध्यम-

-प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है।छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी।भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्मप्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।तब से लेकर आज तक की मुद्रण तकनीक में बहुत बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का विस्तार भी हुआ है।

मुद्रित माध्यमों के तहत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि हैं।

मुद्रित माध्यमों की खूबियाँ-

मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता या शक्ति यह है कि छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है।उसे आप आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं।पढ़ते हुए उस पर सोच सकते हैं।

अगर आप अखबार या पत्रिका पढ़ रहे हों तो आप अपनी पसंद के अनुसार किसी भी पृष्ठ और उस पर प्रकाशित किसी भी समाचार या रिपोर्ट से पढ़ने की शुरुआत कर सकते हैं।

मुद्रित माध्यमों के स्थायित्व का एक लाभ यह भी है कि आप उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं और उसे संदर्भ की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।
मुद्रित माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है।इसमें लिखित भाषा की सभी विशेषताएँ शामिल हैं।

मुद्रित माध्यमों की खामियाँ-

मुद्रित माध्यमों का पाठक वही हो सकता है जो साक्षर हो और जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के ज़रिये एक विशेष स्तर की योग्यता भी हासिल की हो।निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं हैं।
मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।
मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को पाठकों की रुचियों और ज़रूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।
मुद्रित माध्यम रेडियो, टी.वी. या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते।ये एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं।
मुद्रित माध्यमों के लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की समय-सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें-

1. लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना ज़रूरी है। प्रचलित भाषा के प्रयोग पर ज़ोर रहता है।
2. समयहै। जरूरी में हाल हर करना पालन का अनुशासन के जगह आवंटित और सीमा-
3. लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना ज़रूरी होता है।
4. लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना ज़रूरी है

रेडियो-

रेडियो श्रव्य माध्यम है।इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वरऔर शब्दों काखेलहै।
रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।क्योंकि अखबार पाठकों को यह सुविधा उपलब्ध रहती है कि वे अपनी पसंद और इच्छा से कभी भी और कहीं से भी पढ़ सकते हैं।लेकिन रेडियो के श्रोता को यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती।
रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है।
रेडियो मूलतः **एकरेखीय (लीनियर)** माध्यम हैऔर रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होताहै।

उलटा पिरामिड शैली-

उलटा पिरामिड-शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है।इस शैली में किसी घटना / विचार / समस्या का ब्योरा कालानुक्रम के बजाए सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है।तात्पर्य यह कि इस शैली में, कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं बल्कि खबर के बिलकुल शुरू मेंआ जाता है।उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।
उलटा पिरामिड शैली के तहत समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है -इंट्रो, बॉडी और समापन।समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में मुखड़ा भी कहते हैं। इसमें खबर के मूलतत्त्व को शुरू की दो या

तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है।इसके बाद बॉडी में समाचार के विस्तृत ब्योरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।

रेडियो के लिए समाचार लेखन- बातें बुनियादी-

रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है –

- साफ-सुथरी टाइप की हुई कॉपी, ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों ओर हाशिए छोड़ें।
- एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक न हों।
- पंक्ति के अन्त में विभाजित शब्द का प्रयोग न करें।
- समाचार कॉपी में जटिल एवं संक्षिप्त आकार का प्रयोग न करें।
- लम्बे अंकों को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें।
- निम्नलिखित क्रमांक, अधोहस्ताक्षरी, किन्तु, लेकिन, उपर्युक्त, पूर्वक जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- वर्तनी पर विशेष ध्यान दें।
- समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

टेलीविज़न

टेलीविज़न में दृश्यों की अहमियत सबसे ज्यादा है।टेलीविज़न देखने और सुनने का माध्यम है और इसके लिए समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय इस बात पर खास ध्यान रखने की ज़रूरत पड़ती है किआपके शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य केअनुकूल हों।इसमें कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल होता है।दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर खबर बुनी जानी है। टेलीविज़न पर खबर दो तरह से पेश की जाती है।इसका शुरुआती हिस्सा, जिसमें मुख्य खबर होती है, बगैर दृश्य के न्यूज़ रीडर या एंकर पढ़ता है।दूसरा हिस्सा वह होता है जहाँ से परदे पर एंकर की जगह खबर से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं।इसलिए टेलीविज़न पर खबर दो हिस्सों में बँटी होती है।

टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण -

किसी भी टी.वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है यानी सबसे पहले सूचना देना।टी.वी. में भी यह सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं।ये चरण हैं -

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज - सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है।

ड्राई एंकर-इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ।

फ़ोन इन-इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है।

एंकर-विजुअल-जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है।

एंकर-बाइट-बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्त्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे सम्बन्धित बाइट दिखाई जाती है।

लाइव-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण करना है।

एंकर पैकेज-पैकेज किसी भी खबर को सम्पूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है।

रेडियो और टेलीविज़न समाचार की भाषा और शैली -

भारत जैसे विकासशील देश में उसके श्रोताओं और दर्शकों में पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मज़दूर तक सभी हैं। इन सभी लोगों की सूचना की ज़रूरतें पूरी करना ही रेडियो और टी.वी. का उद्देश्य है।

- लोगों तक पहुँचने का माध्यम भाषा है और इसलिए भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी को आसानी से समझ में आ सके लेकिन साथ ही भाषा के स्तर और गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े।
- हम आपसी बोलचाल में जिस भाषा का इस्तेमाल करते हैं, उसी तरह की भाषा का इस्तेमाल रेडियो और टी.वी. के समाचारों में करना चाहिए ।
- सरल भाषा लिखने का सबसे बेहतर उपाय यह है कि वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाएँ।
ऐसे कई शब्द हैं जिनका अखबारों में धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है लेकिन रेडियो और टी.वी. में इनके इस्तेमाल से बचना चाहिए । जैसे : उपरोक्त,अधोहस्ताक्षरित और क्रमांक आदि इन माध्यमों में बिल्कुल मना है।
- द्वारा शब्द के इस्तेमाल से भी बचने की कोशिश की जाती है क्योंकि इसका प्रयोग कई बार बहुत भ्रामक अर्थ देने लगता है।

इंटरनेट-

इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता। इसे चाहे जो कहें, नयी पीढ़ी के लिए अब यह एक आदत-सी बनती जा रही है। जिनलोगों को इंटरनेट की आदत हो चुकी है, उन्हें हर घंटे-दो-घंटे में खुद को अपडेट करने की लत लगती जा रही है।
भारत में कंप्यूटर साक्षरता की दर बहुत तेजी से बढ़ रही है।पर्सनल कंप्यूटर इस्तेमाल करने वालों की संख्या में भी लगातार इज़ाफा हो रहा है।
इंटरनेट सिर्फ एक टूल यानी औजार है, जिसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।लेकिन इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचारऔर गंदगी फैलाने का भी ज़रिया है।
रिसर्च या शोध का काम तो इंटरनेट ने बेहद आसान कर दिया है।

इंटरनेट पत्रकारिता

इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है।इंटरनेट पर यदि हम, किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों के ज़रिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।
विश्वस्तर पर इस समय इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है।पहला दौर था 1982 से1992 तक जबकि **दूसरा दौर चला 1993 से 2001** तक।तीसरे दौर की इंटरनेट पत्रकारिता 2002 से अब तक की है।
भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है।
भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है जबकि दूसरा दौर सन्2003 से शुरू हुआ है।

रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। हिंदी में नेटपत्रकारिता **'वेबदुनिया'** के साथ शुरू हुई।

'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंटरूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

आज पत्रकारिता के लिहाज़ से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है। यही एक साइट है जो इंटरनेट के मानदंडों के हिसाब से चल रही है।

सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फौंट की है।अभी भी हमारे पास कोई एक 'की-बोर्ड' नहीं है।

डायनमिक फौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं।अब माइक्रोसॉफटऔर वेबदुनिया ने यूनिकाड फौंट बनाए हैं।

हिंदी जगत जब तक हिंदी के बेलगाम फौंट संसार पर नियंत्रण नहीं लगाएगा और 'की-बोर्ड' का मानकीकरण नहीं करेगा, तब तक यह समस्या बनी रहेगी।

अभ्यास हेतु विभिन्न प्रश्न:-

1. **प्रिंट माध्यम से आप क्या समझतेहैं?**

   उत्तर प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी।भारत में पहला छापाखाना सन्1556 में गोवा में खुला।इसे मिशनरियों ने धर्मप्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।तब से लेकर आज तक की मुद्रण तकनीक में बहुत बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का विस्तार भी हुआ है।मुद्रित माध्यमों के तहत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि हैं।

2. **उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं?**

   उत्तर :-उलटा पिरामिड-शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है।इस शैली में किसी घटना/ विचार / समस्या का ब्योरा कालानुक्रम के बजाए सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है।तात्पर्य यह कि इस शैली में, कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। उलटा पिरामिड शैली के तहत समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है- इंट्रो, बॉडी और समापन। समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में मुखड़ा भी कहते हैं। इस में खबर के मूल तत्त्व को शुरू की दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। इसके बाद बॉडी में समाचार के विस्तृत ब्योरे को घटते हुए महत्त्व क्रम में लिखा जाता है।

3. **टीवी खबरों के विभिन्न चरणों को लिखिए।**

   उत्तर :-किसी भी टी.वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है यानी सबसे पहले सूचना देना। टी.वी. में भी यह सूचनाएँ कई चरणों से हो कर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं -

   (i) फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज- इसमें सबसे पहले कम-से-कम शब्दों में महत्वपूर्ण खबरें दिखाई जाती हैं।

   (ii) ड्राई एंकर- इसमें खबर के दृश्य न आने तक एंकर दर्शकों को संवाददाता से मिली जानकारी पर आधारित सूचनाएँ देता है।

(iii) फ़ोन इन- इसमें संवाददाता घटनास्थल पर उपस्थि रहकर फ़ोन के द्वारा घटनास्थल की जानकारी एंकर के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाता है।

(iv) एंकर-विजुअल- इसमें जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार खबर को लिखा जाता है, जो एंकर पढ़ता है।

(v) एंकर बाइट- टेलीविज़न पत्रकारिता में बाइट का बहुत महत्व है। किसी भी खबर को प्रमाणित करने के लिए प्रत्यक्षदर्शियों को दिखाया /सुनाया जाता है।

(vi) लाइव- किसी खबर/ घटना स्थल से सीधा प्रसारण 'लाइव' कहलाता है।

(vii) एंकर पैकेज- इसमें संबंधित घटना के दृश्य, कथन और ग्राफ़िक के जरिये ज़रूरी सूचनाएँ होती हैं।

4. जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसे स्थायी माध्यम क्यों कहा गया है?

उत्तर- जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम प्रिंट मीडिया है। इसे मुद्रित माध्यम भी कहते हैं। जैसे- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि।

मुद्रित माध्यम को स्थायी माध्यम इसलिए कहा गया है क्योंकि इसके छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, इसे कभी भी और कितनी भी बार पढ़ा जा सकता है और इसे पढ़ते समय इस पर विचार-विमर्श भी किया जा सकता है। इसे कई महीनों-सालों तक संभालकर रखा जा सकता है।

5. मुद्रित माध्यमों हेतु लेखन करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

उत्तर :- 1. लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना ज़रूरी है। प्रचलित भाषा के प्रयोग पर ज़ोर रहता है।

2. समय -सीमाऔर आवंटित जगह के अनुशाशन का पालन करना हर हाल में जरूरी होता है।
3. लेखनऔर प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना ज़रूरी होता है।

6. रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तर- रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

(i) साफ-सुथरी और टाइट कॉपी की आवश्यकता होती है। रेडियो समाचार कानों के लिए यानी सुनने के लिए होते हैं, इसलिए उनके लेखन में इसका ध्यान रखना जरूरी हो जाता है।

(ii) प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए। एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।

(iii) समाचार कॉपी में ऐसे जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर (एग्रीविएशस), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खडाने लगे।

(iv) रेडियो समाचार में अत्यधिक आँकड़ों और का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफी कठिन होता है। आंकड़े तुलनात्मक हो तो बेहतर होता है।

8. इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :-इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम, किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों के ज़रिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।

रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेबदुनिया' के साथ शुरू हुई।

'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

आज पत्रकारिता के लिहाज़ से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. की है।

अब माइक्रोसॉफट और वेब दुनिया ने यूनिकोड फौंट बनाए हैं।

8. इंटरनेट की पाँच खूबियाँ और पाँच खामियाँ लिखिए।

उतर- इंटरनेट की खूबियों निम्नलिखित है-

(1) यह मनोरंजन करता है तथा ज्ञान बढ़ाता है।

(ii) यह माध्यम और औज़ार दोनों का कार्य करता है।

(ii) खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में इसका उपयोग होता है।

(iv) इंटरनेट एक स्थान पर रहकर विश्वभर का ज्ञान प्रदान करता है।

(v) चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है।

इंटरनेट की खामियाँ निम्नलिखित हैं-

I. यह लत डालने वाला माध्यम है।
II. यह बच्चों को खेल कूद से दूर कर देता है।
III. इंटरनेट अश्लीलता, दुष्प्रचार व गंदगी को बढ़ावा देना है।
IV. यह एक महँगा माध्यम है।
V. यह अपव्यय का आधार है।

पाठ : 4 पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया –

पत्रकारीय लेखन :- अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठको ,दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते है।

पत्रकार:- पत्रकार के तीन प्रकार होते हैं "-

(1)पूर्ण कालिक पत्रकार- किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी।

(2) अंश कालिक (स्ट्रिंगर) -निश्चित मानदेय पर काम करने वाला |

(3) फ्रीलान्सर- भुगतान के आधार पर अलग- अलग संगठनो के लिए काम करने वाला पत्रकार|

पत्रकारीय लेखन की भाषा शैली -

(i) भाषा सहज.सरल रोचक हो |

(ii) आलंकारिक व संस्कृत निष्ठ भाषा शैली का प्रयोग न हो |

(iii) भाषा आम बोल चाल की हो |

(iv) वाक्य छोटे- छोटे और सहज हो |

(v) गैर जरूरी विशेषणों का प्रयोग न हो |

समाचार लेखन-

पत्रकारीय लेखन का सबसे ज्यादा प्रचलित रूप है समाचार लेखन । जिसकी शैली उल्टा पिरामिड शैली होती है। जिसमें सबसे मुख्य खबर पहले, फिर उससे कम महत्वपूर्ण अंत में समापन होता है। इसमें पिरामिड को उलट दिया जाता है। आधार उपर और शीर्ष नीचें होता है। क्लाइमेक्स (चरमोत्कर्ष) पहले आ जाता है। जो निम्न प्रकार है। इसके तीन भाग होते हैं:-

1. इंट्रो :- मुखड़ा 2.बॉडी:- विस्तार 3. समापन

समाचार लेखन और छ: ककार:-

किसी घट्ना, समस्या या विचार से संबंधित खबर लिखते हुए इन छ:ककारों को ध्यान में रखा जाता है-
क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे ।
मुखड़ा- पहले तीन याचार ककारों कोआधार बनाकर खबर लिखी जाती है।
बांडी, समापन- अंतिम दो ककार क्यों और कैसे के आधार पर खबर लिखी जाती है।
क्या, कौन, कब, कहाँ- सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं। क्यों कैसे- विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर ज़ोर दिया जाता है।

फीचर लेखन:-फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

अंतर

फीचर लेखन	समाचार लेखन
1.अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त कर सकते हैं	.1. तथ्यों और वस्तुनिष्ठता पर जोर दिया जाता है।
.2.कोई तय शैली नहीं होती।	.2.उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।
.3.भाषा सहज, सरल, स्वाभाविक,रूपात्मक, आकर्षक व मन को छूने वाली होती है।	3.भाषा सहज सरल वस्वाभाविक होती है।
.4.शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती है	.4.समाचार लेखन में शब्दों की सीमा होती है ।

फीचर लेखन लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें:-

(1)फीचर मनोरंजक होने के साथ-साथ सूचनात्मक होना चाहिए।
(2) फीचर में विषय से जुड़े पात्रो या लोगों की मौजूदगी होनी चाहिए।
(3)पात्रों के माध्यम से फीचर को स्पष्ट करना चाहिए।
(4)फीचर इस तरह से लिखे कि पाठक महसूस करे कि वे खुद देख और सुन रहे हैं

फीचर के प्रमुख प्रकार-

समाचार वैकग्राउण्डर, खोजपरक फीचर, साक्षात्कार फीचर, जीवन- शैली फीचर, रूपात्मक फीचर, व्यक्ति चित्र फीचर, यात्रा फीचर, विशेष रुचि के फीचर आदि।

विशेष रिपोर्ट - विशेष रिपोर्ट ऐसी रिपोर्ट होती है, जिसमे किसी घटना, समस्या या मुददे की गहरी छान-बीन की जाती है। उस से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण के जरिए उसके नतीजे प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट के प्रमुख प्रकार:-

खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट, विवरणात्मक रिपोर्ट आदि। विशेष रिपोर्ट में उल्टा पिरामिड शैली, फीचर शैली, दोनों का प्रयोग एक साथ होता है।

विचार परक पत्रकारीय लेखन :-

अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचार पूर्ण लेखन से उनके वैचारिक रुझान का पता चलता है। उन्ही से अखबारों की छवि और पहचान होती है। विचार परक लेखन सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने भी विचार परक लेखन होते हैं। जिसमे लेख सम्पादकीय टिप्पणियाँ स्तम्भ लेखन आदि होते हैं।

सम्पादकीय लेखन:- संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए। अखवार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते है। संपादकीय में किसी व्यक्ती विशेष का विचार नहीं होता। इसीलिए इसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों का होता है। आम तौर पर अखवारो में सहायक संपादक संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता।

आलेख:- सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर सामयिक मुद्दोंपर वरिष्ठ पत्रकारों उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित होते हैं। लेख विशेष रिपोर्ट या फीचर से इस मामले में अलग है। उसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन वे विचार तथ्यों और सूचनाओ पर आधारित होने चाहिए। लेख की शुरुआत में विषय के सबसे ताजा प्रसंग या घटना- क्रम का विवरण दिया जाता है। इसके बाद तथ्यों की मदद से विश्लेषण और निष्कर्ष निकाला जाता है।

साक्षात्कार (इंटरव्यू):- पत्रकार एक तरह से साझात्कार के जरिये ही समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारी लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं। साक्षात्कार लिखने के दो तरीके है ।पहला साक्षात्कार को जबाब-सवाल के जरिए लिख सकते हैं। दूसरा उसे आलेख की तरह लिख सकते हैं |

साक्षात्कार लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें:-

(1) जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने जा रहे हैं, उसके बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

(2) आप साक्षात्कार के द्वारा क्या निकालना चाहते हैं। इसके बारे में स्पष्ट रहना बहुत जरूरी है।

(3) आपको वे सवाल पूछना चाहिए, जो किसी अखबार के एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।

(4) साक्षात्कार को रिकार्ड करे और यदि ऐसा संभव नही हो तो साक्षात्कार के दौरान नोट्स लेते रहें।

स्तंभ लेखन- कुछ महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय लेखक अपने खास वैचारिक रूझान के लिए जाने जाते हैं । उनकी अपनी एक जीवन शैली विकसित हो जाती है। ऐसी लेखकों की लो प्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपना विचार व्यक्त करने को स्तंभकार को पूरी छूट होती है। वास्तव में स्तंभ लेखन नियमित विचारों की एक श्रृंखला होती है।

पाठ : 5 विशेष लेखन- स्वरूप और प्रकार

पाठ का सार -

विशेष लेखन अर्थात किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन। अधिकतर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी.वी. और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्राकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार पत्रों और अन्य माध्यमों में कारोबार और व्यापार का अलग डेस्क, खेल की खबरों और फीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है। इन डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से यह उम्मीद की जाती है कि अपने विषय या क्षेत्र में उनको विशेषज्ञता प्राप्त होगी।

खबरें भी कई तरह की होती हैं– राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं0 के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषी कृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी आपका पूरा अधिकार होना चाहिए। सामान्य बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्राकार को काफी तैयारी करनी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर जो पत्रकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते है तो पत्राकार को उस पार्टी के भीतर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए और खबर हासिल करने के नए–नए स्रोत विकसित करने चाहिए। किसी भी स्रोत या सूत्र पर आँखमूँदकर भरोसा नहीं करना चाहिए और जानकारी की पुष्टि कई और स्रोतों के ज़रिये भी करनी चाहिए। यानी उस पत्राकार को ज्यादा से ज़्यादा समय अपने क्षेत्र के बारे में हर छोटी बड़ी जानकारी इकट्ठी करने में बिताना पड़ता है तभी वह उस बारे में विशेषज्ञता हासिल कर सकता है और उसकी रिपोर्ट या खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टि.ग में फर्क है। दोनों के बीच सबसे महत्त्वपूर्ण फर्क यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अलावा एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। लेकिन विशेषी कृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें। जैसे अगर शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा, जिसमें सभी ज़रूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई है और इसका आम निवेशकों पर क्या असर पड़ेगा।यही कारण है कि बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता है।

लेकिन विशेष लेखन सिर्फ विशेषीकृत रिपोर्टिंग भी नहीं है। विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है। इस तरह का विशेष लेखन समाचार पत्र या पत्रिका में काम करने वाले पत्राकार से लेकर फ्रीलांस पत्राकार या लेखक तक सभी कर सकते हैं। शर्त सिर्फ यह है कि विशेष लेखन के इच्छुक पत्राकार या स्वतंत्र लेखक को उस विषय में

माहिर होना चाहिए । मतलब यह कि किसी भी क्षेत्र पर विशेष लेखन करने के लिए ज़रूरी है कि उस क्षेत्र के बारे में आपको ज्यादा से ज़्यादा पता हो, उसकी ताजा से ताजा सूचना आपके पास हो, आप उसके बारे में लगातार पढ़ते हों, जानकारियाँ और तथ्य इकट्ठे करते हों और उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से लगातार मिलते रहते हों।

1. विशेष लेखन और विशेष संवाद दाता किसे कहते हैं ?

उत्तर: विशेष लेखन किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन है, जिसमें विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं। जिन रिपोर्टरों द्वारा विशेषीकृत रिपोर्टिंग की जाती है, उन्हें विशेष संवाददाता कहते है

2. डेस्क क्या है ?

उत्तर: समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा-व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

3. कारोबार, व्यापार और अर्थ जगत से जुड़ी खबरों में पाठकों की रुचि क्यों होती है?

उत्तर – हम बाजार से कुछ खरीदते हैं, बैंक में पैसे जमा करते हैं, बचत करते हैं, किसी कारोबार के बारे में योजना बनाते हैं या कुछ भी ऐसा सोचते या करते हैं जिसमें आर्थिक फायदे, नफा–नुकसान आदि की बात होती है तो इन सबका कारोबार और अर्थ जगत से संबंध जुड़ता है। यही कारण है कि कारोबार, व्यापार००० और अर्थ जगत से जुड़ी खबरों में काफी पाठकों की रुचि होती है।

4. बीट रिपोर्टर की रिपोर्ट कब विश्वसनीय मानी जाती है?

उत्तर- बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा पुष्टि कर के विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

5. विशेष लेखन की भाषा- शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का जान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

6. समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेखन किन विषयों पर किया जाता है?

उत्तर-समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेखन खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन, विज्ञान,कृषि,विदेश,रक्षा,पर्यावरण,स्वास्थ्य,कानून,अपराध,सामाजिक मुद्दे,शिक्षा, आदिवासीयों पर किया जाता है।

7. विशेष लेखन क्यों किया जाता है?

उत्तर -विशेष लेखन इसलिए किया जाता है, क्योंकि इस से समाचार-पत्रों में विविधता आती है। पाठकों की व्यापक रुचियों को ध्यान में रखते हुए उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए मनोरंजन करने के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

8. कारोबार एवं व्यापार क्षेत्र से जुड़ी पाँच शब्दावली लिखिए।

उत्तर-मुद्रा-स्फीति, तेजड़िए, बिकवाली, निवेशक, व्यापार घाटा आदि

9. फ्री-लांस पत्रकार किन्हें कहते हैं?

उत्तर- एक निश्चित भुगतान लेकर अलग-अलग समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार-लेख आदि लिखने वाले पत्रकारों को फ्री-लांस पत्रकार कहते हैं।

10. विशेषीकृत पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – वह पत्रकारिता, जो किसी घटना की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और पाठकों महत्त्व बताए, विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाती है।

11. समाचार पत्रों और दूसरे जनसंचार माध्यमों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों या विषयों के बारे में भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी क्यों देनी पड़ती है?

उत्तर– एक समाचार पत्र या पत्रिका तभी संपूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए। इससे समाचार पत्रों में एक विविधता आती है। पाठकों की रुचियाँ बहुत व्यापक होती हैं और वे साहित्य से लेकर विज्ञान तक तथा कारोबार से लेकर खेल तक सभी विषयों पर पढ़ना चाहते हैं। इसलिए समाचार पत्रों और दूसरे जन संचार माध्यमों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों या विषयों के बारे में भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी देनी पड़ती है।

12. बीट किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– खबरें भी कई तरह की होती हैं–राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है।अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है।

13. विशेष लेखन क्या है? और इसमें पत्रकार को क्या ध्यान रखना होता है?

उत्तर– विशेष लेखन अर्थात किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी आपका पूरा अधिकार होना चाहिए। सामान्य बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्राकार को काफी तैयारी करनी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर जो पत्राकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते है तो पत्राकार को उस पार्टी के भीतर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए और खबर हासिल करने के नए–नए स्रोत विकसित करने चाहिए। किसी भी स्रोत या सूत्र पर आँख मूँद कर भरोसा नहीं करना चाहिए और जानकारी की पुष्टि कई और स्रोतों के ज़रिये भी करनी चाहिए। यानी उस पत्राकार को ज्यादा से ज़्यादा समय अपने क्षेत्र के बारे में हर छोटी बड़ी जानकारी इकट्ठी करने में बिताना पड़ता है तभी वह उस बारे में विशेषज्ञता हासिलकर सकता है और उसकी रिपोर्ट या खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

14. किसी भी लेखन को विशिष्टता कैसे प्रदान होती हैं?

उत्तर – विशेष लेखन के जब भी हम किसी खास विषय को उठाते हैं, उसके बारे में लिखते या बात करते हैं तो इस बात का ध्यान रखना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि हमारा पाठक, दर्शक या श्रोता कौन है, हमारी बात उसे समझ में आ रही है या नहीं, हम अपनी बातों की अभिव्यक्ति ठीक से कर पा रहे हैं या नहीं, हमारे तथ्य और तर्क में तालमेल है या नहीं। ये तमाम बातें ऐसी हैं जो किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करती हैं।

15.बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा क्यों दिया जाता है?

उत्तर– मान लीजिए शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा, जिसमें सभी ज़रूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई है और इसका आम निवेशकों पर क्या असर पड़ेगा ।यही कारण है कि बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता है।

16. विशेष लेखन की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर– विशेष लेखन का संबंध जिन विषयों और क्षेत्रों से है, उनमें से अधिकांश तकनीकी रूप से जटिल क्षेत्र हैं और उनसे जुड़ी घटनाओं और मुद्दों को समझना आम पाठकों के लिए कठिन होता है। इसलिए इन क्षेत्रों में विशेष लेखन की ज़रूरत पड़ती है जिससे पाठकों को समझने में मुश्किल न हो। विशेष लेखन की भाषा और शैली कई मामलों में सामान्य लेखन से अलग है। उनके बीच सबसे बुनियादी फर्क यह है कि हर क्षेत्र विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है। विशेष लेखन की कोई निश्चितशैली नहीं होती। लेकिन अगर आप अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली उल्टा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है। इसी तरह अगर आप लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फीचर की तरह हो सकती है।

17.अखबारों और दूसरे माध्यमों में खेलों को बहुत अधिक महत्त्व क्यों मिलता है?

उत्तर– खेल का क्षेत्र ऐसा है जिसमें अधिकांश लोगों की रुचि होती है। खेल हर आदमी के जीवन में नयी ऊर्जा का संचार करता है। बचपन से ही हमारी विभिन्न खेलों में रुचि होती है और हममें से अधिकांश के भीतर एक खिलाड़ी ज़रूर होता है। कई खेल तो देश की संस्कृति में रच–बस जाते हैं और इसलिए उन खेलों के बारे में पढ़ने वालों और उसे देखने वालों की संख्या काफी ज्यादा होती है। इसलिए हैरत की बात नहीं है कि अखबारों और दूसरे माध्यमों में खेलों को बहुत अधिक महत्त्व मिलता है। सभी समाचार पत्रों में खेल के एक या दो पृष्ठ होते हैं और कोई भी टी.वी. और रेडियो बुलेटिन खेलों की खबर के बिना पूरा नहीं होता है। यही नहीं, समाचार माध्यमों में खेलों का महत्त्व लगातार बढ़ता जा रहा है। समाचार पत्र और पत्रिकाओं में खेलों पर विशेष लेखन, खेल विशेषांक और खेल परिशिष्ट प्रकाशित हो रहे हैं। इसी तरह टी.वी. और रेडियो पर खेलों के विशेष कार्य क्रम प्रसारित किए जा रहे हैं।

18. पत्रकारिता में विशेषज्ञता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – पत्रकारिता में विशेषज्ञता का अर्थ थोड़ा अलग होता है। यहाँ विशेषज्ञता से हमारा तात्पर्य एक तरह की पत्रकारीय विशेषज्ञता से है। पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ यह है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं और मुद्दों की आप सहजता से व्याख्या कर सकें और पाठकों के लिए उनके मायने स्पष्ट कर सकें।

19. किसी विषय में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर –इस सिलसिले में सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप जिस भी विषय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं, उसमें आपकी वास्तविक रुचि होनी चाहिए। अपनी रुचि के विषय में पत्रकारीय विशेषज्ञता हासिल करने के लिए आपको उन विषयों से संबंधित पुस्तकें खूब पढ़नी चाहिए। विशेष लेखन के क्षेत्र में सक्रिय लोगों के लिए खुद को अपडेट रखना बेहद ज़रूरी होता है। इसके लिए उस विषय से जुड़ी खबरों और रिपोर्टों की कटिंग

करके फाइल बनानी चाहिए। उस विषय के प्रोफेशनल विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषणों की कटिंग भी सहेज कर रखनी चाहिए।

एक तरह से आपको उस विषय में जितनी संभव हो, संदर्भ सामग्री जुटा कर रखनी चाहिए। इसके अलावा उस विषय का शब्दकोश और इनसाइक्लोपीडिया भी आपके पास होनी चाहिए। जिस विषय में आप विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं, उससे जुड़े सरकारी और गैरसरकारी संगठनों और संस्थाओं की सूची, उनकी वेबसाइट का पता, टेलीफोन नंबर और उसमें काम करने वाले विशेषज्ञों के नाम और फोन नंबर अपनी डायरी में ज़रूर रखिए।

एक पत्राकार की विशेषज्ञता कुछ हदतक उसके अपने सूत्रों और स्रोतों पर निर्भर करती है।

20. समाचार पत्र में अगर आर्थिक और खेल का पृष्ठ न हो तो वह संपूर्ण समाचार पत्र नहीं माना जाएगा, ऐसा क्यों?

उत्तर –समाचार पत्र में कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी खबरों के लिए अलग से एक पृष्ठ होता है। कुछ अखबारों में आर्थिक खबरों के दो पृष्ठ प्रकाशित होते हैं। यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि समाचार पत्र में अगर आर्थिक और खेल का पृष्ठ न हो तो वह संपूर्ण समाचार पत्र नहीं माना जाएगा। इसकी वजह यह है कि अर्थ यानी धन हर आदमी के जीवन का मूल आधार है। हमारे रोज़मर्रा के जीवन में इसका खास महत्त्व है।

पाठ 11 कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

मुख्य बिन्दु-

- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना ज़रूरी होता है।
- कहानी की कथावस्तु का विभाजन समय और स्थान के आधार पर करना चाहिए।
- कहानी में घटित घटनाओं के आधार पर दृश्य तैयार किए जाने चाहिए।
- कथावस्तु को ध्यान में रखते हुए परिवेश को तैयार करना चाहिए।
- आवाज़ और रोशनी इस व्यवस्था के अभिन्न अंग हैं।
- कथावस्तु के अनुरूप मंच की सजावट व संगीत प्रवाह को व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- संवाद अभिनय के अनुरूप बोले जाने चाहिए। लंबे और उबाऊ संवादों से बचना चाहिए।

सारांश-

- कहानी और नाटक दो अलग-अलग विधाएँ हैं इसलिए इनमें कुछ असमानताएँ भी होती हैं। जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से है, वहीं नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है। चूँकि दृश्यों का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है इसलिए नाटक एवं फिल्म को लोग देर तक याद रखते हैं। कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती है। नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। नाटक को अभिनेता मंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं। मंच सज्जा होती है, संगीत होता है, प्रकाश व्यवस्था होती है। सच तो यह है कि नाटक की संपूर्णता उसके मंचन पर ही होती है।
- कहानी और नाटक में कुछ समानताएँ भी होती हैं। कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है, पात्र होते हैं, परिवेश होता है, कहानी का क्रमिक विकास होता है, संवाद होते हैं, द्वंद्व होता है तथा अंत में

चरम उत्कर्ष होता है| इस प्रकार से कहानी और नाटक के मूल तत्व एक ही हैं | नाटक में जितना द्वंद्व होता है उतना कहानी में नहीं होता|

- कहानी को नाटक के रूप में रूपांतरित करने के लिए सबसे पहले कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है | कहानी की कथावस्तु में से घटनाओं को निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है | जो घटनाएँ एक समय और एक स्थान पर घट रही हों उनका एक दृश्य बनता है |दृश्य बनाते समय यह भी देखना ज़रूरी होता है कि उन दृश्यों से कथा का क्रमिक विकास हो| प्रत्येक दृश्य का अंत ऐसा होना चाहिए कि उससे अगला दृश्य जुड़ जाए |
- नाटक की अगली आवश्यकता संवाद होते हैं | संवाद पात्रों के अनुसार तथा नाटक की कथा को आगे बढ़ाने वाले होने चाहिएँ| यदि कहानी में संवाद नहीं हैं तो नए संवाद बनाने पड़ सकते हैं, परन्तु ये संवाद कहानी के मूल संवादों के साथ मेल खाते हों | उन संवादों का औचित्य होना चाहिए तथा संवाद छोटे, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिएँ|
- कहानी और नाटक के चरित्र-चित्रण में भी कुछ अंतर होता है | रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता और नाटक के पात्रों में उसका प्रयोग किया जाना चाहिए | संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का अगला तरीका अभिनय है जिसके संबंध में लेखक आवश्यक निर्देश दे सकता है | कहानी के लंबे संवादों को नाटक में छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है |
- ध्वनि और प्रकाश भी चरित्र-चित्रण करने तथा उपयुक्त प्रभाव उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं| इस संबंध में भी लेखक को सुझाव देने चाहिएँ | कहानी का नाट्य रूपांतरण करने से पहले वर्तमान रंगमंच की सम्भावनाएँ भी पता होनी चाहिएँ |

<u>परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी-</u>

1. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्यों को कैसे बाँटा जाता है?

उत्तर- कहानी की संपूर्ण पटकथा को समय और स्थान के आधार पर विभिन्न दृश्यों में बाँटा जाता है। कथावस्तु के आधार पर दृश्यों को ऐसे बाँटा जाता है कि कहानी आगे बड़े दृश्य का एक-दूसरे से संबंध आवश्यक है। एक दृश्य दूसरे दृश्य की भूमिका तैयार कर मंच से प्रस्थान करता है। दृश्य को भाव अभिव्यक्ति के आधार पर भी बाँटा जाना चाहिए। एक ही भाव की अभिव्यक्ति दर्शकों में ऊब का कारण बन जाती है। हास्य-करुणा, नृत्य इत्यादि के दृश्यों से बना नाटक ही सफल होता है।

2. कहानी और नाटक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कैसे?

उत्तर- नाटक और कहानी में कथावस्तु का विशेष महत्व है। दोनों में भाषा करीब-करीब एक-सी होती है नाटक और कहानी में क्रम से विकास होता है; पहली घटना दूसरी घटना से संबंधित होती है। कथावस्तु मूल कथा के इर्द-गिर्द घूमती गती है। दोनों में ही पात्रों का विशेष महत्व है। नाटक और कहानी के लिए देशकाल और पात्र का भी विशेष महत्व एक विशेष परिवेश में इनकी रचना होती है। कहानियों का मंचीय प्रस्तुतीकरण संभव है इसीलिए नाटक व कहानी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

3. कहानी लिखने के मुख्य चरणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- कहानी किसी भी समाज का दर्पण होता है। किसी विशेष परिस्थिति में, किसी विशेष घटना के साथ किसी विशेष परिवेश में लिखी कहानी का एक उद्देश्य होता है। कहानी लिखने के लिए सबसे पहले कथावस्तु की आवश्यकता होती है। कथा में मुख्य पात्रों की भूमिका घटना के आधार पर लिखी जाती है । घटनाओं की क्रमबद्धता कहानी को गति प्रदान करती है। मानव संवेदनाओं के मिले-जुले मिश्रण में लिखी कहानी सफल कहानी मानी जाती है, जिसमें हास्य, व्यंग्य, करुणा, दर्द, उद्देश्य व संदेश निहित होता है।

4. कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ होती हैं?

उत्तर- गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी और नाटक दोनों प्रमुख विधाएँ हैं। वैसे तो कहानी और नाटक दोनों को पढ़ने पर मस्तिष्क में दोनों चित्र उभरते हैं परंतु इनमें बहुत अंतर होता है। कहानी का संबंध मात्र लेखक और पाठक से होता है जबकि नाटक का संबंध पटकथा पात्र निर्देशक दर्शक इत्यादि से होता है। कहानी कही जाती है, नाटक दर्शाए जाते हैं। कहानी में मात्र पुस्तक या कथा कहने वाले की आवश्यकता होती है, किंतु नाटक में मंच, लाइट, पात्र, मेकअप अभिनेता, निर्देशक इत्यादि की आवश्यकता होतीहै, नाटक के दृश्यों की छाप अधिक समय तक दर्शकों के मस्तिष्क पर रहती है। कहानी मस्तिष्क पटल पर समय के साथ धुंधली पड़ जाती है।

5. कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के मुख्य सोपान या चरण कौन-कौन से हैं?

उत्तर- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के अनेक चरण हैं। प्रत्येक पायदान का अपना महत्व है। कथावस्तु को देशकाल के आधार पर बाँटा जाता है उसके बाद कहानी में घटित होने वाली घटनाओं के अनुसार दृश्यों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। दृश्य नाटक को गति प्रदान करने वाले होने चाहिए। एक दृश्य दूसरे दृश्य की भूमिका तैयार करने वाला होना चाहिए अर्थात दृश्यों में तारतम्यता होनी चाहिए। फिर कहानी से संबंधित संवादों को लिखा जाता है। संवाद भाषा की कहानी के आधार पर होना चाहिए। जिस देश में कहानी लिखी गई हो, वैसी ही भाषा का चयन संवादों के लिए किया जाना चाहिए। ध्वनि व प्रकाश योजना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नाटक की सफलता में मंच संचालन, मंच सज्जा इत्यादि नाटक के मुख्य चरण होते हैं, तभी कहानी का नाट्य रूपांतरण संपूर्ण ढंग से पूर्ण हो सकता है।

6. कहानी और नाटक में मुख्य अंतर को पाटते हुए कहानी के नाट्य रूपांतरण में आने वाली समस्याओं का चित्रण कीजिए।

उत्तर- कहानी में कोष्ठक में दिए गए कथन पात्रों की मनोदशा का वर्णन भली-भाँति कर सकते हैं, किंतु नाटक में जो बात बोली नहीं जाती उसका चित्रण कठिन हो जाता है। कहानी और नाटक में मुख्य अंतर है कि नाटक में अभिनय की मुख्य भूमिका होती है यदि अभिनय क्षेत्र पिछड़ा रह गया, तो नाटक के भागों को दर्शाया नहीं जा सकता। नाटक में ध्वनि की मुख्य भूमिका होती है। कहानी एक स्थान पर बैठकर पढ़ी व कही जा सकती है किंतु नाटक तो मंच पर घूम-घूमकर किया जाता है, जिससे इस समस्या में निदान पाया जा चुका है।

7. कहानी के नाट्य रूपांतरण की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर- कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के

संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

8. कहानी में कथावस्तु की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर- कथावस्तु के बिना कहानी की कल्पना नहीं की जा सकती। कथावस्तु जीवन की अलग-अलग दिशाओं और क्षेत्रों से ग्रहण की जाती हैं। इसके स्रोत हैं- पुराण, इतिहास, राजनीति, समाज आदि कथावस्तु कहानी को रोचकता प्रदान करती है। अच्छी कथावस्तु ही कहानी का आधार स्तंभ है। कथावस्तु घटनाओं के आधार पर पात्रों को बाँधती है। पात्रों के मनोभावों को दर्शाने वाली कथावस्तु की सर्वव्यापकता को झुठलाया नहीं जा सकता।

9. कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं?

उत्तर- कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्न प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं-

(i) नाट्य रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।

(ii) पात्रों की भाव-भंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भीउचित ध्यान रखना चाहिए।

(iii) पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

(iv) पात्र अभिनय के अनुरूप होने चाहिए।

(v) पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।

10. कहानी लिखते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है?

उत्तर- कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान रखना आवश्यक है-

(i) दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कहानी का विस्तार करें।

(ii) कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार दें। किसी प्रसंग को न अत्यंत संक्षिप्त लिखें, न अनावश्यक रूप से विस्तृत |

(iii) कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसे पढ़ने में रम जाए।

(iv) कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए। उसमें क्लिष्ट शब्द तथा लंबे वाक्य न हों।

(v) कहानी का उपयुक्त एवं आकर्षक शीर्षक होना चाहिए।

(vi) कहानी का अंत सहज ढंग से होना चाहिए। यहाँ ध्यान देने की बात है कि कहानी रोचक और स्वाभाविक हो। घटनाओं का पारस्परिक संबंध हो, भाषा सरल हो और कहानी से कोई न कोई उपदेश मिलता हो। अंत में, कहानी को एक अच्छा शीर्षक या नाम दे देना चाहिए ।

11. कहानी में संवाद योजना कैसी होनी चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कहानी में संवाद योजना निम्नलिखित प्रकार की होनी चाहिए-

(i) कहानी में संवाद योजना सहज और सरल होनी चाहिए।

(ii) संवाद योजना स्वाभाविक होनी चाहिए।

(iii) संवाद योजना पात्रानुकूल होनी चाहिए।

(iv) संवाद योजना विषयानुकूल होनी चाहिए।

(v) संवाद योजना रोचक होनी चाहिए। (vi) संवाद योजना संक्षिप्त होनी चाहिए।

12. कहानी की भाषा - शैली की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?

उत्तर- कहानी की भाषा - शैली की विशेषताएँ निम्नलिखित प्रकार से होनी चाहिए-

(i) भाषा-शैली सरल और सहज होनी चाहिए। (ii) भाषा-शैली स्वाभाविक होनी चाहिए।

(iii) भाषा-शैली पात्रानुकूल होनी चाहिए। (iv) भाषा-शैली विषयानुकूल होनी चाहिए।

(v) भाषा शैली प्रसंगानुकूल होनी चाहिए।

13. कहानी का हमारे जीवन से क्या संबंध है ?

उत्तर- कहानी का मानवीय जीवन से घनिष्ठ संबंध है। आदिम युग से ही कहानी मानव जीवन का प्रमुख अंग रही है। यह मानवीय जीवन का एक ऐसा अभिन्न अंग है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में कहानी सुनता और सुनाता है। विचारों का आदान-प्रदान इस संसार का एक अनूठा नियम है इसीलिए इस संसार में प्रत्येक मनुष्य में अपने अनुभव बाँटने और दूसरों के अनुभव जानने की प्राकृतिक इच्छा होती है। यहाँ प्रत्येक मनुष्य अपने विचारों, अनुभवों और वस्तुओं का आदान-प्रदान करता है। हम अपनी बातें किसी को सुनाना और दूसरों की सुनना चाहते हैं। इसीलिए वह सत्य है कि इस संसार में प्रत्येक मनुष्य में कहानी लिखने की मूल भावना होती है। यह दूसरा सत्य है कि कुछ लोगों में इस भावना का विकास हो जाता है और कुछ इसे विकसित करने में समर्थ नहीं होते। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कहानी का मानवीय जीवन से अटूट संबंध है।

14. प्राचीन काल में मौखिक कहानी की लोकप्रियता के क्या कारण थे?

उत्तर- प्राचीन काल में मौखिक कहानी की लोकप्रियता के कई कारण थे, जो इस प्रकार हैं-

(i)प्राचीन काल में संचार के साधनों की कमी थी, इसलिए मौखिक कहानी ही संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी।

(ii) प्राचीन काल में मौखिक कहानी धर्म प्रचारकों और संतों के सिद्धांतों और विचारों को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम थी।

(iii) मौखिक कहानी ही समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का साधन थी। (iv) प्राचीन काल में मौखिक कहानी ही मनोरंजन का प्रमुख साधन थी।

15. 'कहानी का केंद्र-बिंदु कथानक होता है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कहानी में प्रारंभ से अंत तक घटित सभी घटनाओं को कथानक कहते हैं। कथानक कहानी का प्रथम और महत्वपूर्ण तत्व होता है। यह कहानी का मूलाधार होता है। इसे कहानी का प्रारंभिक नक्शा भी कहते हैं जिस प्रकार कोई मकान बनाने से पहले उसका नक्शा बनाया जाता है, उसी प्रकार कहानी लिखने से पहले उसका कथानक लिखा जाता है। कथानक ही कहानी का केंद्र बिंदु होता है। सामान्यतः कथानक किसी घटना, अनुभव अथवा कल्पना पर आधारित होता है। कभी कहानीकार की बुद्धि में पूरा कथानक आता है और कभी कहानी का एक सूत्र आता है। केवल एक छोटा-सा प्रसंग अथवा पात्र कहानीकार को आकर्षित करता है। इसलिए कोई एक प्रसंग भी कहानी का कथानक हो सकता है और कोई एक छोटी-सी घटना भी कथानक की प्रमुख घटना हो सकती है। उसके बाद कहानीकार उस घटना अथवा प्रसंग का कल्पना के आधार पर विस्तार करता है। यह सत्य है कि कहानीकार की कल्पना कोरी कल्पना नहीं होती। यह कोई असंभव कल्पना नहीं

होती, बल्कि ऐसी कल्पना होती है, जो संभव हो सके। कल्पना के विस्तार के लिए लेखक के पास जो सूत्र होता है, उसके माध्यम से ही कल्पना आगे बढ़ती है। यह सूत्र लेखक को एक परिवेश, पात्र और समस्या प्रदान करता है। उनके आधार पर लेखक संभावनाओं पर विचार करता है और एक ऐसा काल्पनिक ढाँचा तैयार करता है, जो संभव हो सके और लेखक के उद्देश्यों से भी मेल खा सके। सामान्यतः कथानक में प्रारंभ, मध्य और अंत के रूप में कथानक का पूर्ण स्वरूप होता है। संपूर्ण कहानी कथानक के इर्द-गिर्द घूमती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कथानक कहानी का केंद्र-बिंदु होता है।

16. देशकाल और वातावरण कहानी लेखन में किस प्रकार आवश्यक हैं?

उत्तर- देशकाल और वातावरण कहानी के महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। इसका कथानक से सीधा संबंध होता है जब कहानीकार कहानी के कथानक का स्वरूप बना लेता है। तब वह कथान बहुत को देशकाल और वातावरण के साथ जोड़ता है। देशकाल औ वातावरण कहानी को प्रामाणित और रोचक बनाने में आवश्यक हैं। कहानी लेखन में (पात्र) प्रत्येक घटना और पत्र की समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। यदि कथानक की घटनाएँ देशकाल और वातावरण से मेल नहीं खाते. तो वह कहानी असफल सिद्ध होती है। इसीलिए कहानीकार जिस परिवेश से कहानी के कथानक को जोड़ना चाहता हो, उसे उस परिवेश की पूरी जानकारी होनी चाहिए। इसीलिए हम कह सकते हैं कि देशकाल और वातावरण का कहानी लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है।

17. कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ हैं?

उत्तर- कहानी

(i) कहानी का केंद्रबिंदु कथानक होता है।(ii) इसमें एक कहानी होती है। (iii) इसमें पात्र होते हैं।
(iv) इसमें परिवेश होते हैं। (v) इसमें क्रमिक विकास होता है। (vi) इसमें संवाद होते हैं।
(vii) इसमें पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है। (vii) इसमें एक उद्देश्य निहित होता है
(ix) कहानी का चरमोत्कर्ष होता है।

नाटक

(i) नाटक का केंद्रबिंदु कथानक होता है। (ii) नाटक में भी एक कहानी होती है।
(iii) नाटक में भी पात्र होते हैं। (iv) नाटक में भी परिवेश होता है।
(v) नाटक का भी क्रमिक विकास होता है। (vi) नाटक में भी संवाद होते हैं।
(vii) नाटक में भी पात्रों के मध्य दुबंदूव होता है। (viii) नाटक में भी एक उद्देश्य निहित होता है।
(ix) नाटक का भी चरमोत्कर्ष होता है।

18. 'कहानीकार द्वारा कहानी के प्रसंगों या मानसिक द्वंद्वों के विवरण के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में काफी समस्या आती है।' इस कथन के संदर्भ में नाट्य-रूपांतरण की किन्हीं तीन चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार हैं--

(i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिकद्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।

(ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।(iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।(iv) संगीत ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।(v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

19. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं?

अथवा

कहानी का नाट्य रूपातंरण करते समय दृश्य विभाजन किन आधारों पर किया जाता है?

उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार से करते हैं-

(1) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।

(ii) प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।

(iii) एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।

(iv) दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलगदृश्यों में बाँटा जाता है।

(v) दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

20. कहानी और नाटक के समान तत्वों का उल्लेख करते हुए बताइए कि दोनों में क्या अंतर है।

उत्तर- कहानी और नाटक के समान तत्व कहानी और नाटक दोनों का केंद्र बिंदु कथानक होता है। दोनों में ही एक कहानी, पात्र, परिवेश एक उद्देश्य और संवाद होते हैं। कहानी और नाटक दोनों का क्रमिक विकास होता है।

कहानी और नाटक में अंतर

(i) कहानी का संबंध लेखक और पाठक से होता है जबकि नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शकऔर श्रोताओं से होता है।

(ii) कहानी कही या पढ़ी जाती है, जबकि नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

(iii) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है, जबकि नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

(iv) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का कोई महत्व नहीं है जबकि नाटक में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।

21. कहानी का अर्थ स्पष्ट कीजिए और उसके इतिहास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- किसी घटना पात्र एवं समस्या का क्रमबद्ध वर्णन कहानी कहलाता है। जिसमें परिवेश हो, कथा का क्रमिक विकास हो, कथा में चरम उत्कर्ष का बिंदु हो उसे कहानी कहा जाता है। कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव इतिहास है। कहानी मानव स्वभाव की प्रकृति का हिस्सा है। कहानी कहने की आदिम कला का धीरे-धीरे विकास हुआ। आदिम समय में भी कथावाचक कहानी सुनाते थे। कहानी सुनाते-सुनाते उसमें कल्पना का समावेश होने लगा था।

22. कहानी के तत्व लिखिए।

उत्तर- कहानी के तत्व हैं-

(i) कथानक (ii) द्वंद्व (iii) देशकाल और वातावरण (iv) पात्र एवं चरित्र-चित्रण

(v) संवाद (vi) चरमोत्कर्ष (vii) भाषा-शैली (viii) उद्देश्य

ये सभी तत्व कहानी की रचना प्रक्रिया के आवश्यकतत्व हैं।

23. प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों प्रसिद्ध हुई थीं?

उत्तर- कहानी की परंपरा बहुत पुरानी है। मौखिक कहानी से ही कहानी कहना आदिम मनुष्य ने शुरू किया होगा। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियों की लोकप्रियता इसलिए थी क्योंकि यह संचार का बड़ा माध्यम थीं, इस कारण धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया। शिक्षा देने के लिए भी कहानी विधा का प्रयोग किया गया। पंचतंत्र की कहानियाँ लिखी गई, जो संसार में प्रसिद्ध हैं।

24. कहानी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसमें पूरी तरह रम जाए।

(ii) कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार देना चाहिए। किसी प्रसंग को न तो संक्षिप्त लिखा जाए और न ही अनावश्यक रूप से विस्तृत किया जाए।

(iii) कहानी की भाषा सरल, सहज व स्वाभाविक होनी चाहिए। उसमें कठिन शब्द व लंबे वाक्य नहीं होने चाहिए।

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन -किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर-

- कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
- नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
- कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।
- संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।
- संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।
- नाटक के प्रमुख तत्त्व कौन से हैं ?

25. नाटक के तत्व बताते हुए किसी एक तत्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- (i) कथावस्तु (ii) पात्र एवं चरित्र-चित्रण (iii) संवाद

(iv) भाषा शैली (v) देशकाल एवं वातावरण (vi) अभिनेयता

संवाद नाटक के प्राण होते हैं। संवाद छोटे-छोटे और पात्रों के अनुकूल होने चाहिएँ। संवाद नाटक की पृष्ठभूमि के अनुकूल होने चाहिएँ। संवाद नाटक की गति को आगे बढ़ाने वाले होने चाहिएँ।

26. कहानी का नाट्य-रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन किस प्रकार किया जाता है ?

उत्तर- कहानी का नाट्य-रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन इस प्रकार किया जाता है -

- कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
- प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार होना चाहिए ।
- एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
- दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।

कैसे बनता है रेडियो नाटक

रेडियो पर रेडियो नाटक का आरंभ:-

आज से कुछ दशक पहले ही रेडियो मनोरंजन का प्रमुख साधन था। उस समय टेलीविज़न ,सिनेमा, कंप्यूटर आदि मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे। ऐसे समय में घर बैठे ही रेडियो ही मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन था। रेडियो पर खबरें आती थीं, इसके साथ साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते थे। रेडियो पर संगीत और खेलों का आंखों देखा हाल प्रसारित किया जाता था। एफ. एम चैनलों की तरह गीत -संगीत की भी अधिकता होती थी। धीरे धीरे रेडियो पर नाटक भी प्रस्तुत किए जाने लगे , तब रेडियो नाटक टीवी धारावाहिक तथा टेलीफिल्मों की कमी को पूरा करने के लिए शुरू हुए थे। ये नाटक लघु भी होते थे और धारावाहिक के रूप में भी प्रस्तुत किए जाते थे। हिंदी साहित्य के सभी बड़े बड़े लेखक साहित्य रचना के साथ साथ रेडियो स्टेशनों के लिए नाटक भी लिखते थे। उस समय रेडियो के लिए नाटक लिखना सम्मानजनक बात मानी जाती थी। इस प्रकार रेडियो नाटक का प्रचलन बढ़ने लगा। रेडियो नाटकों ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की नाट्य आंदोलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।.

हिंदी की अनेक नाटक जो बाद में मंच पर बहुत प्रसिद्ध रहे वे मूलतः रेडियो के लिए ही लिखे गए थे। धर्मवीर भारती द्वारा रचित **'अंधा युग'** और मोहन राकेश द्वारा रचित **'आषाढ़ का एक दिन'** इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

रेडियो नाटक के तत्त्व :-

क) भाषा:-भाषा ही रेडियो नाटक का मूल आधार होती है। यही सुनने और बोलने का कार्य करती है। इसी से कठिन एवं जटिल रेडियो नाटक और संवाद जटिल हो जाते हैं।इसे जिन तीन भागों में स्वीकार किया जाता है वे हैं-

ख) कथोपकथन:- कथोपकथन रेडियो के पात्रों की मानसिक स्थितियों को प्रकट करते हैं और कथानक उसे गति प्रदान करता है। यहीं रेडियो नाटक के पात्रों और उसकी मानसिक स्थितियों का परिचय कराते हैं।.

ग) **ध्वनि प्रभाव**: ध्वनि तरह तरह के वातावरण को बचाने में सहायक बनाती है। तूफान, बादल, बाजार आदि इन्हीं से प्रसारण के माध्यम से इधर उधर प्रसारित करती है। इनकी सहायता से रेडियो नाटकों की वातावरण की सृष्टि होती है।.

यह रेडियो नाटक को सजीवता प्रदान करने का कार्य करता है, जिससे एक अच्छे प्रभाव की सृष्टि होती है।.

रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का महत्त्व-

रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार है -

1) रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियां संवादों के माध्यम से मिलती है।

2) पात्रो की चारित्रिक विशेषताएं संवादों के द्वारा ही उजागर होती है।.

3) नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है। इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है।

4) संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है। संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

रेडियो नाटक से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर -

1. दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाएं हैं? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है?

उत्तर – दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की निम्नलिखित सीमाएं हैं –

- दृश्य श्रव्य माध्यम में हम नाटक को अपनी आंखों से देख भी सकते हैं और पात्रों के संवादों को सुन भी सकते हैं परन्तु केवल श्रव्य माध्यम में हम सुन सकते हैं उसे देख नहीं सकते।
- दृश्य श्रव्य माध्यम में हम पत्रों के हाव भाव देखकर उनकी दशा का अनुमान लगा सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में ऐसा कर पाना कठिन होता है।
- दृश्य श्रव्य माध्यम में पात्रों के सुंदर वस्त्रों को देखा जा सकता है और पात्रों के सौंदर्य को देख सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में हम इनकी केवल कल्पना ही कर सकते हैं।
- दृश्य श्रव्य माध्यम में किसी भी दृश्य तथा वातावरण को देखकर उस जगह का आनंद उठा सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में हर दृश्य को प्रस्तुत करने के लिए ध्वनि व् संगीत की सहायता ली जाती है।
- दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम में समय की सूचना तथा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन भी संवादों के माध्यम से ही होता है।
- दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की सभी सीमाओं को ध्वनि व् संगीत के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता है।

2. रेडियो के बारे में कुछ महत्पूर्ण बातें लिखिए।

उत्तर - रेडियो के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें -

- नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक की अहम भूमिका रही है!
- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं, श्रव्य माध्यम है।
- रेडियो की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती है।
- फिल्म की तरह रेडियो में एक्शन की गुंजाइश नहीं होती।
- चूँकि रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है इसलिए पात्रों की संख्या भी सीमित होती है क्योंकि सिर्फ आवाज़ के सहारे पात्रों को याद रख पाना मुश्किल होता है।
- पात्र संबंधी विविध जानकारी संवाद एवं ध्वनि संकेतों से उजागर होती है।

3. रेडियो नाटक की कहानी चुनते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- कहानी मौलिक हो या चाहे किसी और स्रोत से ली हुई। उसमें निम्न बातों का ध्यान शरूर रखना होगा:-

क)कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो क्योंकि रेडियो पर बहुत ज्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।

ख़) रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-30 मिनट ही होती है।

ग) पात्रों की संख्या सीमित हो। श्रोता सिर्फ़ आवाज के सहारे चरित्रों को याद रख पाता है, ऐसी स्थिति में रेडियो नाटक में यदि बहुत श्यादा किरदार हैं तो उनके साथ एक रिश्ता बनाए रखने में श्रोता को दिक्कत होगी। 15 मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में पात्रों की अधिकतम संख्या 5-6 हो सकती है।

4. रेडियो नाटक की क्या अवधारणा है?

उत्तर :-रेडियो श्रव्य माध्यम है।कुछ दशक पूर्व तक टेलीविज़न और कंप्यूटर नहीं थे। सिनेमाहॉल और थियेटर थे,पर उनकी संख्या बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में रेडियो ही मनोरंजन का सस्ता और सुलभ साधन था। नाटक

का रंगमंच से सीधा संबध है परंतु रेडियो नाटक रंगमंच के लिए या मंचन के लिए नहीं लिखा जाता। श्रव्य माध्यम (रेडियो) पर इस नाटक का प्रसारण होता है। यह दृश्य से वंचित हो जाता है।

5. रेडियो नाटक का क्या महत्व है ?

उत्तर:- प्रसिद्ध साहित्यकार रचना के साथ -साथ रेडियो के नाटक भी लिखते थे। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक बेहद अहम रहे है। हिंदी के कई नाटक जो रंगमंच पर अभिनीत किए गए, अत्यंत सफ़ल रहे। इनमे धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधायुग' और मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' इसके श्रेष्ठ उदाहरण है।

6. रेडियो नाटक के लिए कहानी लिखते समय किन किन तथ्यों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है?

उत्तर:-रेडियो नाटक के लिए कहानी स्वरचित हो या किसी अन्य स्रोत से ली गई हो उसमे निम्नलिखित तथ्यों को अवश्य दृष्टिगत रखना चाहिए :

1) कहानी पूरी तरह से एक्शन पर आधारित नहीं होनी चाहिए, क्योकि रेडियो पर अधिक ध्वनि आधारित एक्शन उबाऊ हो सकता है। अतः मात्र घटना प्रधान कथा का चयन नहीं करना चाहिए।
2) रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट की होनी चाहिए।
3) यदि कहानी लम्बी है तो वह एक धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। जिसकी हर कड़ी की अवधि 15 मिनट या 30 मिनट की हो सकती है।
4) रेडियो नाटक में पात्रो की संख्या सीमित होनी चाहिए।

7. रेडियो नाटक में कौन-कौन से तत्त्व होते है?

उत्तर:- रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि मानी जाती है। यह मानवीय भावों को सरलता सहजता से व्यक्त कर देने की क्षमता रखती है। रेडियो तत्वों के तीन तत्व माने जाते हैं।

उनके तत्व हैं- (1) भाषा (2) ध्वनि प्रभाव (3) संगीत।

1. भाषा-भाषा ही रेडियो नाटक की मूल आधार होती है। यही सुनने और बोलने का कार्य करती है। इसी से कठिन एवं जटिल रेडियो नाटक और संवाद जटिल हो जाते हैं। इसे जिन तीन भागों में स्वीकार किया जाता है, वे हैं-

(क) कथोपकथन-रेडियो से दो प्रमुख संबंधित तत्व होते हैं-कथोपकथन और प्रवक्ता का कथन । कथोपकथन रेडियो को पात्रों की मानसिक स्थितियों को प्रकट कराते हैं और कथानक उसे गति प्रदान करता है। यही रेडियो के नाटक के पात्रों और उन की मानसिक स्थितियों का परिचय कराते हैं। इन्हीं से कथानक को गति प्राप्त होती है और श्रोता को अपनी ओर आकृष्ट करती है। नरेशन ही पाठकों के क्रिया-कलापों का निर्माण प्रदान करता है और विभिन्न घटनाओं/ विवशताओं श्रृंखला में बांधने का कार्य करता है।

(ख) ध्वनि प्रभाव-ध्वनि तरह-तरह की वातावरणों को बनाने में सहायक बनाती है। तूफान, बादल, बाज़ार आदि इन्हीं से प्रसारण के माध्यम से इधर-उधर प्रसारित करती है। इनकी सहायता से रेडियो नाटकों की वातावरण की सृष्टि होती है।

(ग) संगीत-यह रेडियो-नाटक को संजीवता प्रदान करने का कार्य करता है जिससे प्रभावित की सृष्टि होती है। संगीत से प्रभाविता की क्षमता बढ़ती है।

8 रेडियो नाटक लेखन के कुछ याद रखने योग्य बिंदु लिखिए।

उत्तर (i) शीर्षक -शीर्षक आकर्षक, सजीव व प्रभावोत्पादक हो।

(ii) प्रारम्भ- रेडियो नाटक का प्रारम्भ संगीत से होना चाहिए। ताकि श्रोताओ के लिए वातावरण तैयार हो सके। उसके बाद संवाद आरम्भ होने चाहिए।

(iii) विषय- रेडियो नाटक का विषय श्रोताओ के अनुकूल होना चाहिए। जैसे- सामाजिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, हास्य-व्यंग्य प्रधान आदि।

(iv)चरित्र- रेडियो नाटक लेखन में चरित्रों की संख्या कम होनी चाहिए। पात्रो के व्यक्तित्त्व को शब्दो और ध्वनियो के द्वारा उकेरा जाना चाहिए।

(v)दृश्यान्तर- रेडियो नाटक में दृश्यान्तर के लिए चुप्पी, प्रभात संगीत एवं प्रतिध्वनियों की अनुगूँज का प्रयोग किया जाना वांछित है।

(vi) शब्द- शब्द रेडियो नाटक का अहम भाग है।अतः पात्रो की भाषा बोधगम्य होनी चाहिए।

9.दृश्य-श्रव्य माध्यमो की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाँए है? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है?

उत्तर- दृश्य-श्रव्य माध्यमो की तुलना में श्रव्य माध्यम की निम्नलिखित सीमाएँ हैं-

(i) फिल्म, नाटक, टेलीविज़न जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यमो में दृश्य होते है, पर रेडियो नाटक में दृश्य नहीं होते है।

(ii) रेडियो नाटक में सब कुछ संवादो और ध्वनि प्रभावो के माध्यम से संप्रेषित करना होता है।

(iii) मंच-सज्जा व वस्त्र-सज्जा के साथ-साथ अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाएँ आदि सम्पूर्ण परिवेश आवाज़ के माध्यम से प्रस्तुत करना होता है।

(iv) दृश्य-श्रव्य माध्यमो की प्रभावशीलता श्रव्य माध्यम की तुलना में अधिक होतीं है।

10.नीचे कुछ दृश्य दिए गए हैं। रेडियो नाटक में इन दृश्यों को किस-किस तरह से प्रस्तुत करेंगे। विवरण दीजिए-

(क) घनी अंधेरी रात (ख) सुबह का समय (ग) बच्चों की खुशी
(घ) नदी का किनारा (ङ) वर्षा का दिन

उत्तर- (क) घनी अंधेरी रात - सांय-सांय की आवाज, बीच-बीच में चौकीदार की सीटी और लाठी की आवाज, जागते रहो का स्वर, किसी का स्वर कितनी घनी रात है हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा।

(ख) सुबह का समय - चिड़ियों के चहचहाने की आवाज, मुर्गे की बाँग का स्वर, प्रभाती गाते हुए किसी का स्वर।

(ग) बच्चों की खुशी - बच्चों के शोरगुल का स्वर, किलकारियाँ, मिली-जुली अनेक हँसी की धवनियाँ।

(घ) नदी का किनारा - किनारे से टकराते हुए पानी की आवाज, हवा का स्वर, पक्षियों का कलरव।

(ड़) वर्षा का दृश्य - लगातार वर्षा होने की आवाज, किसी का किसी को कहना- 'बाहर छतरी लेकर जाना' दूसरा स्वर- 'लगता है आज वर्षा रुकने वाली नहीं है।'

11. रेडियो नाटक लेखन का प्रारूप बनाइए और किसी कहानी के एक अंश को रेडियो नाटक में रूपांतरित कीजिए।

उत्तर– रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि मानी जाती है। यह मानवीय भावों को सरलता, सहजता से व्यक्त कर देने की क्षमता रखती है। रेडियो तत्वों के तीन तत्व माने जाते हैं।
उनके तत्व हैं- (1) भाषा (2) ध्वनि प्रभाव (3) संगीत।

ईदगाह कहानी के एक दृश्य का नाट्यरुपान्तरण -

ईदगाह कहानी में एक दृश्य ऐसा है कि ईद के मेले पर जाने के लिए सब बच्चे तैयार होकर हामिद को बुलाने उसके घर आते हैं। हामिद भी मेले में जाने के लिए तैयार है। बच्चों के बुलाने पर भी हामिद की दादी हामिद को मेले पर जाने से पहले कुछ समझाने लगती है। रेडियो नाटक इस दृश्य का लेखन कुछ इस प्रकार से होगा-

(बहुत सारे बच्चों का शोर, मिली-जुली आवाजें, पदचाप का स्वर, दरवाजा खटखटाने की आवाज)
एक स्वर : हामिद! ओ हामिद! मेले नहीं चलना है क्या!
हामिद: (दूर से आती हुई आवाज) आ रहा हूँ।
(तेज - दमों की आवाज)
दादी- : रुको, हामिद।
हामिद : (जोर से) क्या हुआ दादी?
दादी : (धीरे से) मेले में ध्यान से चलना। और इधर-उधर देख.....
हामिद : (बीच में ही रोककर बोलता है) मुझे पता है।
दादी : फिर भी बेटे अपना ख्याल रखना और गंदी चीजें ना खाना।
(बाहर से बच्चों का शोर ऊँचा हो जाता है) (दरवाजा खोलने की आवाज)
हामिद : चलो-चलो, मैं आ गया हूँ!
(धीरे-धीरे शोर कम होता जाता है और पदचाप भी धीमी हो जाती हैं।)

12. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं?

उत्तर- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

सिनेमा और रंगमंच	रेडियो नाटक
1. सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है।	1. रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है।
2. इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।	2. इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।
3. इनमें चरित्र (पात्र) होते हैं।	3. इसमें भी चरित्र (पात्र) होते हैं।

4. इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।	4. इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान।	5.इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
6. इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।	6. इनमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

13. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं?

उत्तर-सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

सिनेमा और रंगमंच	रेडियो नाटक
1. सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है।	1. रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है ।
2. इनमें मंच-सज्जा और वस्त्र-सज्जा का बहुत महत्त्व होता है।	2. इसमें इनका कोई महत्त्व नहीं होता।
3. इनमें पात्रों की भाव-भंगिमाएँ विशेष महत्त्व रखती हैं।	3. इसमें भाव-भंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।
4. इनमें कहानी को पात्रों की भावनाओं को अभिनय के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।	4. इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

14. रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में कहानी संवादों तथा ध्वनि प्रभावों पर ही आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है

1. **कहानी एक घटना प्रधान न हो**- रेडियो नाटक की कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कहानी श्रोताओं को थोड़ी देर में ही ऊबाऊ बना देती है जिसे श्रोता कुछ देर पश्चात् सुनना पसंद नहीं करते इसलिए रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए।

2. **अवधि सीमा-** सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडियो नाटक को सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है, इससे ज्यादा नहीं। दूसरे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसे मनुष्य अपने घर में अपनी इच्छा अनुसार सुनता है। इसलिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित होनी चाहिए।

3. **पात्रों की सीमित संख्या**- रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या 5-6 से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें नहीं रख सकेंगे। इसलिए रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

15. रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है ?

अथवा

रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-

1. रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं
3. नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
4. इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।
5. संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
6. संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

16.रेडियो नाटक लिखे कैसे जाते हैं?

उत्तर:सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं उन चरित्रों के आपसी संवाद होते हैं और इन्हीं संवादों के ज़रिये आगे बढ़ती है कहानी। बस सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में विजुअल्स अर्थात दृश्य नहीं होते। यही सबसे बड़ा अंतर है, रेडियो नाटक तथा सिनेमा या रंगमंच के माध्यम में। रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है इसीलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न भी है और थोड़ा मुश्किल भी। आपको सब कुछ संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना होता है। यहाँ आपकी सहायता के लिए न मंच सज्जा तथा वस्त्र सज्जा है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाएँ। वरना बाकी सब कुछ वैसा ही है। एक कहानी, कहानी का वही ढाँचा, शुरुआत-मध्य-अंत, इसे यूँ भी कह सकते हैं, परिचय- द्वंद्व- समाधान। बस ये सब होगा आवाज़ के माध्यम से।

नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक की अहम भूमिका रही है ।

सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं, श्रव्य माध्यम है।

रेडियो की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती है।

फिल्म की तरह रेडियो में एक्शन की गुंजाइश नहीं होती।

चूँकि रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है इसलिए पात्रों की संख्या भी सीमित होती है क्योंकि सिर्फ आवाज़ के सहारे पात्रों को याद रख पाना मुश्किल होता है।

पात्र संबंधी विविध जानकारी संवाद एवं ध्वनि संकेतों से उजागर होती है।

17 .रेडियो नाटक की अवधि अक्सर 15 से 30 मिनट ही क्यों होती है ?

उत्तर:आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। इसलिए अमूमन रेडियो नाटक की अवधि छोटी होती है और अगर आपकी कहानी लंबी है तो फिर वह एक धारावाहिक के रूप में पेश की जा सकती है, जिसकी हर कड़ी 15 या 30 मिनट की होगी।

रेडियो नाटक की अवधि का 15 मिनट से 30 मिनट के होने के दो कारण हैं, श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-30 मिनट ही होती है, इससे ज़्यादा नहीं। दूसरे, सिनेमा या नाटक में दर्शक अपने घरों से बाहर निकल कर किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर एकत्रित होते हैं इसका मतलब वो इन आयोजनों के लिए एक प्रयास करते हैं और अनजाने लोगों के एक समूह का हिस्सा बनकर प्रेक्षागृह में बैठते हैं। अंग्रेज़ी में इन्हें कैपटिव ऑडिएंस कहते हैं, अर्थात एक स्थान पर कैद किए गए दर्शक। जबकि टी.वी. या रेडियो ऐसे माध्यम हैं कि आमतौर पर इंसान अपने घर में अपनी मर्जी से इन यंत्रों पर आ रहे कार्यक्रमों को देखता-सुनता है। सिनेमाघर या नाट्यगृह में बैठा दर्शक थोड़ा बोर हो जाएगा, लेकिन आसानी से उठ कर जाएगा नहीं। पूरे मनोयोग से जो कार्यक्रम देखने आया है, देखेगा। जबकि घर पर बैठ कर रेडियो

सुननेवाला श्रोता मन उचटते ही किसी और स्टेशन के लिए सुई घुमा सकता है या उसका ध्यान कहीं और भी भटक सकता है।

18. रेडियो नाटक के लेखन तथा सिनेमा और रंगमंच के लेखन में क्या अंतर है? रेडियो नाटक के लेखन में संप्रेषण कैसे होता है?

उत्तर: रेडियो नाटक के लेखन तथा सिनेमा और रंगमंच के लेखन में थोड़ा अंतर है रेडियो नाटक तथा सिनेमा या रंगमंच माध्यम में रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है । इसलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा वा रंगमंच के लेखन से भिन्न भी है और मुश्किल भी । रेडियो नाटक के लेखन में सब कुछ संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही संप्रेषण करना होता है ।ध्वनि प्रभाव रेडियो नाटक लेखन की सबसे बड़ी ताकत है । यहां सभी भावों को हम ध्वनि के माध्यम से ही अभिव्यक्त करते हैं ।यहां सहायता के लिए न तो मंच सज्जा है, न वस्त्र सज्जा है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव भंगिमाए हैं। इसमें कहानी है जिसकी शुरुआत ,मध्य और अंत अर्थात परिचय, द्वंद ,समापन होता है और इसे आवाज के माध्यम से ही दर्शाया जाता है। अतः रेडियो नाटक में संप्रेषण ध्वनियों और आवाजों के माध्यम से ही होता है।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन अ+प्रति+आशा + इत = अप्रत्याशित अर्थात जिसकी आशा न की गई हो। अप्रत्याशित विषयों पर लेखन क्या है। ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

पारंपरिक और अप्रत्याशित विषयों में अंतर।

पारंपरिक विषय वे विषय होते हैं जो किसी मुद्दें ,विचार ,घटना आदि से जुड़े होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं इसमें आप अपनी व्यक्तिगत राय को उतनी तवज्जो न देकर सामूहिक विचार पर ज़ोर देते हैं ; जबकि अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं।

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से लाभ।

पहला तो यह की ये आपकी मौलिक रचना होगी। **दूसरा** इसमें आप अपने विचार और किसी तर्क विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करेंगे। **तीसरा**, इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होगा। चौथा, इससे भाषा पर अपनी अच्छी पकड़ बनेगी। **पांचवां,** अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुगढ़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है। ऐसी चुनौतियों का सामना करके आप दृढ़ व्यक्तित्व वाले व्यक्ति बनेंगे।.

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता क्यों?

हमें जब भी कुछ लिखने की को दिया जाता है तो हम या तो निबंध की पुस्तकें खंगालने लगते हैं या इंटरनेट से गूगल करने लगते हैं या फिर किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह मशवरा करने लगते हैं, परंतु अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से हमारी आत्म उन्नति के द्वार खुलते हैं, क्योंकि ऐसे विषय ना तो निबंध की किताबों में ना तो इंटरनेट पर और ना ही अनुभवी व्यक्तियों के अनुभव से प्राप्त होते हैं यह तो हमारी अपनी मानसिक उपज होती है जो आत्म अनुभवों पर आधारित होती है।

क्या अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कोई निश्चित रूप लेती हैं?

ऐसा बिल्कुल नहीं है जब आप अपने विचार और अपने अनुभव तर्क, सिद्धांत, समाज, काल और पात्र के आधार पर शब्द आंकित करते हैंतो वो कभी संस्मरण, कभी निबंध ,कभी रेखाचित्र, कभी कहानी ,कभी यात्रा वृतांत, कभी रिपोर्ताज आदि साहित्यिक विधा के रूप ले सकता है।

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में विषय क्या-क्या हो सकते है?

यह विषय कुछ भी हो सकते हैं जैसे दीवार खड़ी ,बारिश में बिना छतरी ,3 घंटे का अकेलापन ,दिव्य शक्तियां और मैं ,फर्ज कीजिए आप तिलचट्टा है ,धारावाहिक में स्त्री ,समुद्र किनारे आप और आपकी यादे, वगैरह वगैरह।.

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के नियम

इसमें मैं शैली का प्रयोग कर सकते हैं। विविध कोणों से विषय पर विचार कर लें। विवरण और विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत हो. भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान दें। नए विषयों पर रचनात्मक लेख से संबंधित महत्वपूर्ण विषय जैसे

उदाहरण - शिक्षा और व्यवसाय विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

शिक्षा और व्यवसाय

शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान या पूर्व जानकारी की पुनरावृत्ति नहीं है। इसका अर्थ कार्य या व्यवसाय दिलाना भी नहीं है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है-व्यक्ति को अक्षर-ज्ञान कराकर उसमें अच्छे-बुरे में अंतर करने का विवेक उत्पन्न करना। मनुष्य के सहज मानवीय गुणों व शक्तियों को उजागर करना शिक्षा का कार्य है , ताकि मनुष्य जीवन जीने की कला सीख सके। ऐसा कर पाने में समर्थ शिक्षा को ही सही अर्थों में शिक्षा कहा जा सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए कोई-न-कोई व्यवसाय या रोजगार करना पड़ता है।

शिक्षा व रोजगार का प्रत्यक्ष तौर पर भले ही कोई संबंध न हो, परंतु शिक्षा से व्यवसाय में बढ़ोतरी हो सकती है-इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है। आज के समय में शिक्षा का अर्थ व उद्देश्य यह लिया जाता है, कि डिग्रियाँ हासिल करने से कोई नौकरी या रोजगार अवश्य मिलेगा। इसी कारण से शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक चुकी है।अब वो समय नहीं रह गया है, जब डिग्रियों से रोजगार मिलता था।अनेक युवा अपनी डिग्रियों के साथ बेरोजगारी की आग में जल रहे हैं।

अगर सब जगहों पर शिक्षा का विकास हो, तो शहरों में भीड़ अधिक नहीं बढ़ेगी तथा प्रदूषण भी कम होगा। कुछ हद तक बेकारी की समस्या भी हल हो जाएगी। अतः इस दिशा में तेजी से व समस्त उपलब्ध साधनों से एकजुट होकर काम करना पड़ेगा ताकि आम शिक्षित वर्ग और शिक्षा-जगत में छाई निराशा दूर हो सके। यह सही है कि आज जीवन में शिक्षा को व्यवसाय का साधन समझा जाने लगा है, पर अब जो स्वरूप बन गया है, उसे सही ढंग से सजाने-सँवारने और उपयोगी बनाने में ही देश का वास्तविक हित है।शिक्षा को व्यवसाय से अलग करके ही कुछ बदलाव लाए जा सकते हैं।

2. **घर से स्कूल तक के सफ़र में आज आपने क्या-क्या देखा और अनुभव किया ? लिखें और अपने लेख को एक अच्छा-सा शीर्षक भी दें।**

उत्तर- **संवेदनहीन होता मानव**

मैं घर से अपने विद्यालय जाने के लिए निकली। आज मैं अकेली ही जा रही थी क्योंकि मेरी सखी नीलम को ज्वर आ गया था। मेरा विद्यालय मेरे घर से लगभग तीन किलोमीटर दूर है। रास्ते में बस स्टेंड भी पड़ता है। वहाँ से निकली तो बसों का आना-जाना जारी था। मैं बचते-बचाते निकल ही रही थी कि मेरे सामने ही एक बस से टकरा कर एक व्यक्ति बीच सड़क पर गिर गया। मैं किनारे पर खड़ी होकर देख रही थी कि उस गिरे हुए व्यक्ति को उठाने कोई नहीं आ रहा। मैं साहस करके आगे जा ही रही थी कि एक बुजुर्ग ने मुझे रोक कर कहा, 'बेटी! कहाँ जा रही हो?' वह तो मर गया लगता है। हाथ लगाओगी तो पुलिस के चक्कर में पड़ जाओगी। मैं घबरा कर पीछे हट गई और सोचते-सोचते विद्यालय पहुंच गई कि हमें क्या हो गया है जो हम किसी के प्रति हमदर्दी भी नहीं दिखा सकते, किसी की सहायता भी नहीं कर सकते?

बोर्ड परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप : (3 अंकवाले प्रश्न / 6 अंक का रचनात्मक लेखन से सम्बन्धी प्रश्न)

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन:-

उन विषयों पर लेखन कार्य करना जिसकी आशा न की गई हो नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है,ये विषय नए और चुनौतीपूर्ण होते है इस कारण लोग अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से कतराते हैं । लोग आत्मनिर्भर हो कर मौलिक अभिव्यक्ति का अभ्यासन करके दूसरों के द्वारा लिखित सामग्री को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देते है और मौलिक अभिव्यक्ति का मौका गँवा देते हैं । इसलिए परंपरागत विषयों को छोड़कर नए तरह के विषयों पर लेखन का अभ्यास करना चाहिए । इससे लेखन कौशल का विकास होगा और भाषा पर आपकी पकड़ मजबूत होगी और आपका व्यक्तित्व भी दृढ़ होगा ।

जब हम अप्रत्याशित विषयों पर मौलिक अभिव्यक्ति अपने तर्क और अनुभव के आधार पर शब्दांकित करते है तब यह रचनात्मक अभिव्यक्ति साहित्य की विविध विधाओ का रूप ले लेती है जैसे संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, कहानी, यात्रावृतांत इत्यादि ।

अप्रत्याशित विषय पर कैसे लिखे :-जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। विषय पर लिखने से पहले लेखक को थोड़ी देर ठहरकर अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए। विषय से जुड़े तथ्यों में उचित तालमेल होना चाहिए और उनकी पुनरावर्ती नहीं होनी चाहिए । विचार-विषय से सुसम्बद्ध तथा सुसंगत और आकर्षक होने चाहिए। अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए। अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक को विषय से हटकर अपनी विद्वता को प्रकट नहीं करना चाहिए और अपनी बातों का खंडन भी नहीं करना चाहिए ।

अच्छे लेखन में ध्यान देने योग्य बातें

- छोटे-छोटे वाक्य लिखें। जटिल वाक्य की तुलना में सरल वाक्य की संरचना को वरीयता दें।
- आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का इस्तेमाल करें। गैर-जरूरी शब्दों के इस्तेमाल से बचें। शब्दों को उनके वास्तविक अर्थ समझकर ही प्रयोग करें।
- अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ना भी बहुत जरूरी है। जाने-माने लेखकों की रचनाएँ ध्यान से पढ़ें।

- लेखन में विविधता लाने के लिए छोटे वाक्यों के साथ-साथ कुछ मध्यम आकार के और कुछ बड़े आकार के वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं। इस के साथ-साथ मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से लेखन में रंग भरने की कोशिश करें।
- अपने लिखे को दुबारा जरूर पढ़ें और अशुद्धयों के साथ-साथ गैर-जरूरी चीजों को हटाने में संकोच न करें। लेखन में कसावट बहुत जरूरी है।
- लिखते हुए यह ध्यान रखें कि आपका उद्देश्य अपनी भावनाओं, विचारों और तथ्यों को व्यक्त करना है, न कि दूसरे को प्रभावित करना।
- एक अच्छे लेखक को पूरी दुनिया से लेकर अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं, समाज और पर्यावरण पर गहरी निगाह रखनी चाहिए और उन्हें इस तरह से देखना चाहिए कि वह अपने लेखन के लिए उस से विचार बिंदु निकाल सके। एक अच्छे लेखक में तथ्यों को जुटाने और किसी विषय पर बारीकी से विचार करने का धैर्य होना चाहिए।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन / रचनात्मक लेखन में सदैव उपयोगी कुछ पंक्तियाँ --

- सकल पदारथ हैं जगमाहीं, करमहीन नर पावत नाहीं।
- बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खाय।
- मनके हारे हार है, मन के जीते जीत।
- करत-करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान।
- स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।
- दुनिया आपको तब तक नहीं हरा सकती, जब तक आप स्वयं से ना हार जाएँ।
- इंतज़ार करने वाले को उतना ही मिलता है जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
- आप स्वयं को वैसा बनाने का प्रयास करें जैसा कि दुनिया को बनाना चाहते हैं।
- वसुधैव कुटुम्बकं।
- शठे शाठ्यम समाचरेत।
- मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर।
- अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप।
- अहंकार हमारे सभी गुणों का सर्वनाश कर देता है।
- रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय।
- कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
- पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।
- नर हो न निराश करो मन को।
- उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंज़िल प्राप्त न हो जाए।

प्रश्न:1 अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या लाभ हैं?

उत्तर : अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से निम्नलिखित लाभ हैं:

1. ये आपकी मौलिक रचना होगी।

2. इसमें आप अपने विचारों को किसी तर्क, विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करेंगे।
3. इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होगा।
4. इससे भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ बनेगी।

5 अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्न: अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम बताइए ।

उत्तर: अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम इसप्रकार हैं:

1. आप इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग कर सकते हैं।
2. विषयवस्तु की रूपरेखा निर्धारित करते हुए विविध कोणों से विषय पर विचार कर लें।
3. विवरणऔर विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत हो।
4. भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान दें।
5. मौलिकता और रचनात्मकता दिखाएं।
6. प्रभावी भाषा और प्रवाह को बनाएंगे।
7. कथन या विचारों की पुनरावृत्ति न हो।
8- लेखन का प्रारंभ जितना रुचिकर और आकर्षक होगा, उसका स्वरुप भी उतना ही प्रभावी होगा।

प्रश्न: नए औरअप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आनेवाली कठिनाइयों और उनके निवारण का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर: नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है :

•विषय से जुड़ी जानकारियों और तथ्यों का अभाव।
•शब्द-भण्डार के अल्पज्ञान के कारण मन के विचारों को शब्दबद्ध करने की कठिनाई।
•लेखन की बनी बनाई लीक छोड़कर कुछ नया करने में आत्मविश्वास की कमी।
•पठन-पाठन का अभ्यास न होना।
•लेखन का अभ्यास न होने से शुद्ध और समय-सीमा में लिखने की असमर्थता।
•भाषा के प्रति उपेक्षा या अरूचि से वाक्य-निर्माण या लेखन दोषपूर्ण होना।

<u>निवारण -</u>

- पत्र-पत्रिकाओं,समाचारपत्रकाअध्ययन, अपनेआस-पास हो रही घटनाओं की जानकारी रखें।
- अपनी बात को बिना झिझक परन्तु समुचित ढंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास हो तो लेखन में आने वाली कठिनाइयाँ आसान हो जाएंगी।
- अध्ययन और श्रवण केसाथ-साथ समुचित लेखन का भी अभ्यास आवश्यक है अन्यथा मन में विचारों की प्रचुरता होने के बाद भी समय-सीमा में लिखना संभव नहीं होता।
- समय-सीमा,शुद्धता,स्वच्छता आदि मानकों के साथ लेखन का अभ्यास करें ।

प्रश्न: रटंत की बुरी लत से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर-रटंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतनशक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और

वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है।वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है।उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शक्ति पर विश्वास नहीं रहता ।

सी.बी.एस.ई. द्वारा मूल्यांकन के अंतर्गत अंक विभाजन

(शब्दसीमा 120-150 विषयवस्तु- 4 अंकभाषा- 1 अंक कल्पनाशीलता - 1 अंक)

अप्रत्याशित विषयों पर आधारित रचनात्मक लेखन के कुछ और उदाहरण (अतिरिक्त अध्ययन) :-

परीक्षा के दिन

हम सबके विद्यार्थी -जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बातहै । इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है। मैं बहुत घबराया रहता हूँ । मैंने जो कुछ भी पढ़ाया याद किया उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ । मै प्रश्न-पत्र के बारे में सोचता रहताहूँ । मेरा विश्वास है कि यदि मै पहले दिन अच्छा करूँगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ । इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है । कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते । बोर्ड-परीक्षा का मेरा परीक्षा का दिन ऐसा ही था । परीक्षा के दिन मै अपनी समस्त शक्ति अध्ययन की ओर केन्द्रित कर एकाग्रचित होकर संभावित प्रश्नों को कंठस्थ करने के लिए लगा देता हूँ । ये दिन मेरे लिए परीक्षा-देवो को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान करने के दिन जैसा है ।खेल-तमाशों से छुट्टी और मित्रों -साथियों से दूर रहने के यह दिन हैं। परीक्षा परीक्षार्थियों के लिए भूत है । यह भूत जिस पर सवार हो जाता है उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है, दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे -सम्बन्धियों का आना बुरा लगता है । दूरदर्शन के मनोरंजक कार्यक्रम, मनपसंद एपीसोड, चित्रहार आदि समय नष्ट करने के माध्यम लगते है ।परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा ज्वर चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा -भवन में प्रवेश करने तक निरंतर चढ़ता रहता है और प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा-भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है । फिर अगले विषय की तैयारी का स्मरण होता है । ज्वरग्रस्त परीक्षार्थी निरंतर विश्राम न कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है । परीक्षा ज्वर से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है, चिंता उसके स्वास्थ्य को चोपट कर देती हैं

अगर मै चिड़िया होती

अगर मै चिड़िया होती उड़ जाती कही दूर गगन मेंअपने पंख फैलाके छू के देखती वो असमान जो सभी छूना चाहते है, सब आते है इस दुनिया में सब जीते है,और चले जाते है। मैं भी आयी हूँ जाना भी तय है, लेकिन मै अपने जाने से पहले जमीन से आसमान की ऊँचाई तय करके कुछ नया करती, मुझे पता है थकने पर आसमान में पेड़न हीं है आराम के लिए, सूरज की तपन से मेरे पंखो का जल जाना भी तय है, भूख-प्यास लगने पर खाने-पीने का साधन भी नहीं है, पर क्या ये जीवन आराम के साधन और जिन्दा रहने के साधन के इकट्ठा करने और उपयोग करने के लिए ही मिला है, या अपने पंखो को फैलाकर कीर्तिमान बनाके अपने कर्मो से खुद को अमर करने का एक मौका है, खतरा बहुत है और जान का जोखिम है, पर मै चलती राह वही जो मैंने मन में ठानी है, अपने जीवन और मृत्यु के बीच अपने आने वाली पीढ़ी के लिए एक नयी सोच अपने लोगो के लिए कुछ नया

जीवन-जीने का तरीका बताके जाती, अगर मै चिड़िया होती तो अपनी उम्र से पहले कुछ नयाकर के उड़ जाती, अगर मैं चिड़िया होती !

अक्ल बड़ी या भैंस

दुनिया मानती है और जानती है कि महात्मा गाँधी जैसे दुबले-पतले महापुरुष ने स्वतंत्रता संग्राम बिनाअस्त्र-शस्त्रों से लड़ा था।उनका हथियार तो केवल सत्य और अहिंसा थे।जिस कार्य को शारीरिक बल न कर सका, उसे बुद्धिबल ने कर दिखाया। इसी कारण यह कहावत प्रसिद्ध है कि अक्ल बड़ी या भैंस ? केवल शारीरिक बल होने से कोई लाभ नहीं हुआ करता।महाभारत के युद्ध में भीम और उसके पुत्र घटोत्कच ने अपनी शारीरिक शक्ति के बलपर बहुत-से कौरवों को मार गिराया किंतु उनकी शक्ति को भी दिशा-निर्देश देने वाली श्रीकृष्ण की बुद्धि ही थी।

नैपोलियन,लेनिन तथा मुसोलिनी जैसे महान व्यक्तियों ने भी बुद्धि के बलपर ही सफलताएँ अर्जित की थीं।राजनीति, समाज, धर्म, दर्शन, विज्ञान और साहित्य आज लगभग हर क्षेत्र में बुद्धिबल का ही महत्त्व है।पंचतंत्र की एक कहानी से भी इसकथन की पुष्टि हो जाती है कि शारीरिक बल से अधिक महत्त्व बुद्धि का होता है।इस कहानी में एक छोटा- सा खरगोश शक्तिशाली शेर को एक कुएँ के पास ले जाकर उससे कुएँ में छलांग लगवाकर उसे मार डालता है।अपनी बुद्धि के बलपर ही उस नन्हें से खरगोश ने खूखार शेर से न केवल अपनी अपितु जंगल के अन्यप्राणियों की भी रक्षा की थी।अतः शारीरिक शक्ति की अपेक्षा हमारे जीवन में बुद्धि काअधिक महत्त्व है।

जंक फूड की समस्या

भोजन का स्वाद और स्वास्थ्य से सीधा संबंध है।स्वादिष्ट भोजन देखते ही हमारी लार टपकने लगती है और हम अपने आप को रोक नहीं पाते।कई बार तो हम बिना भूख के भी खाने के लिए उतावले ही बैठते हैं।ऐसी स्थिति आने पर यह समझना चाहिए कि हम जाने-अनजाने व्यसन या भोजन के लालच का शिकार हो रहे हैं।आज इस उपभोक्ता वादी युग में चारों ओर वातावरण ऐसा बना दिया गया है कि हम ललचाए बिना रह ही नहीं सकते।दुकानों पर टगे स्वादिष्ट चटपटे और कुरकुरे व्यंजन तथा खाद्य वस्तुएँ देखकर हमारे मुँह में पानी आना स्वाभाविक ही है।

हमारी भूख-प्यास को बढ़ाने में अभिनेत्रियों का योगदान भी कम नहीं है, जब वे यह कहती हुई 'टेढ़ा है पर मेरा है'-कुरकुरे हमारी ओर बढ़ाती प्रतीत होती हैं; इसके अलावा सेवन अप, लिम्का, कोकाकोला आदि विज्ञापन हमें घर के भोजन से दूरकर के अपनी ओर आकर्षित करते हैं; पिज्जा, बर्गर, नूडल, चाउमीन आदि के विज्ञापन हमारी भूख बढ़ा देते हैं तो हम उन्हें खरीदने के लिए बाध्य हो जाते हैं।अब तो विज्ञापन में बच्चे भी कहते दिखते हैं- 'खाने से डरता है क्या?"

यह सुनकर जंक फूड के प्रति हमारी झिझक दूर होती है और हम उनके नफ़े-नुकसान पर विचार किए बिना उनको अपने नाश्ते और भोजन के अलावा समय-असमय खाना शुरू क र देते हैं।जंकफूड के प्रतिबच्चों और युवाओं की दीवानगी देखने लायक होती है।आप कहीं भी चले जाइए, चप्पे-चप्पे पर बर्गर, हॉटडॉग, सैंडविच, पैटीज, नूडल्स, कोल्डड्रिक, समोसे, चाउमीन, आदि मिल जाएँगे।

इनमें छिपी उच्च कैलोरी की मात्रा बच्चों में मोटापा और आलस्य बढ़ाते हैं।डॉक्टर इन्हें स्वास्थ्य के लिए विष बताते हैं।योगगुरु रामदेव जैसे लोग इनका विरोध करते हैं, पर लोगों की समझ में यह बात आए तब न।मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप हृदयाघात जैसी बीमारियों से यदि बचना है तो जंकफूड से तौबा करना ही पड़ेगा।

फुटपाथ पर सोते लोग

महानगरों में सुबह सैर पर निकलिए, एक तरफ आप स्वास्थ्य-लाभ करेंगे तो दूसरी तरफ आपको फुटपाथ पर सोते हुए लोग नजर आएँगे।महानगर को विकास का आधार-स्तंभ माना जाता है, लेकिन वहीं पर मानव-मानव के बीच इतना अंतर है।यहाँ पर दो तरह के लोग हैं-एक उच्चवर्ग, जिसके पास उद्योग, सत्ता, धन है, जिससे वह हर सुख भोगता है।उसके पास बड़े-बड़े भवन हैं और यह वर्गमहानगर के जीवन-चक्र पर प्रभावी है।

दूसरा वर्ग वह है जो अमीर बनने की चाह में गाँव छोड़कर आता है तथा यहाँ आकर फुटपाथ पर सोने के लिए मजबूर हो जाता है।इस का कारण उसकी सीमित आर्थिक क्षमता है। महँगाई, गरीबी आदि के कारण इन लोगों को भोजन भी मुश्किल से नसीब होता है। घर इनके लिए एक सपना होता है।इस सपने को पूरा करने के चक्कर में यह वर्ग अकसर छला जाता है।सरकारी नीतियाँ भी इस विषमता के लिए दोषी हैं।

सरकार की तमाम योजनाएँ भ्रष्टाचार के मुँह में चली जाती हैं और गरीब सुविधाओं की बाट जोहता रहता है।वह गरीबी में पैदा होता है, गरीबी में पलता-बढ़ता है और गरीबी में ही मर जाता है।वह जीते-जी रूखी-सूखी खाकर पेट की आग जैसे-तैसे बुझा लेता है और फटे-पुराने कपड़ों से तन ढँक लेता है, पर उसके सिर पर छत नसीब नहीं हो पाती और वह फुटपाथ, पार्क याअन्य खुली जगहों पर सोने को विवश रहता है।

<u>अभ्यास हेतु अप्रत्याशित विषय :-</u>

1. झरोखे से बाहर
2. सावन की पहली झड़ी
3. चुनावी सभा
4. मेरे मुहल्ले का चौराहा
5. योग मिटाए रोग
6. एक कामकाजी महिला की शाम
7. खेलो इन्डिया खेलो
8. नौका विहार
9. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
10. आज़ादी का अमृत महोत्सव
11. आज़ादी के 75 वर्ष
12. स्वच्छताअभियान से स्वास्थ का वरदान
13. कोरोंना वारियर्स
14. परीक्षा पे चर्चा
15. वो खुली खिड़की
16. विद्यालय में शिक्षक दिवस का आयोजन
17. मेरी पहली रेलयात्रा
18. दोस्तों के साथ स्मारक की सैर
19. अस्पताल में बीते वो दिन
20. बस स्टॉप का दृश्य

आदर्श प्रश्न पत्र

विषय- हिंदी आधार (302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक- 80**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए -

1. **इस प्रश्न पत्र में खंड 'क' में अपठित बोध तथा खंड 'ख' में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक के आधार पर और खण्ड 'ग' में आरोह भाग 2 एवं वितान भाग 2 के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं।**
2. **यथासंभव दोनों खण्डों के उत्तर क्रम से लिखिए**

खंड 'क'(अपठित बोध)		
प्रश्न संख्या	**अपठित बोध**	अंक (15)
प्रश्न 1.	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -	10
परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है।जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है।कहा भी गया है – उद्योगी को सब कुछ मिलता है और भाग्यवादी को कुछ भी नहीं मिलता, अवसर उनके हाथ से निकल जाता है।कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम भाग्य है। प्रकृति को ही देखिए; सारे जड़ चेतन अपने काम में लगे रहते हैं, चींटी को पल भर चैन नहीं, मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्राकर बूँद-बूँद मधु जुटाती है।मुर्गे को सुबह बांग लगानी होती है,फिर मनुष्य को बुद्धि और विवेक मिला है वह सिर्फ सफलता की का मना करता क्यों बैठा रहे?विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है।जापान को दूसरे विश्व युद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था।उसकी अर्थ व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी लेकिन दिन-रात परिश्रम करके आज वह विश्व का प्रमुख औद्योगिक और विकसित देश बन गया है।चीन भी अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ा है।जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिका झेली पर परिश्रम के बल पर ही संभल गया।परिश्रम का महत्व वे जानते हैं जो स्वयं अपने बल परआगे बढ़े हैं।संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही प्रमाण हैं।हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्रीअब्दुलकलाम परिश्रम और मनोबल से ही देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए उनका कहना था -"भाग्य के भरोसे बैठने वाले को उतना ही मिलता है जितना मेहनत करने वाले छोड़ देते हैं"।हमारे बड़े-बड़े धन कुबेर व्यापारी टाटा, बिरला, अंबानी यह सब परिश्रम के ही उदाहरण है निरंतर परिश्रम और दृढ़संकल्प हमारे लक्ष्य को हमारे करीब लाता है।गरीब परिश्रम करके अमीर हो जाता है और अमीर शिथिल बनकर असफल हो जाता है।भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई।अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला भारत आज मजबूरी नहीं, बल्कि मजबूती से खड़ा है तो इसके पीछे इसके पीछे कठोर परिश्रम और धैर्य ही है।हमारे कारखाने दिन रात उत्पादन कर रहे हैं, विकासशील देशों में पिछड़े माने जाने वाले हम भारतवासी आज विकसित देशों से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।अगर हम कहीं पिछड़े हैं तो उसका कारण परिश्रम का अभाव ही होगा।यदि विद्यार्थी जीवन से ही परिश्रम की आदत पड़ जाएगी तो हम जीवन में कभी असफल नहीं हो सकते। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है तो न सिर्फ हमारी शिक्षा बल्कि हमारा भविष्य भी सुरक्षित और मजबूत हो जाता है।		
	परिश्रम की पहली पाठशाला कहाँ मिलती है? क. जन्मसे	1

1.	ख. घरमें ग. विद्यार्थी जीवन में घ. नौकरी करने पर	
2.	**जीवन में सफलता पाने का सबसे बड़ा माध्यम क्या है?** क. पैसा ख. विद्वत्ता ग. चालाकी घ. पुरुषार्थ	1
3.	**हमारे किसानों के परिश्रम से देश में कौन सी क्रांति आयी?** **क**. हरितक्रांति **ख**. श्वेतक्रांति **ग**. लालक्रांति **घ**. सभीसहीहैं	1
4.	**इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।**	1
5.	**जापान,जर्मनी,चीन जैसे देश विपरीत परिस्थितियों से बाहर कैसे निकले?**	2
6.	**हमारे लक्ष्य हमारे करीब कब और कैसे आते हैं?**	2
7.	**आज हमारा देश बड़े-बड़े देशों के सामने किस रूप में खड़ा है?**	2
प्रश्न 2	**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**	8
	ज्योति कलश छलके हुए गुलाबी, लाल सुनहरे रंग दल बादल के ज्योति कलश छलके घरआँगन वन उपवन उपवन करती ज्योति अमृत के सींचन मंगल घट ढलके ज्योति कलश छलके पात पात बिरवा हरियाला धरतीका मुख हुआ उजाला सच सपने कल के ज्योति कलश छलके उषा ने आँचल फैलाया फैली सुख की शीतल छाया नीचेआँचल के ज्योति कलश छलके अंबर कुमकुम कण बरसाये फूल पंखड़ियों पर मुस्काये बिन्दु तुहिन जल के ज्योति कलश छलके	
1.	**उपर्युक्त काव्यांश में कवि किसके बारे में वर्णन कर रहा है ?**	1

	क. पावस ऋतु ख. जनजीवन ग. बादलों काउमड़ना घ.पल-पल परिवर्तित प्रकृति चित्रण	
2.	**'घर आँगन वन उपवन उपवन' में निहित अलंकार हैं ;-** क. अनुप्रास – उत्प्रेक्षा ख.अनुप्रास –पुनरुक्तिप्रकाश ग. पुनरुक्तिप्रकाश – उपमा घ. रूपक –अनुप्रास	1
3.	**'ज्योति कलश छलके' पंक्ति का भावार्थ है :-** क. ज्योति से भरा कलश हमेशा छलक़ता रहता है। ख. सूर्योदय के साथ ही प्रकृति में प्रकाश छलक रहा है। ग. प्रकृति प्रकाश के कलश को उड़ेल रही है। घ. प्रकाश युक्त कलश छलकने को तत्पर है।	1
4.	**'सच सपने कल के' पंक्ति में कौन सा स्वर छिपा हुआ है ?**	1
5.	**उषा के किस प्रकार के आँचल फैलाने की बात कही गई है ?**	2
6.	**प्रकृति से हमें क्या सीख लेनी चाहिए ?**	2
	खंड 'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न)	
प्रश्न 3	निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- क. पुस्तकें ही मेरी सच्ची दोस्त ख. डिजिटल एंव तकनीकी रूप से समृद्ध भारत ग. स्वस्थ बच्चे ही स्वस्थ देश की पहचान	06x01=06
प्रश्न 4	**अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित प्रश्न**	16
क.	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए : (क)कहानी से नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? (ख) नाटक में संवाद के महत्त्व पर टिप्पणी लिखिए। (ग) फीचर लेखक में किन गुणों का होना आवश्यक है ? (घ) समाचार के तत्वों पर प्रकाश डालिए। (ड़) पत्रकारीय लेखन किस प्रकार 'साहित्यिक लेखन' से भिन्न होता है?	04x02=08
ख.	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर दीजिए : (क) उलटा पिरामिड शैली किसे कहते है और इसके उपयोग पर प्रकाश डालिए। (ख) फीचरऔर समाचार में क्या अन्तर है? (ग) विशेष रिपोर्ट लेखन की शैली पर टिप्पणी लिखिए।	02x04=08
	खण्ड 'ग' (पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 और वितान भहग 2 पर आधारित प्रश्न)	

प्रश्न 5	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:**	01x05=05
	दिन जल्दी-जल्दी ढलता है! हो जाए न पथ में रात कहीं, मंजिल भी तो है दूर नहीं- यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलताहैं! दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं! बच्चे प्रत्याशा में होंगे, नीड़ों से झाँक रहे होंगे- यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है! दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ! मुझसे मिलने को कौन विकल? मैं होऊँ किसके हित चंचला? यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है! दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!	
1.	उक्त पंक्तियों के रचनाकार का नाम क्या है- क.हरिवंश राय बच्चन ख. प्रसाद ग.निराला घ. महादेवी वर्मा	1
2.	उक्त काव्यांश किस कविता का हैं ? क.उषा ख.दिन जल्दी –जल्दी ढलता है ग. पतंग घ.आत्मपरिचय	1
3.	नीड़ों से झाँक रहे होंगे - पंक्ति में नीड़ों का अर्थ है? क.रात ख. घोंसला ग. आसमान घ.बादल	1
4.	उक्त काव्यांश में प्रत्याशा में कौन है? क).पंथी ख.)कवि ग.चिड़िया के बच्चे , घ.) बच्चों के मित्र	1
5.	उक्त काव्यांश में कौन जल्दी- चलता जल्दी-है? क) हरिवंश राय बच्चन ख) दिन का पंथी ग) बच्चे घ)चिड़िया	1
प्रश्न 6	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :**	03x02=6
(i)	कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि‘ उषा ’कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है।	3
(ii)	‘रुबाइयाँ’ के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य-बिम्ब को अपने शब्दों में समझाइए।	3
(iii)	क्या तुलसी युग की समस्याएँ वर्तमान में भी समाज में विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।	3
प्रश्न 7	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :**	02x02=04

(i)	'कैमरे में बंदअपाहिज 'करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है -विचार कीजिए।	2
(ii)	बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को बादल राग कविता रेखांकित करती हैं?	2
(iii)	बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती हैं? कैसे?	2
प्रश्न 8	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:**	01x5=5
	यहां मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है।और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति– शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं।न तो वह बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वह लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं।जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं।कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक दूसरे को ठगने की घात में हों।एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दीखता है और यह बाज़ार का, बल्कि इतिहास का; सत्य माना जाता है ऐसे बाज़ार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता; बल्कि शोषण होने लगता है तब कपट सफल होता है,निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाज़ार मानवता के लिए विडम्बना हैं और जो ऐसे बाज़ार का पोषण करता है,जो उसका शास्त्र बना हुआ है; वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है वह मायावी शास्त्र है वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है।	
1.	**बाजार को सार्थकता कौन दे सकता है ?** (अ) अधिक सामान खरीदने वाला (ब) बाजार नहीं जाने वाला (स) जो जानता है कि वह क्या चाहता है (द) इनमें से कोई नहीं	1
2.	**बाजार का बाजारूपन कैसे बढ़ता है?** (अ) सस्ता खरीदने से (ब) बहुत कम खरीदने से (स) जरूरत से अधिक खरीदने से (द) इनमें से कोई नहीं	1
3.	**परचेजिंग पावर से क्या आशय है ?** (अ)बेचने की शक्ति (ब) बहुत कम खरीदने की शक्ति (स) पैसों के बल पर अधिक खरीदना और दिखावा (द) ये सभी	1
4.	**बाजारूपन से क्या होता है?** अ)कपट की बढ़ती,सद्भाव की घटती ब)सद्भाव की बढ़ती,कपट की घटती स)कपटऔर सद्भाव की बढ़ती (द) कपटऔर सद्भाव की घटती	1
5.	**जो नहीं जानते है कि वे क्या चाहते हैं, वे----** (अ) बाजार को सार्थकता देते हैं (ब) बाजार से लाभ उठाते हैं (स) बाजारूपन नहीं बढ़ाते हैं (द) बाजारूपन बढ़ाते हैं	1

प्रश्न 9	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :**	03x02=6
(i)	भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?	3
(ii)	जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?	3
(iii)	अवधूत किसे कहते हैं? शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा गया हैं?	3
प्रश्न 10	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :**	02x02=04
(i)	हाय, वह अवधूत आज कहाँ हैं!" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबलपर देह-बल के वचस्व की वतमान सभ्यता के सकट की ओर सकेत किया हैं। कैसे?	2
(ii)	जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बन रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?	2
(iii)	भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?	2
प्रश्न 11	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए :**	05x02=10
(i)	यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? चर्चा कीजिए।	5
(ii)	स्वय कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?	5
(iii)	'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?	5

अंक योजना

आदर्श प्रश्न पत्र

विषय- हिंदी (आधार) 302

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय-3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

खंड 'अ'(वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर)		
प्रश्न सं.	**उत्तर**	**अंक विभाजन**
प्रश्न 1.	**अपठित बोध (गद्यांश पर आधारित प्रश्न)**	10
1.	(ग) विद्यार्थी जीवन में	1
2.	(ग) पुरुषार्थ	1
3.	(क) हरित क्रांति	1
4.	परिश्रम ही सफलता की कुंजी है	1
5	जापान,जर्मनी,चीन जैसे देश विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकलने में सफल हो गए क्योंकि वे धैर्यपूर्वक मेहनत करते थे और चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते थे।	2
6.	निरंतर परिश्रमऔरदृढ़संकल्प हमारे लक्ष्य को हमारे करीब लाता है।	2
7.	कठोर परिश्रम और धैर्य से ही हमारा देश बड़े-बड़े देशों के सामने डटकर खड़ा हुआ है। परिश्रम का अभाव ही किसी देश को कमजोर बनाता है।	2
प्रश्न 2	**अपठित बोध (पद्यांश पर आधारित प्रश्न)**	8
1.	घ.पल-पल परिवर्तित प्रकृति चित्रण	1
2.	ख.अनुप्रास –पुनरुक्तिप्रकाश	1
3.	ख. सूर्योदय के साथ ही प्रकृति में प्रकाश छलक रहा है।	1
4.	'सचसपने कल के' पंक्ति में सकारात्मक और आशावादी स्वर स्वर छिपा हुआ है।	1
5.	उषा काल में सूर्योदय के साथ ही प्रकृति मेंप्रकाश छलक जाता हैऔर पूरी प्रकृति को अपने आँचल में समेट लेता है।	2
6.	प्रकृति से हमें निरंतर आगे बढ़ते रहना,परोपकारी बननाऔर सभी के साथ समानता का व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है।	2
खंड 'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न)		
प्रश्न 3	दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख : आरंभ -1 अंक , विषय वस्तु - 3 अंक, प्रस्तुति - 1 अंक, भाषा -1 अंक	06x01=06
प्रश्न 4	**अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित प्रश्न**	16
क	**(क)** -कहानी की विस्तृत विषयवस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है। - कहानी के कथानक को ध्यान में रखकर एक-एक घटना को चुन-चुनकर निकाला जाता है	04x02=08

	और उसके आधार पर दृश्य बनाया जाता है। - स्थान,समयऔरऔचित्य के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जाता है। कथानक से अनावश्यक दृश्य निकाल दिए जाने चाहिए। - प्रत्येक दृश्य का कथानुसार तार्किक विकास हो। - दृश्य कथानक को आगे बढ़ाने के साथ ही पात्रों और परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है। **(ख)** नाटक में नाटकार के पास अपनी ओर से कहने का अवकाश नहीं रहता।वह संवादों द्वारा ही कथावस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है।अतः नाटक के संवाद सरल, सुबोध, स्वभाविक तथा पात्रानुकूल होने चाहिए।गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी रसानुभूति में बाधा होती है।इसलिए दार्शनिक विषयों के प्रयोग से बचना चाहिए।नीरसता के निवारण तथा पात्रों के मनोभावों के प्रकटीकरण हेतु कभी-कभी स्वगत कथन तथा गीतों की योजना भी आवश्यक समझी गई है। **(ग)** विशेषज्ञता,बहुज्ञता,परिवेशके प्रति जागरुकता,आत्मविश्वास,निष्पक्षदृष्टि,भाषा पर पूर्णअधिकार आदि। **(घ)** पत्रकारिता की दृष्टि से किसी भी घटना, समस्या व विचार को समाचार का रूप धारण करने के लिए उसमें निम्न तत्त्वों में से अधिकांश या सभी का होना आवश्यक होता है: नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, संघर्ष, महत्त्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारियाँ, अनोखापन आदि । **(ड)** समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।पत्रकारिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फीचर, स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं। साहित्यिक लेखन' साहित्य से जुड़ा हुआ होता है, जिसमें कल्पना प्रधान, आत्मनिष्ठ लेखन होता है	
ख	**क)** समाचारों में किसी घटना,समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य,सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया समाचार के खत्म होने तक जारी रहती है और इसे ही 'समाचार लेखन की उलटा पिरामिड-शैली' कहा जाता है। इसके 3 भाग होते हैं-- - मुखडा - बोडी - समापन **ख)**फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है, जब कि समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठताऔर तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है। फीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है। इसकी शैली कथात्मक होती है। फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परन्तु समाचार की भाषा में सपाट बयानी होती है।	02x04=08

	फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 250शब्दों से लेकर 2500 शब्दों तक के होते हैं,जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं। **ग)** सामान्यत :विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है, परन्तु कई बार इन्हें फीचर शैली में भी लिखा जाता है।इस तरह की रिपोर्ट आमतौर पर समाचार से बड़ी होती है, इसलिए पाठक की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फीचर दोनों शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है।यदि रिपोर्ट बड़ी हो तो उसे शृंखलाबद्ध करके कई दिन तक किस्तों में छापा जाता है।	
खण्ड 'ग' (पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पर आधारित प्रश्न)		
प्रश्न 5	**पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्न**	01x05=5
1	क(हरिवंश राय बच्चन	1
2	ख (दिन जल्दी-जल्दी ढलता है	1
3	ख (घोंसला	1
4	ग(चिड़िया के बच्चे	1
5	ख (दिन का पंथी	1
प्रश्न 6	दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में	03x02=6
(i)	कवि को प्रभात का समय नीले शंख की तरह सुंदर व पवित्र लगता है।उसे भोर का समय राख से लीपे हुए गीले चौके के समान प्रतीत होता है।धीरे-धीरे बढ़ता समय लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। किसी बच्चे के स्लेट पर लाल खड़िया मलने जैसा भी प्रतीत होता है।ये सभी उपमान गाँव के वातावरण व गाँव से संबंधित हैं। साथ ही साथ नील आकाश में जब सूर्य पूरी तरह उदय होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का पल-पल बिखरता जादू भी समाप्त हो जाता है।इन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है।	3
(ii	कवि दीपावली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उन्हें सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे-से घर में दीए के जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है।रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है।इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं। राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।	3
(iii)	तुलसी ने लगभग 500 वर्षो पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्यहीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरावस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं।आज भी लोग जीवन निर्वाह के लिए गलत-सही कार्य करते हैं।नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमानहै।अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है।इसके विपरीत कृषि, वाणिज्य, रोजगार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।	3

प्रश्न 7	**दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में**	02x02=04
(i)	'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है क्योंकि ऐसे लोग धन कमाने एवं अपने कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते है और किसी की करुणा बेचकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे लोग अपाहिजों से सहानुभूति नहीं रखते है और अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उल्टे सीधे प्रश्न पूछते हैं।उनके मन में उन दिव्यांगों के प्रति किसी भी प्रकार का दया ,करुणा या संवेदना नहीं होती होता है तो सिर्फ लालच एवं स्वार्थ।	2
(ii)	बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं (i) बादल गर्जन करते हुए मूसलाधार वर्षा करते हैं। (ii) पृथ्वी से पौधों का अंकुरण होने लगता है। (iii) मूसलाधार वर्षा होती है। (iv) बिजली चमकती है तथा उसके गिरने से पर्वत-शिखर टूटते हैं। (v) हवा चलने से छोटे-छोटे पौधे हाथ हिलाते से प्रतीत होते हैं। (vi) गरमी के कारण दुखी प्राणी बादलों को देखकर प्रसन्न हो	2
(iii)	बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं।	2
प्रश्न 8	**पठित गद्यांश आधारित प्रश्न**	01x05=05
1	(स) जो जानता है कि वह क्या चाहता है	1
2	(स) जरूरत से अधिक खरीदने से	1
3	(स) पैसों के बल पर अधिक खरीदनाऔर दिखावा	1
4	(अ) कपट की बढ़ती,सद्भाव की घटती	1
5	(द) बाजारूपन बढ़ाते हैं	1
प्रश्न 9	**दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में**	03x02=6
(i)	भक्तिन के आ जाने से महादेवी ने लगभग उन सभी संस्कारों को, क्रियाकलापों को अपना लिया जो देहातों में अपनाए जाते हैं। देहाती की हर वस्तु, घटना और वातावरण का प्रभाव महादेवी पर पड़ने लगा। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी ताकि किसी बात की जानकारी अधूरी न रह जाए। धोती साफ़ करना, सामान बांधना आदि बातें भक्तिन ने ही सिखाई थी। वैसे देहाती भाषा भी भक्तिन के आने के बाद ही महादेवी बोलने लगी। इन्हीं कारणों से महादेवी देहाती हो गई।	3
(ii)	यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है।	3

(iii)	'अवधूत' वह है जो सांसारिक मोह माया से ऊपर होता है। वह संन्यासी होता है। लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी फलता-फूलता रहता है। भयंकर गर्मी, लू, उमस आदि में भी शिरीष का पेड़ फलों से लदा हुआ मिलता है।	3
प्रश्न10	**दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में**	02x02=4
(i)	'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। आज मनुष्य में आत्मबल का अभाव हो गया है। अवधूत सांसारिक मोहमाया से ऊपर उठा हुआ व्यक्ति होता है। शिरीष भी कष्टों के बीच फलता-फूलता है। उसका आत्मबल उसे जीने की प्रेरणा देता है। आजकल मनुष्य आत्मबल से हीन होता जा रहा है। वह मानव-मूल्यों को त्यागकर हिंसा, असत्य आदि आसुरी प्रवृत्तियों को अपना रहा है। आज चारों तरफ तनाव का माहौल बन गया है, परंतु गाँधी जैसा अवधूत लापता है। अब ताकत का प्रदर्शन ही प्रमुख हो गया है।	2
(ii)	जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिंदू धर्म की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्राय है। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है	2
(iii)	भक्तिन की यह विशेषता है कि वह हर बात को, चाहे वह शास्त्र की ही क्यों न हो, अपनी सुविधा के अनुसार ढाल लेती है। वह सिर घुटाए रखती थी, लेखिका को यह अच्छा नहीं लगता था। जब उसने भक्तिन को ऐसा करने से रोका तो उसने अपनी बात को ऊपर रखा तथा कहा कि शास्त्र में यही लिखा है। जब लेखिका ने पूछा कि क्या लिखा है? उसने तुरंत उत्तर दिया-तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध। यह बात किस शास्त्र में लिखी गई है, इसका ज्ञान भक्तिन को नहीं था। जबकि लेखिका जानती थी कि यह कथन किसी व्यक्ति का है, न कि शास्त्र का। अत: वह भक्तिन को सिर घुटाने से नहीं रोक सकी तथा हर बृहस्पतिवार को उसका मुंडन होता रहा।	2
प्रश्न	**पूरक पुस्तक वितान भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	अंक5x=10
प्रश्न11	**दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में:**	
(i)	यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव	5

	था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। इस प्रकर वे स्वयं को शीघ्र ही बदल लेती है।	
(ii)	लेखक की पाठशाला में मराठी भाषा के अध्यापक न०बा० सौंदलगेकर कविता के अच्छे रसिक व मर्मज्ञ थे। वे कक्षा में सस्वर कविता-पाठ करते थे तथा लय, छद, गति-यति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे। लेखक इनकी देखकर बहुत प्रभावित हुआ। इससे पहले उसे कवि दूसरे लोक के जीव लगते थे। सौंदलगेकर ने उसे अन्य कवियों के बारे में बताया। वह स्वयं भी कवि थे। इसके बाद आनंद को यह विश्वास हुआ कि कवि उसी की तरह आदमी ही होते हैं। एक बार उसने देखा कि उसके अध्यापक ने अपने घर की मालती लता पर ही कविता लिख दी, तब उसे लगा कि वह अपने आस-पास के दृश्यों पर कविता बना सकता है। इस प्रकार उसके मन में स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।	5
(iii)	सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का। इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।	5

**********इति**********